सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 170, नई दिल्ली, गुरुवार 28 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 सौरभ भारद्वाज द्वारा जांच एजेंसी के पूछताछ के बाद दिया गया बयान राजनीतिक नौटंकी

06 प्रकाश प्रदूषण एवियन गतिविधि को बढ़ाता है

08 बाढ़ ने बढ़ाई मुसीबतः जाजपुर, भद्रक और बालासोर सबसे ज्यादा प्रभावित

दिल्ली एनसीआर में गणेश चतुर्थी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया

लाखों भक्तजन अपने घरों में बड़ी श्रद्धा से श्री गणेश जी को ले कर आए और उन्हें पूजा भक्ति से सम्मान से स्थान प्रदान किया

परिवहन विशेष न्यूज

वैशाली सेक्टर 4, गाजियाबाद में मन्ना परिवार (बिजेंद्र कुमार मन्ना +नीता मन्ना पुत्र अभिषेक मन्ना +सुतापा मन्ना पुत्र अनिरुद्ध मन्ना), गीता कालोनी ब्लाक 2, से प्रताप सिंह सुनीता सिंह एवम्-अन्य लाखों परिवार आज भक्ति भाव से श्री गणेश जी के स्वागत, पूजा भक्ति और हवन में लिन पाए गए। मन्ना परिवार द्वारा भक्ति भाव से भंडारे का आयोजन किया गया। टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत की महासचिव पिंकी कुंडू एवम्-डे परिवार से मोना डे और उनके दोनों बेटों ने आज गणेश चतुर्थी पर वैशाली सेक्टर 4, दा अर्था सोसाइटी में पहुंच कर श्रद्धा भावना से श्री गणेश जी के दर्शन किए और आशीर्वाद प्राप्त किया।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन पंजीकृत (टोलवा) के द्वारा परिवहन विभाग के खिलाफ उठाए जा रहे मुद्दे पर आज दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष द्वारा मुख्य सतर्कता आयुक्त दिल्ली को सौंपा गया 40 पृष्ठ का मांग पत्र

संजय कुमार बाटला

दिल्ली में वाहन स्क्रैप के नाम पर अरबों रुपए का घोटाला

वाहन स्क्रैप सीओडी की नकली बिक्री कर राजस्व में लगाया करोड़ों रुपयों का चूना

आप भी जाने क्या लिखा देवेन्द्र यादव अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अपने मांग पत्र में मुख्य सतर्कता आयुक्त को और क्या की मांग

विषयः दिल्ली में अंतिम आयु वाले वाहनों के निपटान में आरवीएसएफएस (पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधा) कंपनियों के साथ मिलीभगत करके प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा घोटाला।

यह आपके संज्ञान में लाने के लिए है कि दिल्ली में एंड लाइफ वाहनों (10 वर्ष से अधिक डीजल और 15 वर्ष से अधिक पेट्रोल वाहन) के निपटान के दौरान करोड़ों का घोटाला हुआ है, जिसमें दिल्ली सरकार के दिशा-निर्देशों के दिनांक 02-02-2024 के महत्वपूर्ण खंडों का उल्लंघन, दिनांक 18-10-2024 के राजपत्र अधिसूचना के स्पष्टीकरण 2 का उल्लंघन, जमा और पहचान पत्र के जाली प्रमाण पत्र जारी करना, दिल्ली यातायात पुलिस द्वारा अपने गड्ढों में पड़े जब्त वाहनों को बिना नीलामी/निविदा प्रक्रिया के और बिना कोई पैसा लिए आरएफएसएफएस को सौंपना, जिससे सरकारी खजाने को नुकसान हुआ, प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा आरवीएसएफएस से राशि की वसूली न करना, स्क्रैपिंग सुविधाओं के समान वितरण/उपयोग का घोर उल्लंघन, स्क्रैप किए गए वाहनों का रिकॉर्ड न रखना, कारण बताओ नोटिस जारी करने के बाद भी आरवीएसएफएस को काम करने की अनुमति देना, डिफॉल्टर कंपनियों को एक ही व्यक्ति/परिवार के सदस्यों को अनुमति देना, बिना सीरियल नंबर के नकली और मनगढ़ंत चालान का उपयोग करना शामिल है।

इस मामले में घटनाओं का कालक्रम इस प्रकार है।

1. दिल्ली में 15 वर्ष और 10 वर्ष से अधिक पुराने पेट्रोल और डीजल वाहनों को हटाने के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन किया जा रहा है।

2. माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के क्रियान्वयन हेतु, दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली के सार्वजनिक स्थानों पर जीवन-अंत वाहनों के संचालन हेतु दिनांक 20-02-2024 के दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं। दिनांक 20.02.2024 के दिशानिर्देशों की एक प्रति अनुबंध-1ए के रूप में संलग्न है।

3. उक्त नीति के खंड 2. (iii) के अनुसार दिल्ली यातायात पुलिस, एमसीडी, एनडीएमसी, छावनी बोर्ड और परिवहन विभाग को प्रवर्तन एजेंसियों के रूप में परिभाषित किया गया है।

4. खंड 3 (vi) के अनुसार, "सभी तीन आर.वी.एस.एफ.एस. (पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधा) के बीच स्क्रैपिंग सुविधाओं का समान वितरण/उपयोग"।

5. धारा 9 (ii) के अनुसार, पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए प्रवर्तन एजेंसियों, आरवीएसएफएस और वाहन मालिकों के बीच प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया जाना था।

6. धारा 10(iii) के अनुसार, यदि 15 दिनों के भीतर स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया जाता है, तो संबंधित आरवीएसएफ द्वारा वही मूल्य प्रवर्तन एजेंसी के सरकारी खाते में जमा कर दिया जाएगा।

7. 15 अक्टूबर, 2024 की राजपत्र अधिसूचना राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा जारी की गई थी और इसके स्पष्टीकरण 2 में कहा गया है कि ₹बशर्ते कि किसी प्रवर्तन एजेंसी द्वारा सौंपे गए सरकारी स्वामित्व वाले या जब्त किए गए वाहन के विरुद्ध जारी जमा प्रमाणपत्र पर कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाएगा और ऐसा जमा प्रमाणपत्र इलेक्ट्रॉनिक रूप से व्यापार योग्य नहीं होगा₹। 15 अक्टूबर, 2024 की राजपत्र अधिसूचना की एक प्रति अनुबंध-2ए के रूप में संलग्न है।

दिल्ली यातायात पुलिस (प्रवर्तन एजेंसी) द्वारा जब्त वाहनों के निपटान के लिए 20-02-2024 (अनुलग्नक-1) के दिशानिर्देशों, 18-10-2024 के राजपत्र अधिसूचना (अनुलग्नक-2) और स्थापित उचित प्रक्रिया का उल्लंघन करके घोटाले का विवरण।

क. जब्त वाहनों के खिलाफ अवैध रूप से जारी किए गए जाली और मनगढ़ंत जमा प्रमाणपत्र

18 अक्टूबर, 2024 की राजपत्र अधिसूचना के प्रासंगिक भाग में स्पष्टीकरण 2 में कहा गया है, ₹बशर्ते कि किसी प्रवर्तन एजेंसी द्वारा सौंपे गए सरकारी स्वामित्व वाले या जब्त किए गए वाहन के विरुद्ध जारी जमा प्रमाणपत्र पर कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाएगा और ऐसा जमा प्रमाणपत्र इलेक्ट्रॉनिक रूप से व्यापार योग्य नहीं होगा₹।

प्रवर्तन एजेंसियों और आरवीएसएफ की मिलीभगत से उक्त स्पष्टीकरण का उल्लंघन किया गया है और इस प्रकार एक बड़ा घोटाला किया गया है।

उदाहरण के लिएः वाहन संख्या DL13SF3381 मेसर्स सेवन स्टार ऑटो को दिया गया था

स्क्रैपिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, उत्तर प्रदेश को परिवहन विभाग, दिल्ली द्वारा दिनांक 08-01-2025 के ज़ब्ती ज्ञापन के माध्यम से ज़ब्ती किया गया। ज़ब्ती ज्ञापन पर कोई संख्या अंकित नहीं है, जिससे भ्रष्टाचार की तैयारी का संकेत मिलता हो। लेकिन मेसर्स सेवन स्टार ऑटो स्क्रैपिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने उक्त राजपत्र अधिसूचना का उल्लंघन करते हुए जमा प्रमाणपत्र जारी किया। ज़ब्ती ज्ञापन दिनांक 08-01-2025 की एक प्रति और जमा प्रमाणपत्र आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-A (सामूहिक रूप से) के रूप में संलग्न है।

उदाहरण के लिएः वाहन संख्या DL4C ND7585 मेसर्स सागा टेक को दिया गया था

सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड को दिल्ली नगर निगम, शाहदरा ज़ोन, दिल्ली द्वारा दिनांक 28-12-2024 के जब्ती ज्ञापन के तहत ज़ब्त किया गया था, लेकिन मेसर्स सागा टेक सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड ने उक्त राजपत्र अधिसूचना का उल्लंघन करते हुए जमा प्रमाणपत्र जारी कर दिया। आपके अवलोकनार्थ, दिनांक 28-12-2024 के ज़ब्त ज्ञापन की एक प्रति और जमा प्रमाणपत्र अनुलग्नक-बी (सामूहिक रूप से) के रूप में संलग्न है।

चूंकि उक्त वाहन परिवहन विभाग, दिल्ली द्वारा जब्त किए गए थे, इसलिए जमा प्रमाणपत्र जारी नहीं किया जा सकता था, बल्कि जब्ती प्रमाणपत्र जारी किया जाना चाहिए था।

यहाँ यह बताना ज़रूरी है कि जमा प्रमाणपत्र उस वाहन मालिक को जारी किया जाता है जो स्वेच्छा से अपना वाहन स्क्रैपिंग के लिए देता है। आरवीएसएफ नियम 2021 के अनुसार, यह जमा प्रमाणपत्र व्यापार योग्य है और कोई भी व्यक्ति नया वाहन खरीदते समय और इस प्रमाणपत्र को दिखाकर, उस विशेष वाहन के खंड के आधार पर लाखों रुपये तक के प्रोत्साहन का दावा कर सकता है। सड़क एवं परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने अपनी जीवन अवधि पूरी कर चुके वाहनों को स्वेच्छा से स्क्रैप करने को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में दो हज़ार करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

दिल्ली सरकार द्वारा सूचीबद्ध प्रवर्तन एजेंसियों के अधिकारियों के साथ मिलीभगत करके काम कर रही विभिन्न स्क्रैपिंग कंपनियां जनता के पैसे को हड़प कर अवैध लाभ के लिए इस प्रकार के जाली और मनगढ़ंत जमा प्रमाणपत्र जारी कर रही हैं।

बी. आर.वी.एस.एफ.एस. (स्क्रैपिंग कम्पनियों) द्वारा जारी किए गए जाली एवं मनगढ़ंत जमा प्रमाणपत्र।

यह भी कहा गया है कि केवल सड़क एवं परिवहन मंत्रालय ही उन वाहनों के लिए जमा प्रमाणपत्र जारी कर सकता है, जो मालिकों द्वारा स्वेच्छा से जमा किए जाते हैं और डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित होते हैं, जबकि स्क्रैपिंग कंपनियां अवैध रूप से अपने लेटर हेड पर जमा प्रमाणपत्र जारी कर रही हैं और वही प्रमाणपत्र परिवहन विभाग द्वारा स्वीकार किए जा रहे हैं।

परिवहन विभाग द्वारा जारी जमा प्रमाणपत्र की एक प्रति आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-सी के रूप में संलग्न है।

सरल ऑटो स्क्रैपिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा अवैध रूप से जारी किए गए जमा प्रमाणपत्र की एक प्रति, जिस पर डिजिटल हस्ताक्षर नहीं हैं, आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-डी के रूप में संलग्न है।

यह भी दिल्ली में प्रवर्तन एजेंसियों की मिलीभगत से स्क्रैपिंग कंपनियों द्वारा किए जा रहे घोटालों में से एक है। इसकी सीबीआई से जाँच होनी चाहिए ताकि घोटाले का पर्दाफाश हो सके।

सी. दिल्ली यातायात पुलिस विभाग द्वारा खड्डों में पड़े जब्त वाहनों को बिना नीलामी/निविदा प्रक्रिया के, यहां तक कि बिना निपटाए गए वाहनों के लिए सरकारी बकाया राशि वसूल किए, आर.वी.एस.एफ. को सौंपना।

आपके संज्ञान में यह लाया जाता है कि दिल्ली यातायात पुलिस (प्रवर्तन एजेंसी) ने आरवीएसएफएस के साथ मिलीभगत करके, वाहनों की नीलामी/निविदा या निपटान की उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना, उनके गड्ढों में पड़े जब्त वाहनों का निपटान कर दिया था।

दिल्ली सरकार द्वारा सूचीबद्ध प्रवर्तन एजेंसियों के अधिकारियों के साथ मिलीभगत करके काम कर रही विभिन्न स्क्रैपिंग कंपनियां जनता के पैसे को हड़प कर अवैध लाभ के लिए इस प्रकार के जाली और मनगढ़ंत जमा प्रमाणपत्र जारी कर रही हैं।

बी. आर.वी.एस.एफ.एस. (स्क्रैपिंग कम्पनियों) द्वारा जारी किए गए जाली एवं मनगढ़ंत जमा प्रमाणपत्र।

यह भी कहा गया है कि केवल सड़क एवं परिवहन मंत्रालय ही उन वाहनों के लिए जमा प्रमाणपत्र जारी कर सकता है, जो मालिकों द्वारा स्वेच्छा से जमा किए जाते हैं और डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित होते हैं, जबकि स्क्रैपिंग कंपनियां अवैध रूप से अपने लेटर हेड पर जमा प्रमाणपत्र जारी कर रही हैं और वही प्रमाणपत्र परिवहन विभाग द्वारा स्वीकार किए जा रहे हैं।

परिवहन विभाग द्वारा जारी जमा प्रमाणपत्र की एक प्रति आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-सी के रूप में संलग्न है।

सरल ऑटो स्क्रैपिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा अवैध रूप से जारी किए गए जमा प्रमाणपत्र की एक प्रति, जिस पर डिजिटल हस्ताक्षर नहीं हैं, आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-डी के रूप में संलग्न है।

यह भी दिल्ली में प्रवर्तन एजेंसियों की मिलीभगत से स्क्रैपिंग कंपनियों द्वारा किए जा रहे घोटालों में से एक है। इसकी सीबीआई से जाँच होनी चाहिए ताकि घोटाले का पर्दाफाश हो सके।

सी. दिल्ली यातायात पुलिस विभाग द्वारा खड्डों में पड़े जब्त वाहनों को बिना नीलामी/निविदा प्रक्रिया के, यहां तक कि बिना निपटाए गए वाहनों के लिए सरकारी बकाया राशि वसूल किए, आर.वी.एस.एफ. को सौंपना।

शेष समाचार पेज 3 पर

राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में,

राष्ट्रीय खेल महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में पीईएफआई (PEFI), युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में राष्ट्रीय गौरव के लिए सवारी।

प्रयागराज से दिल्ली, कानपुर, झांसी, ग्वालियर और आगरा होते हुए - 24 अगस्त से 31 अगस्त तक,

अमर हॉकी आइकन मेजर ध्यानचंद जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए।

आइये विरासत के लिए आगे बढ़ें, आइये भारत के लिए आगे बढ़ें।

हम 31 अगस्त को सुबह 7:30 बजे मेजर ध्यानचंद स्टेडियम, इंडिया गेट पर ग्रैंड फिनाले के लिए दिल्ली पहुंच रहे हैं... हमसे जुड़ें

ऋषि पंचमी व्रत आज

ऋषि पंचमी का महत्वपूर्ण त्योहार नजदीक ही है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार, ऋषि पंचमी भाद्रपद के महीने में शुक्ल पक्ष के पांचवें दिन मनाई जाती है। यह त्योहार गणेश चतुर्थी के अगले ही दिन पड़ता है। इस साल ऋषि पंचमी गुरुवार, 28 अगस्त 2025 को आ रही है। ऋषि पंचमी आमतौर पर गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद ही आती है। यह दिन सप्त ऋषि यानी कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम महर्षि, जमदग्नि और वशिष्ठ की पूजा का दिन है। केरल में इस दिन को विश्वकर्मा पूजा के रूप में भी मनाया जाता है। ऋषि पंचमी व्रत में मुख्य रूप से उन महान संतों के प्रति सम्मान, कृतज्ञता व्यक्त की जाती है, जिन्होंने समाज के कल्याण में बहुत योगदान दिया। ऐसा माना जाता है कि ऋषि पंचमी व्रत का व्रत सभी के लिए लाभकारी होता है, लेकिन इस व्रत को महिलाओं द्वारा विशेष रूप से किया जाता है। ऋषि पंचमी का त्योहार एक महिला के लिए पति के प्रति अपनी आस्था, कृतज्ञता, विश्वास और सम्मान व्यक्त करने का एक तरीका है। इस पर्व पर व्रत करने से अनजाने में किए गए पापों का भी नाश होता है।

ऋषि पंचमी का समय और तिथि

========================

ऋषि पञ्चमी – गुरुवार, 28 अगस्त 2025

ऋषि पञ्चमी पूजा मुहूर्त – सुबह 11:09 बजे से दोपहर 01:37 बजे तक

अवधि – 02 घंटे 28 मिनट

पञ्चमी तिथि प्रारम्भ – 27 अगस्त 2025 को दोपहर 03:44 बजे

पञ्चमी तिथि समाप्त – 28 अगस्त 2025 को शाम 05:56 बजे

ऋषि पंचमी के व्रत का उद्देश्य

==========================

हिंदू परंपरा के अनुसार, जो महिलाएं मासिक धर्म या पीरियड (योनि के माध्यम से गर्भाशय की आंतरिक परत से रक्त और श्लेष्म ऊतक का नियमित निर्वहन) का अनुभव कर रही हैं, उन्हें धार्मिक गतिविधियों को करने या घरेलू कार्यों (रसोई के काम सहित) में शामिल होने से मना किया जाता है। जब तक वे उस अवस्था में हैं। यहां तक कि उन्हें पाठ-पूजा से जुड़ी चीजों को छूने की भी मनाही होती है। यदि किसी मजबूरी से या गलती से या अन्य कारणों से वे ऐसा कर लेती हैं, तो वे रजस्वला दोष की भागी होती हैं। इस दोष से छुटकारा पाने के लिए महिलाएं ऋषि पंचमी का व्रत रखती हैं। ऋषि पंचमी को भाई पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। माहेश्वरी समाज में इस दिन बहनें भाइयों को राखी बांधती हैं। इस दिन बहनें व्रत रखती हैं और अपने भाई की लंबी उम्र की कामना करती हैं। वे पूजा करने के बाद ही भोजन करते हैं। भाई दूज का त्योहार भी भाई-बहन के बीच प्यार को दर्शाता है।

ऋषि पंचमी पर की जाने वाली पूजा विधि और अनुष्ठान

============================

ऋषि पंचमी के दिन स्नान करने के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें। अपने घर में साफ जगह पर हल्दी, कुमकुम और रोली का उपयोग करके एक चौकोर आकार का चित्र (मंडल) बनाएं। मंडल पर सप्त ऋषि (सात ऋषि) की प्रतिमा स्थापित करें। चित्र के ऊपर शुद्ध जल और पंचामृत डालें। चंदन से टीका लगाएं। सप्तऋषि को फूलों की माला और पुष्प अर्पित करें। उन्हें पवित्र धागा (यज्ञोपवीत) पहनाएं। उन्हें सफेद वस्त्र भेंट करें। साथ ही उन्हें फल, मिठाई आदि भी अर्पित करें। उस स्थान पर धूप आदि रखें। कई इलाकों में यह प्रक्रिया नदी के किनारे या किसी तालाब के पास की जाती है। इस पूजा के बाद महिलाएं अनाज का सेवन नहीं करतीं। ऋषि पंचमी के दिन वे एक खास तरह के चावल का सेवन करती हैं। ऋषि पंचमी उत्सव का सर्वोत्तम उपयोग करें, अपने सभी दोषों को दूर करें और जो आप चाहते हैं उसे प्राप्त करें।

व्रत में क्या खाएं?

================

ऋषि पंचमी पर खाने की परंपरा प्रत्येक संस्कृति में अलग होती है। पहले के दिनों में, भक्त अनाज से तैयार भोजन के बजाय भूमिगत उगने वाले फलों का सेवन करते थे। जैनियों के लिए यह दिन महत्वपूर्ण है। चूंकि जैन धर्म में दो संप्रदाय हैं, श्वेतांबर पंथ, जो ऋषि पंचमी को परशुजन (पर्युषण) महापर्व के अंत के रूप में मनाते हैं, जबकि दिगंबर पंथ इस दिन को महा पर्व की शुरुआत के रूप में मानते हैं।

महाराष्ट्र में इस दिन एक विशेष भोजन पकाया जाता है जिसे ऋषि पंचमी भाजी के नाम से जाना जाता है। इसे मौसमी सब्जियों के साथ पकाया जाता है। आमतौर पर इस व्यंजन को बनाते समय कंद का उपयोग किया जाता है। इस भाजी को एक तरह से पकाया जाता है, जिस तरह ऋषि तैयार किया करते थे यानि साधारण और बिना मसाले के। ऋषि पंचमी के दिन व्रत करने वाले भक्त इस भाजी से अपना व्रत खोलते हैं। व्रत खोलने के लिए इस भाजी का सेवन करते हैं। इस भाजी की मुख्य सामग्री है अमरनाथ के पत्ते- चवली, हाथी पैर यम-सूरन, शकरकंदी, आलू, सर्प लौकी- चिचिंडा, मूंगफली, कद्दू, अरबी के पत्ते, अरबी और कच्चा केला। इन सभी सब्जियों को गैस स्टोव पर बर्तन में पकाया जाता है। पहले लोग इस भाजी को मिट्टी के बर्तनों में पकाया करते थे, आजकल इसकी जगह धातु के बर्तनों ने ले ली है। इस प्रकार ऋषि पंचमी व्रत ऋषियों के निस्वार्थ परिश्रम को समर्पित है। यह एक ऐसा दिन है, जो भक्तों को अपने तन-मन और आत्मा को शुद्ध करने का अवसर देता है। इस पूरे दिन के उपवास के जरिए पाचन तंत्र को भी मजबूत किया जाता है।

ऋषि पंचमी के पीछे की कहानी

===========================

एक बार की बात है, विदर्भ देश में एक ब्राह्मण अपनी समर्पित पत्नी के साथ रहता था। ब्राह्मण के एक पुत्र और एक पुत्री थी। उसने अपनी बेटी की शादी एक सुसंस्कृत ब्राह्मण व्यक्ति से कर दी, लेकिन लड़की के पति की असमय मृत्यु हो गई, जिससे लड़की विधवा का जीवन व्यतीत करने लगी। वह अपने पिता के यहां वापस आ गई और फिर वहीं रहने लगी। कुछ दिनों बाद लड़की के पूरे शरीर में कीड़े हो गए। जिसने उसके लिए मुश्किलें खड़ी कर दीं। उसके माता-पिता भी चिंतित हो गए। वे इस समस्या के समाधान के लिए ऋषि के पास गए।

प्रबुद्ध ऋषि ने ब्राह्मण की बेटी के पिछले जन्मों में झांका। ऋषि ने ब्राह्मण और उसकी पत्नी से कहा कि उनकी बेटी ने अपने पिछले जन्म में एक धार्मिक नियम का उल्लंघन किया था। मासिक धर्म के दौरान उसने रसोई के कुछ बर्तनों को छुआ था। ऐसा करके उसने उस पाप को आमंत्रित किया था, जो उसके वर्तमान जन्म में परिलक्षित हो रहा था। पवित्र शास्त्रों में कहा गया है कि जो महिला मासिक धर्म में हैं, उसे धार्मिक चीजों और बरतनों को नहीं छूना चाहिए। ऋषि ने उन्हें आगे बताया कि लड़की ने ऋषि पंचमी का व्रत भी नहीं किया था, यही कारण है कि उसे इन परिणामों का सामना करना पड़ा।

ऋषि ने ब्राह्मण से यह भी कहा कि अगर लड़की पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ ऋषि पंचमी का व्रत रखती है और अपने पापों के लिए क्षमा मांगती है, तो उसे अपने पिछले कर्मों (कर्मों) से छुटकारा मिल जाएगा और उसका शरीर कीड़ों से मुक्त हो जाएगा। लड़की ने वही किया, जो उसके पिता ने उसे बताया और वह कीड़ों से मुक्त हो गई।

चुनावी 'कल्पनाएं' उड़ान भरती...!

चुनावी मौसम में 'कल्पनाएं' उड़ान भरती,
राजनीति को तालियों की जरूरत पड़ती।
हनुमानजी पहले 'अंतरिक्ष यात्री' हो जाते,
न्यूटन,आर्मस्ट्रांग स्वयं को बेरोजगार पाते।
कहे अनुराग आस्था के हम भी तो हैं धनी,
अंतरिक्ष यात्रा वैज्ञानिक इतिहास न फनी।

ना ऑक्सीजन,स्पेससूट ना रॉकेट साइंस,
उन्हें प्रचार हेतू चाहिए कुछ फनी लाइंस।
बयानों की तो जन्म-दाता ही है राजनीति,
बच्चों सही जवाब देने से ही मिलेगी गति।
तुम्हें किताबों में जो लिखा है वो ही पढ़ना,
कट जाए नंबर मास्टरजी से नहीं झगड़ना।
(संदर्भ-हनुमानजी पहले अंतरिक्ष यात्री थे।)

संजय एम तराणेकर

ॐ महामंत्र

एक बार कैलास पर स्थित शिवजी ने मात पार्वती के प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार देते हैं- हे देवी! जो तुम मुझसे पूछ रही हो, उसे मैं कहता हूँ। उसके सुनने मात्र से जीव साक्षात शिव हो जाता है।
प्रणव के अर्थ का वास्तविक ज्ञान ही मेरा ज्ञान है। वही मन्त्र सभी विद्याओं का बीज (मूल कारण) है। वह वट बीज की भाँति अतिसूक्ष्म है और महत्वपूर्ण अर्थ वाला है। वही वेदों का आदि है। वहीं वेदों का सार है तथा वही विशेषकर मेरा स्वरूप है।
मैं तीनों गुणों से परे रहने वाला सर्वज्ञ, सर्वकृत प्रभु हूँ। सर्वत्र गमन करने वाला होने पर भी ॐ इस एक अक्षर वाले मन्त्र में स्थित शिव हूँ।
यह जो कुछ वस्तु है, वह सब गुण मेरे और प्रधान के संयोग से समष्टि (संक्षेप), व्यष्टि (विराट्) रूप से प्रणव का अर्थ ही है। इसलिये वह एक अक्षर ब्रम्ह ही सभी अर्थों का साधक है।
इसलिये शिवजी ॐ से ही सम्पूर्ण संसार की रचना करते हैं। शिव या प्रणव, या शिव एक ही हैं; क्योंकि वाच्य और वाचक में कुछ भेद नहीं होता है। इसलिये मुझे ब्रम्हर्षि एकाक्षर देव कहते हैं, क्योंकि विद्वान वाच्य-वाचक में एकता स्वीकार करते हैं। इसलिये प्रणव को ही सबका कारण जानों। मुमुक्षु (मोक्ष को चाहने वाले योगी) मुझे निर्विकारी, निर्गुण, परमेश्वर समझते हैं।
हे देवेशी! सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ इस प्रणव को काशी में प्राणियों को मुक्ति देने सदाशिव उपासना के लिये सुनता हूँ। हे अम्बिका! अब मैं पहले प्रणवोद्धार का वर्णन करता हूँ। जिसको जानने से परम सिद्धि प्राप्त होती है।
पहले अकार के आश्रित निवृत कला का उद्धार करे। उकार में इन्धन कला का, मकार में काल कला का, नाद में दण्ड और बिन्दु में ईश्वर कला का उद्धार करे।
इस प्रकार पाँच वर्ण रूप प्रणव का उद्धार होता है। यह तीन मात्रा तथा बिन्दु नादात्मा जपने वाले को मुक्ति प्रदान करता है। ब्रम्हा से लेकर स्थावर पर्यन्त सभी प्राणियों का यह प्राण है। अतएव इसे प्रणव कहते हैं। इसका आदिवर्ण अकार है, उकार, अन्त में मकार तथा नाद है। इसके संयोग से ॐ बनता है।
हे मुनिवर! यह जल की भाँति दक्षिण-उत्तर में स्थित है। मध्य में मकार है,. इस प्रकार ॐकार की स्थिति है। अकार, उकार, मकार- एक क्रम से तीन मात्रा है। उसके बाद आधी मात्रा और है।
हे महेशानी! यह आधी मात्रा बिन्दु नाद स्वरूप वाली है। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसे ज्ञानी लोग जानते हैं। हे प्रिया! 'ईशानः सर्वविद्यानाम' इस प्रकार वेद ने कहा है। ये वेद मुझसे उत्पन्न होते हैं, यह 'वेदों ने सत्य कहा है।
इसलिये मैं वेदों का आदि हूँ और प्रणव मेरा वाचक है। मेरा वाचक होने के कारण यह प्रणव भी वेदों का आदि कहा गया है। अकार इसका महान बीज है। इसी के रजोगुण से ब्रम्हा जी की उत्पत्ति होती है।

किश्तों में संविधान बदलने का खेल (आलेख : राजेंद्र शर्मा)

संसद के मानसून सत्र की अपेक्षाकृत छोटी अवधि के दौरान ही, अनेक राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार, जहां देश के मूड में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है, वहीं इसी दौरान देश को दो बड़े सरप्राइज भी देखने को मिले हैं। देश के मूड में बदलाव का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि संसद के इस सत्र की शुरूआत प्रधानमंत्री के संसद पहुंचने पर, सत्तापक्ष के सांसदों की तरफ से ही सही, उनका जोशीले नारों के साथ स्वागत किए जाने से हुई थी और प्रधानमंत्री ने भी कम से कम लोकसभा को, आपरेशन सिंदूर पर हुई विस्तृत चर्चा के अपने अति-विस्तृत उत्तर का सम्मान दिया था, जो सम्मान प्रधानमंत्री मोदी के राज के ग्यारह साल में दुर्लभ ही होता गया है। उसी सत्र का अंत विपक्षी सांसदों द्वारा ही सही, प्रधानमंत्री को संबोधित कर ''वोट चोर, गद्दी छोड़'' के नारे लगाए जाने के साथ हुआ। और बिहार में जन-विरोधी एसआइआर प्रक्रिया पर, संसद में बहस कराने विशेष संदर्भ में लगे, इन नारों के लगाए जाने से बड़ी खासियत, विपक्ष के इन नारों पर सत्ताधारी पार्टी के सांसदों की जैसे हथियार ही डाल देने की प्रतिक्रिया थी। सामान्यतः जो होता आया है, उसके विपरीत, सत्ताधारी सांसदों की ओर से विपक्ष के नारों को अपने कंठबल से दबाने का, शायद ही कोई वास्तविक प्रयास किया जा रहा था।

और जहां तक इसी सत्र के दौरान हुई दो बड़ी हैरान करने वाली घटनाओं का सवाल है, पहली घटना जो सत्र के शुरू में ही हुई, राज्यसभा के सभापति तथा उपराष्ट्रपति के अचानक इस्तीफा देने की ही रही। यह घटना इस कदर अचानक हुई कि उपराष्ट्रपति के पद से जगदीप धनखड़ के इस्तीफे के महीने भर बाद भी, जबकि उनकी जगह लेने के लिए नये उपराष्ट्रपति के चुनाव की प्रक्रिया निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुकी है, जहां सत्तापक्ष और एकजुट विपक्ष, दोनों के उम्मीदवारों का चुनाव प्रचार जोर-शोर से चल पड़ा है, अब तक प्रेक्षकों द्वारा इस पर हैरानी ही जतायी जा रही है कि उपराष्ट्रपति को अचानक इस्तीफा क्यों देना पड़ा। बेशक, इस संबंध में पहले दिन से ही तरह-तरह की अटकलें लगायी जा रही हैं और बहुत सी अटकलें निराधार भी नहीं हैं। कम से कम इतना तो साफ ही है कि वर्तमान सत्ता के शीर्ष पर बैठे सत्ताधीशों की धनखड़ से नाराजगी इस त्यागपत्र प्रकरण के पीछे थी। फिर भी इस प्रकरण के पीछे एक रहस्यकथा तो अब भी बनी ही हुई है। और इस रहस्यकथा को इस्तीफा देने के बाद से धनखड़ के सार्वजनिक परिदृश्य से पूरी तरह से अदृश्य ही हो जाने ने और भी गाढ़ा रंग दे दिया है।

दूसरा हैरान करने वाला प्रकरण, सत्र के ऐन आखिर में सामने आया। लोकसभा की कार्य मंत्रणा समिति की सारी प्रक्रिया को धता बता हुए और विपक्ष ही नहीं, सत्तापक्ष को भी हैरान करते हुए, लोकसभा में अचानक 130वां संविधान संशोधन प्रस्ताव पेश कर दिया गया। यह प्रस्ताव संविधान में संक्षेप में इस आशय के संशोधन का है कि पांच साल या उससे अधिक सजा वाले अपराध के आरोपी, प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय या राज्य मंत्री तक को, अगर बिना जमानत के एक महीना कैद में गुजारना पड़े तो, एक महीना पूरा होते ही उसका उक्त पद खुद-ब-खुद छिन जाएगा। इस संविधान संशोधन प्रस्ताव को विपक्ष के कड़े विरोध के बाद भी लोकसभा में पेश किया गया और उसके तुरंत बाद ही संयुक्त संसदीय समिति द्वारा छानबीन के लिए भेज दिया गया। इस मामले में संयुक्त संसदीय समिति का गठन खुद विवादों के घेरे में आता जा रहा है, क्योंकि एक-एक कर विपक्षी पार्टियों के प्रस्तावित समिति से दूर रहने का एलान करने का सिलसिला शुरू हो चुका है।

जैसाकि आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता था, सत्ताधारी भाजपा और किसी हद तक उसका गठबंधन भी, इस संशोधन को राजनीति में ''शुचिता'' लाने की अपनी कोशिश के रूप में पेश करना चाहता है। गृहमंत्री अमित शाह द्वारा लोकसभा में इस संशोधन प्रस्ताव को पेश करते हुए दी गयी दलीलों से यह कोशिश पूरी तरह से स्पष्ट थी। इसके बाद यदि अगर कोई कसर रह गयी थी, तो वह मानसून सत्र के फौरन बाद, बिहार, बंगाल तथा अन्य राज्यों के प्रधानमंत्री के चुनावी तथा चुनाव-पूर्व दौरे पर दिए गए भाषणों से साफ हो गयी। इन भाषणों में प्रधानमंत्री ने विपक्षी पार्टियों के उक्त संविधान संशोधन के विरोध को, उनके नेताओं के भ्रष्ट होने और भ्रष्टाचारियों को बचाने का सबूत बनाकर पेश करने की कोशिश की। इसी सिलसिले में प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार फिर अपना पुराना दावा दोहराया कि उनकी सरकार पर भ्रष्टाचार का एक भी दाग नहीं लगा है।

कहने की जरूरत नहीं है कि उक्त संविधान संशोधन प्रस्ताव के पीछे मोदी सरकार की राजनीति में शुचिता लाने की चिंता होने के दावे को, नरेंद्र मोदी के अंधभक्तों के सिवा शायद ही किसी ने गंभीरता से लिया होगा। इस संशोधन प्रस्ताव के दायरे में प्रधानमंत्री तथा केंद्रीय मंत्रियों के भी शामिल किए जाने के बावजूद, यह सचाई किसी से छुपी नहीं रही है कि ये पद सिर्फ दिखावे के लिए शामिल किए गए हैं ; यह दिखाने के लिए कि यह कानून विपक्ष ही नहीं, सत्तापक्ष पर भी लागू होगा। लेकिन, यह दिखावा एक ऐसी सरकार द्वारा किया जा रहा है, जिससे उसके पक्के से पक्के समर्थक भी, सत्तापक्ष और विपक्ष में भेदभाव न करने का दिखावा तक करने की उम्मीद नहीं करते हैं, फिर आम लोगों के इस दिखावे पर विश्वास करने का तो सवाल ही कहां उठता है। उल्टे आम देशवासी किसी न किसी हद तक विपक्ष की इस दलील से प्रभावित है कि यह संविधान संशोधन, सिर्फ और सिर्फ विपक्षी सरकारों को निशाना बनाने और अस्थिर करने के लिए लाया गया है। वास्तव में प्रधानमंत्री समेत खुद सत्ताधारी पार्टी द्वारा इस संविधान संशोधन विधेयक के बहाने से, विपक्ष को निशाना बनाए जाने की कोशिशों से, इस आशंका की पुष्टि ही हुई है।

''जेल से सरकार नहीं चल सकती'' की सत्तापक्ष की दलीलों का इशारा भी, मोदी राज द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री पद पर रहते केजरीवाल को और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को, सीआइडी और ईडी के बनाए मामलों में जेल में डाले जाने की ओर ही है। वास्तव में हेमंत सोरेन ने तो राजभवन से अपनी गिरफ्तारी से ऐन पहले इस्तीफा देकर और अपनी पार्टी का वैकल्पिक मुख्यमंत्री बनवा कर, झारखंड में विपक्षी सरकार को इस हथकंडे से गिराने की कोशिश को, विफल भी कर दिया था। केजरीवाल ने ही गिरफ़्तारी के बाद और अंततः जमानत के बाद भी, इस्तीफा देने से इंकार कर दिया था और इस तरह, केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल कर सरकार को हटाए जाने की कोशिश को विफल किया था। अब इस संशोधन के जरिए, इस हथकंडे के सहारे असुविधाजनक विपक्षी सरकारों को हटाने का ही रास्ता तैयार किया जा रहा है। और इस हथकंडे का इस्तेमाल कोई अतिरंजित आशंका नहीं है। तमिलनाडु तथा केरल समेत, ऐसा कोई विपक्ष-शासित राज्य नहीं है, जहां ईडी-सीबीआइ आदि केंद्रीय एजेंसियों ने, मंत्रियों से लेकर मुख्यमंत्री तक के खिलाफ किसी न किसी प्रकार की जांच नहीं छेड़ रखी है। दिल्ली और झारखंड के मामले इसके गवाह हैं कि ऐसी जांचों को मुख्यमंत्रियों तक की हिरासत की मांग तक पहुंचने में और फिर उनकी जमानत की राह मुश्किल से मुश्किल बनाए जाने में, ज्यादा समय नहीं लगता है। यही वह प्रशासनिक संस्कृति है, जो मोदी राज के ग्यारह साल की पहचान ही बन गयी है।

वास्तव में इस संशोधन के बाद, इन केंद्रीय एजेंसियों को, केंद्रीय सत्ताधारी दल के पक्ष में दलबदल का हथियार बनाना और भी आसान हो जाएगा, क्योंकि मंत्री-मुख्यमंत्री सभी के सिर पर यह तलवार लटकती रहेगी कि महीने भर उन्हें जमानत न मिलना सुनिश्चित किए जाने भर की जरूरत है, उनका कैरियर आसानी से चौपट किया जा सकता है। सभी जानते हैं कि हिमंता बिश्वशर्मा से लेकर अजीत पवार तक, दर्जनों बड़े-बड़े विपक्षी नेताओं को इन्हीं एजेंसियों के ब्लैकमेल के जरिए, सत्तापक्ष के पाले में पहुंचाया गया है। प्रस्तावित संशोधन इन एजेंसियों को और घातक बना देंगे। याद रहे कि यह तलवार सिर्फ विपक्ष के ही सिर पर नहीं लटक रही होगी, सत्तापक्ष के अपने मंत्रियों से लेकर, उसके सहयोगियों के भी सिर पर लटक रही होगी। तेलुगू देशम तथा जनता दल यूनाइटेड में, इस संविधान संशोधन पर बेचैनी की खबरें, सिर्फ अटकलें ही नहीं हैं।

बेशक, ये तमाम आशंकाएं तब कुछ अपरिपक्व लग सकती हैं, जब हम इस बात को हिसाब में लेते हैं कि इस तरह के संविधान संशोधन का प्रस्ताव रखने की शक्ति तो मोदी सरकार के पास है, लेकिन ऐसे किसी संशोधन को पारित कराने की शक्ति उसके पास नहीं है। तब तो बिल्कुल ही नहीं, जब पूरा विपक्ष प्रस्तावित संशोधन के खिलाफ पूरी तरह से एकजुट है, जबकि खुद सत्ताधारी गठजोड़ इतना एकजुट नजर नहीं आता है। कम से कम फौरन सत्तापक्ष की यह मंशा पूरी होती नहीं लगती है और फौरन तो उसका मकसद, संसद में विपक्ष की ओर से उठायी गयी, बिहार में एसआइआर प्रक्रिया पर बहस की मांग से ध्यान बंटाना ही ज्यादा लगता है। यह दूसरी बात है कि इस पैंतरे के बाद से, विपक्ष की ''वोट बचाओ यात्रा'' के माध्यम से, बिहार में वोट चोरी का मुद्दा और भी बड़ा हो गया है।

लेकिन, वोट चोरी के मुद्दे से ध्यान बंटाने के साधन के रूप प्रस्तावित संविधान संशोधन के इस तात्कालिक उपयोग से अलग, संविधान के बुनियादी जनतांत्रिक सिद्धांतों तथा प्रावधानों से छेड़छाड़ करने वाले ऐसे संविधान संशोधनों के उछाले जाने का, एक और गहरा उद्देश्य भी है। यह एक के बाद एक, इस प्रकार के संशोधनों को उछालने के जरिए, संविधान को ही बदलने के लिए माहौल बनाना है। सत्ताधारी भाजपा और उसके प्रधानमंत्री दिखाने के लिए भले संविधान नहीं बदलने देने की कसमें खाते हैं, वास्तव में वे किस्तों में संविधान बदलने की ही कोशिश कर रहे हैं। एक देश, एक चुनाव के प्रस्ताव से संबंधित संविधान संशोधनों का निपटारा अभी हुआ भी नहीं है, तब तक एक और बड़े संविधान संशोधन का प्रस्ताव पेश किया जा चुका है। और यह सब संविधान की प्रस्तावना में से समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष आदि को निकालने के लिए संशोधनों की, आए दिन उन्हीं की कतारों के बीच से उठती रहने वाली मांगों के ऊपर से है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

ट्रंप के मनमाने टैरिफ का डटकर संयम से मुकाबला करेगा मोदी का 'आत्मनिर्भर भारत' : राजेश खुराना

आगरा, संजय सागर सिंह

दुनियां जहां वैश्विक मंच पर ट्रंप के टैरिफ की मनमानी राजनीति से परेशान हैं, वहीं नया भारत अपनी आत्मनिर्भर नीतियों के माध्यम से इन चुनौतियों का संयम, रणनीति और नवाचार के साथ साबधानिपूर्वक सामना करने को तैयार है। राजेश खुराना के वक्तव्यों ने इस दिशा में नए और मजबूत भारत की प्रतिबद्धता को और स्पष्ट कर दिया है। ट्रंप द्वारा मनमाने नए टैरिफ लागू किए जाने के बीच भारत के उद्यमी वर्ग ने आत्मनिर्भरता की राह को और मजबूत करने का संकल्प दोहराया है।

आत्मनिर्भर भारत संस्था के अध्यक्ष राजेश खुराना ने मंगलवार को मीडिया से बातचीत के दौरान स्पष्ट किया कि नया मजबूत भारत, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, ट्रंप के मनमानी टैरिफ चुनौतियों का पूरी मजबूती से सामना करने को तैयार है।

श्री खुराना ने आगे कहा कि डोनाल्ड ट्रंप द्वारा बुधवार से प्रभावी किए जाने वाले टैरिफ के बावजूद भारतीय उद्योग जगत हतोत्साहित नहीं है। उन्होंने बताया कि कारोबारी अब निर्यात के नए अवसरों की तलाश में जुट गए हैं और आत्मनिर्भर भारत अभियान उन्हें इस दिशा में नई दिशा और ऊर्जा देगा।

22,000 करोड़ रुपये का फंड बनेगा संबल

राजेश खुराना ने जानकारी दी कि केंद्र सरकार ने एक्सपोर्ट मिशन के तहत 22 हजार करोड़ रुपये के विशेष फंड का प्रावधान किया है, जिससे निर्यातकों को राहत मिलने की उम्मीद है। उन्होंने संकेत दिया कि यह योजना दीपावली के अवसर पर औपचारिक रूप से शुरू की जा सकती है। यह मिशन देश को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाएगा।

निर्यातकों को मिल सकती है टैक्स छूट

उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की है कि अमेरिका को किए जाने वाले निर्यात को आयकर से पूर्णतः मुक्त किया जाए ताकि प्रतिस्पर्धा में भारतीय उत्पादों को बढ़त मिल सके। इसके अलावा उन्होंने जल्द ही इंटरेस्ट सबवेंशन स्कीम (ब्याज में रियायत योजना) को पुनः लागू करने की उम्मीद भी जताई, जिससे निर्यातकों को आर्थिक रूप से राहत मिलेगी।

करीब एक 45 फीसदी के आसपास निर्यात 232 या जीरो टैरिफ प्रावधानों के कारण फिलहाल सुरक्षित है।-

एक्सपोर्ट सेक्टर के एक्सपर्ट्स की मानें तो भारत का करीब 22 हजार करोड़ का निर्यात नए टैरिफ प्रावधानों से प्रभावित हो सकता है। जबकि करीब एक 45 फीसदी के आसपास निर्यात 232 या जीरो टैरिफ प्रावधानों के कारण फिलहाल सुरक्षित है, जिसमें जरूरी दवाएं, इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर शामिल हैं। हालांकि अतिरिक्त टैरिफ से बचने के लिए अमेरिकी आयातकों और भारतीय निर्यातकों ने फ्रंटलोडिंग से इसका असर कम करने का प्रयास किया है, मतलब अमेरिका में दिवाली क्रिसमस और न्यूईयर से पहले आयातकों ने अपना स्टॉक भर लिया है, लेकिन अगर टैरिफ दरों में बदलाव नहीं होता है, तो फिर आने वाली गर्मियों में इसका बड़ा प्रभाव देखने को मिलने लगेगा।

नोएडा फेयर में नए कारोबार की उम्मीद

अक्तूबर में नोएडा में आयोजित होने वाले व्यापार मेले को लेकर भी उन्होंने उम्मीद जताई कि इसमें बड़ी संख्या में नए अंतरराष्ट्रीय खरीदार शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि यह मेला देश के निर्यात क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकता है।

निर्यातकों से धैर्य रखने की अपील

आखिर में राजेश खुराना ने मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों को चुनौतीपूर्ण बताते हुए देश भर के निर्यातकों से धैर्य और संयम बनाए रखने की अपील की। उन्होंने कहा, "स्थिति जल्द ही नियंत्रण में आने की संभावना है। ऐसे में जल्दबाजी में किसी भी वर्कर को ना निकालें।" उन्होंने भरोसा दिलाया कि केंद्र सरकार निर्यात क्षेत्र को स्थायित्व प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

आयरन और विटामिन सी से भरपूर सर्दियों में इम्यूनिटी बढ़ाएं ताकत दे होममेड आवला च्यवनप्राश बनाने की रेसिपी

सामग्रीः-

1 किलो आंवला
500 ग्राम गुड़
100 ग्राम खजूर
दो बड़ा चम्मच देसी घी
8 से 10 तुलसी पत्ता
दो टुकड़ा दालचीनी
दो चम्मच सौंफ
दो चम्मच जीरा
एक चम्मच काली मिर्च
तीन से चार तेज पत्ता
5 लौन्ग
5 6 पिपली
5 6 इलायची
दो चम्मच सोंठ पाउडर
दो से तीन चम्मच शहद

होममेड च्वयनप्राश बनाने की विधि।

1 आँवला को धोकर प्रेशर कुकर में डालें आधा कप पानी डालकर दो से तीन सीटी आने तक उबाल लें।

2 उबालने के बाद ठंडा करके आवले से बीज निकाल कर अलग कर ले अब आवले के गूदे को मिक्सी के जार में डालकर पीसकर पेस्ट बना लें।

3 आप सभी खड़े मसाले लौंग, इलायची, सौंफ, जीरा, पिपली, दालचीनी, काली मिर्च, तेजपत्ता को धीमी आंच पर हल्का सेक ले ठंडा करके मसाले को दरदरा रहा पीस लें।

4 खजूर के बीज निकालकर अलग कर लें अब एक जार में खजूर का गुदा डालें साथ में तुलसी के पत्ते और थोड़ा सा पानी डालकर पीसकर इसका भी पेस्ट बना ले।

5 कढ़ाई में घी गर्म करें अब आवले के पेस्ट को डालकर धीमी आंच पर 7 से 8 मिनट पकाएं।

6 आप पिसे हुए खजूर का पेस्ट, गुड़ और साथ में पिसे हुए पाउडर मसाले डालें। आप सभी चीजों को मिलने और गुड़ को घुलने तक धीमी आंच पर 7 से 8 मिनट पकाना है।

7 आखिर में सोंठ पाउडर और शहद डालकर अच्छी तरह मिला ले च्यवनप्राश बनकर तैयार है ठंडा होने के बाद इसे किसी और टाइट जार में स्टोर करें और महीने भर खाएं।

प्रेम पच्चीसा (भाग 13)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

माया की आँखें उस दृश्य को देखकर नम हो गईं। वहाँ, संप्रेक्षण गृह की दीवारों के बीच, दर्जनों बच्चे—जिनकी उम्र मुश्किल से 07 से 18 साल की होगी—एक-दूसरे से सटकर बैठे थे। कमरे में हवा का नामो-निशान नहीं, फर्श पर फैली गंदगी और दीवारों पर उकेरी गई उदासी की कहानियाँ। आदर्श समाज संस्था सेवी संयोजिका, मालती दीदी, जो सामाजिक कार्यकर्ता ने माया का हाथ पकड़कर कहा, ₹देखो माया, ये सिर्फ अपराधी नहीं हैं। ये समाज की उपेक्षा के शिकार हैं। लेकिन कुछेक लालची लोगों के कारण सिस्टम इतना जर्जर है कि सुधार की बजाय, ये बच्चे और बिगड़ जाते हैं।₹ आखिर बाल सुधार गृह में नहीं सुधरेंगे तो यही बच्चे बड़े होकर जघन्य अपराधी बनेंगे।

माया कहती है दीदी हर माह देश के किसी न किसी बाल संप्रेषण गृह से बच्चे फरार होकर बड़ी घटना को अंजाम दे रहें हैं। माया, जो अपनी पत्रकारिता में हमेशा रचनात्मकता से सच्चाई को उजागर करती थी, ने अपना नोटबुक निकाला। ₹दीदी, मैं यहाँ की सच्चाई को दुनिया के सामने लाऊँगी। लेकिन पहल ये बच्चे यहाँ कैसे पहुँचते हैं? क्या कोई सुधार कार्यक्रम है?₹ मालती दीदी ने एक गहरी सांस ली और बोलीं, ₹ज्यादातर गरीबी, परिवार की टूटन या गलत संगत से के साथ ही अंधी आधुनिकता के शिकार बच्चे सुधर सकते हैं। इनके सुधार कार्यक्रम तो हैं कागजों पर, लेकिन फंडिंग की कमी और स्टाफ की उदासीनता से सब बेकार है।

पिछले महीने एक बच्चा, रवि, जो चोरी के आरोप में आया था, ने खुद को चोट पहुँचाने की कोशिश की हम उसे संप्रेषण गृह के स्टाफ के त्वरित सहयोग से बचा सके, लेकिन कितनों को बचा पाएँगे?"

माया का मन विचलित था लेकिन उसकी रचनात्मकता जाग उठी। वह सोचने लगी कि सिर्फ़ रिपोर्ट लिखने से क्या होगा? क्यों न एक अभियान शुरू किया जाए? अगले दिन, माया ने अपने अखबार में एक सीरीज शुरू की

"बाल अपराधीः सुधार की राह"।

पहली किस्त में उसने संप्रेक्षण गृह की तस्वीरें और बच्चों की कहानियाँ छापीं, बिना नाम लिए, उनकी गोपनीयता का खयाल रखते हुए।

प्रतिक्रिया जबरदस्त थी। सोशल मीडिया पर हैशटैग #SaveOurKids & Society ट्रेंड करने लगा।

लेकिन कहानी नये मोड़ पर है। एक शाम, माया को एक अनजान नंबर से कॉल आया। ₹मैडम, आपकी रिपोर्ट से हमारी नौकरी जा रही है। रुक जाओ, वरना...₹ धमकी थी अंजान नंबर से, माया डरी नहीं, बल्कि और मज़बूत हो गई। मालती दीदी के साथ मिलकर लगातार काम शुरू किया, जहाँ और बच्चे कला, संगीत और शिक्षा से जुड़ सकें। धीरे-धीरे, संप्रेक्षण गृह में बदलाव आने लगा—नए फंड्स, बेहतर सुविधाएँ। माया की कहानी अब सिर्फ़ पत्रकारिता की नहीं, बल्कि परिवर्तन की बन गई। लेकिन क्या ये बदलाव स्थायी होगा? या फिर सिस्टम की जड़ें और गहरी हैं? सच्चाई जारी है... (भाग 14)

प्रथम पृष्ठ का शेष समाचार

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन पंजीकृत (टोलवा) के द्वारा परिवहन विभाग के खिलाफ उठाए जा रहे मुद्दे पर आज दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष द्वारा मुख्य सतर्कता आयुक्त दिल्ली को सौंपा गया 40 पृष्ठ का मांग पत्र

शेष समाचार

आपके संज्ञान में यह लाया जाता है कि दिल्ली यातायात पुलिस (प्रवर्तन एजेंसी) ने आरवीएसएफएस के साथ मिलीभगत करके, वाहनों की नीलामी/निविदा या निपटान की उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना, उनके गड्ढों में पड़े जब्त वाहनों का निपटान कर दिया था।

इस बात की जाँच की जानी है कि ट्रैफ़िक पुलिस विभाग द्वारा राजकोष को नुकसान पहुँचाकर नीलामी/निविदा प्रक्रिया क्यों नहीं अपनाई गई और करोड़ों रुपयों के इस घोटाले में इन लेन-देनों के अधिकारी/लाभार्थी कौन हैं। यह भी जाँच की जानी है कि दिल्ली ट्रैफ़िक पुलिस विभाग के गड्ढों में कितने वाहन पड़े थे/पड़े हैं और ज़ब्त किए गए वाहनों को RVSFS को सौंपकर कब-कब निपटाया जाता है।

यह प्रस्तुत किया गया है कि सरकारी विभागों में, यहां तक कि एक कुर्सी का भी निपटान किया जाना है, इस प्रकार के मामलों में उचित प्रक्रिया/दिशानिर्देश जारी किए गए हैं।

डी. आरवीएसएफएस द्वारा गैर-दावा किए गए स्क्रैप वाहनों का भुगतान न करना

खंड 10. (iii) में कहा गया है, ₹जिस वाहन के लिए 15 दिनों की अवधि के भीतर स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया जाता है, तो संबंधित आरवीएसएफ द्वारा स्क्रैप मूल्य को डिमांड ड्राफ्ट / आरटीजीएस / एनईएफटी / आईएमपीएस के माध्यम से प्रवर्तन एजेंसी के सरकारी खाते में जमा किया जाएगा।

यह प्रस्तुत किया गया है कि कई आरवीएसएफ कम्पनियों ने लंबे समय के बाद भी वाहनों के लावारिस स्क्रैप मूल्य जमा नहीं किए हैं, क्योंकि वर्तमान मामले में प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा समय पर कार्रवाई नहीं की गई है।

उदाहरणः 27-03-2025 को परिवहन विभाग, दिल्ली द्वारा एक आरवीएसएफ मेसर्स सेलेक्ट टेक्निकल सर्विसेज़ को 29-03-2023 से 22-08-2024 तक की अवधि के लिए वाहन का अंतिम जीवनकाल भुगतान न करने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। यह समझ से परे है कि उक्त अवधि के लिए भुगतान न करने के बाद भी प्रवर्तन एजेंसियों ने इस कंपनी को काम क्यों सौंपा। 27-03-2025 के कारण बताओ नोटिस की एक प्रति आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-ई के रूप में संलग्न है।

यह बहुत ही अजीब बात है कि उक्त कंपनी ने 11.10.2024 से 30.10.2024 तक की अवधि का भुगतान नहीं किया लेकिन यह कल्पना से परे है कि इस आरवीएसएफ से कोई वसूली क्यों नहीं की गई, जबकि खंड 10.(iii) कहता है कि यदि स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया जाता हैं

इस बात की जाँच की जानी है कि ट्रैफ़िक पुलिस विभाग द्वारा राजकोष को नुकसान पहुँचाकर नीलामी/निविदा प्रक्रिया क्यों नहीं अपनाई गई और करोड़ों रुपयों के इस घोटाले में इन लेन-देनों के अधिकारी/लाभार्थी कौन हैं। यह भी जाँच की जानी है कि दिल्ली ट्रैफ़िक पुलिस विभाग के गड्ढों में कितने वाहन पड़े थे/पड़े हैं और ज़ब्त किए गए वाहनों को RVSFS को सौंपकर कब-कब निपटाया जाता है।

यह प्रस्तुत किया गया है कि सरकारी विभागों में, यहां तक कि एक कुर्सी का भी निपटान किया जाना है, इस प्रकार के मामलों में उचित प्रक्रिया/दिशानिर्देश जारी किए गए हैं।

डी. आरवीएसएफएस द्वारा गैर-दावा किए गए स्क्रैप वाहनों का भुगतान न करना

खंड 10. (iii) में कहा गया है, ₹जिस वाहन के लिए 15 दिनों की अवधि के भीतर स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया जाता है, तो संबंधित आरवीएसएफ द्वारा स्क्रैप मूल्य को डिमांड ड्राफ्ट / आरटीजीएस / एनईएफटी / आईएमपीएस के माध्यम से प्रवर्तन एजेंसी के सरकारी खाते में जमा किया जाएगा।

यह प्रस्तुत किया गया है कि कई आरवीएसएफ कम्पनियों ने लंबे समय के बाद भी वाहनों के लावारिस स्क्रैप मूल्य जमा नहीं किए हैं, क्योंकि वर्तमान मामले में प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा समय पर कार्रवाई नहीं की गई है।

उदाहरणः 27-03-2025 को परिवहन विभाग, दिल्ली द्वारा एक आरवीएसएफ मेसर्स सेलेक्ट टेक्निकल सर्विसेज़ को 29-03-2023 से 22-08-2024 तक की अवधि के लिए वाहन का अंतिम जीवनकाल भुगतान न करने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। यह समझ से परे है कि उक्त अवधि के लिए भुगतान न करने के बाद भी प्रवर्तन एजेंसियों ने इस कंपनी को काम क्यों सौंपा। 27-03-2025 के कारण बताओ नोटिस की एक प्रति आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-ई के रूप में संलग्न है।

यह बहुत ही अजीब बात है कि उक्त कंपनी ने 11.10.2024 से 30.10.2024 तक की अवधि का भुगतान नहीं किया लेकिन यह कल्पना से परे है कि इस आरवीएसएफ से कोई वसूली क्यों नहीं की गई, जबकि खंड 10.(iii) कहता है कि यदि स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया जाता हैं

लाख टके का सवाल यह उठता है कि प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा इस कंपनी से कोई वसूली क्यों नहीं की गई, जिसके कारण वे ही बेहतर जानते हैं।

ई. यातायात पुलिस जैसी प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा कबाड़ किए गए वाहनों का रिकॉर्ड रखना।

डीसीपी/ट्रैफिक/दक्षिणी रेंज द्वारा जारी दिनांक 10-03-2025 के आदेश के दूसरे अंतिम पैरा में कहा गया है, ₹सभी आरवीएसएफ/स्क्रैपर्स जिन्होंने ट्रैफिक दक्षिणी रेंज में काम किया है या कर रहे हैं, उन्हें उन ज़ब्त वाहनों की सूची जमा करने का निर्देश दिया जाता है जिनके स्क्रैप मूल्य का दावा अभी तक नहीं किया गया है₹। दिनांक 10-03-2025 के आदेश की एक प्रति आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-एफ के रूप में संलग्न है।

अंतिम पैरा में आगे कहा गया है कि "आर.वी.एस.एफ. को उन सभी वाहनों की सूची भी उपलब्ध करानी होगी, जिन्हें सुलह के उद्देश्य से यातायात दक्षिणी रेंज से जब्त किया गया था।"

दिनांक 10-03-2025 के आदेश के उपरोक्त अनुच्छेदों से यह स्पष्ट होता है कि यातायात पुलिस दक्षिणी रेंज जैसी प्रवर्तन एजेंसियों ने स्क्रैप किए गए वाहनों का रिकॉर्ड उन कारणों से तैयार नहीं किया जो उन्हें ही बेहतर पता हैं और अब वे आरवीएसएफ/स्क्रैपर्स से उक्त विवरण और राशि जमा करने की मांग कर रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि यातायात पुलिस दक्षिणी रेंज को यह नहीं पता कि उन्होंने कितने वाहन स्क्रैपिंग के लिए आरएसवीएफ को दिए हैं। यह धोखाधड़ी यातायात पुलिस की मिलीभगत से की गई है क्योंकि चालान पर कोई नंबर नहीं था।

एफ. आर.वी.एस.एफ.एस. द्वारा उल्लंघन लेकिन बाह्य विचारों के लिए पिक एंड चूज सिद्धांत द्वारा कंपनियों पर प्रतिबंध।

दिनांक 25-08-2023 को मेसर्स महिंद्रा एमएसटीएस रीसाइक्लिंग प्राइवेट लिमिटेड को आरवीएसएफ नियम-2021 के उल्लंघन के लिए आदेश 25-08-2023 द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था क्योंकि इस कंपनी ने उक्त नीति के नियमों का उल्लंघन करते हुए वाहन संख्या DL9CL9658 को रद्द कर दिया था। दिनांक 25-08-2023 के आदेश की एक प्रति यहाँ संलग्न है और अनुलग्नक-G के रूप में दर्शाई गई है।⁴4

उसी दिन दिनांक 01-09-2023 को मेसर्स गो ग्रीन ईएलवी हैंडलर्स को एक केस प्रॉपर्टी वाहन संख्या UP32BU2959 को, जो लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली स्थित स्पेशल सेल के पुलिस स्टेशन से नीति का उल्लंघन करके उठाया गया था, कबाड़ में डालने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। उक्त वाहन विस्फोटक अधिनियम और आर्म्स एक्ट के तहत दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की केस प्रॉपर्टी थी। उक्त कंपनी ने उक्त दिशानिर्देशों का उल्लंघन करके उक्त वाहन को दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की हिरासत से भी उठा लिया था।

दिनांक 01-09-2023 के कारण बताओ नोटिस की एक प्रति यहां संलग्न है तथा अनुलग्नक-एच के रूप में दर्शाई गई है।

यह प्रस्तुत किया गया है कि मेसर्स महिंद्रा को एक उल्लंघन के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया था, लेकिन मेसर्स गो ग्रीन को न तो प्रतिबंधित किया गया और न ही राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े गंभीर मामले में भी उक्त कंपनी के विरुद्ध कोई दंडात्मक कार्रवाई की गई। मेसर्स गो ग्रीन अभी भी यातायात पुलिस और एमसीडी जैसी प्रवर्तन एजेंसियों के साथ गैर-कानूनी कारणों से कारोबार कर रही है।

जी. एक कंपनी को ब्लैकलिस्ट किया गया लेकिन दूसरी कंपनी को उसी व्यक्ति या उसके परिवार के सदस्यों द्वारा खोला गया।

1. मेसर्स एसजी जंकयार्ड एंड रिसाइक्लिंग एलएलपी (कार्यालय दिल्ली में, स्क्रैप यार्ड हरियाणा में) कि दिनांक 28-03-2023 की समाचार रिपोर्ट के अनुसार, इस कंपनी (मालिक श्री बनमीत सिंह सेठी) के जंकयार्ड से 90 चोरी के वाहन बरामद किए गए। इस कंपनी को कारण बताओ नोटिस संख्या 21044 दिनांक 14-05-2025 जारी किया गया था। उक्त कारण बताओ नोटिस संख्या 21044 दिनांक 14-05-2025 की एक प्रति यहाँ संलग्न है और अनुलग्नक-I के रूप में दर्शाई गई है।

2. मेसर्स ग्रैंड ग्लोबल जंकयार्ड एंड रीसाइक्लिंग एलएलपी (दिल्ली में स्थित, उत्तर प्रदेश में स्क्रैप यार्ड)। (मालिक श्री बनमीत सिंह सेठी)। इस कंपनी को कारण बताओ नोटिस संख्या 21049 दिनांक 14-05-2025 जारी किया गया था। उक्त कारण बताओ नोटिस संख्या 21049 दिनांक 14-05-2025 की एक प्रति यहाँ संलग्न है और अनुलग्नक-जे के रूप में दर्शाई गई है।

3. मेसर्स ब्लैकमाइनिंग जंकयार्ड एलएलपी (दिल्ली, जंकयार्ड हरियाणा स्थित) (मालिक श्री सविंदर सिंह सेठी, श्री बनमीत सिंह सेठी के पारिवारिक सदस्य)। इस कंपनी को दिल्ली में प्रवर्तन एजेंसी एमसीडी, नज़फगढ़ ज़ोन के साथ सूचीबद्ध किया गया है।

सवाल यह उठता है कि क्रमांक 1 और 2 की कंपनियों के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई?

एच. नीति के समान वितरण खंड का उल्लंघन।

उक्त दिशानिर्देशों के खंड 3(vi) में कहा गया है कि सभी आर.वी.एस.एफ.एस. (पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधा) के बीच स्क्रैपिंग सुविधाओं का समान वितरण/उपयोग होगा।

प्रस्तुत है कि प्रवर्तन एजेंसियों ने उक्त धारा का उल्लंघन करके अपने पसंदीदा आरवीएसएफ को अनावश्यक लाभ के लिए स्क्रैपिंग का काम सौंप दिया। यदि हम 06-12-2024 के आदेश और परिवहन विभाग द्वारा 07-12-2024 से 21-12-2024 के बीच अंतिम ड्राइव के चार्ट को देखें, तो 06-12-2024 के आदेश की एक प्रति और एक विशेष आरवीएसएफ के पक्ष में दर्शाने वाला चार्ट, यहाँ संलग्न है और अनुलग्नक-के (सामूहिक रूप से) के रूप में दिखाया गया है।

चार्ट के अनुसार कुल जब्त वाहन 28049 थे। क्रम संख्या 2, 4, 5,7,11, 13, 15, 16 और 17 पर दर्शाई गई आर.वी.एस.एफ.एस. कंपनियों को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए थे, लेकिन दुर्भाग्य से समान वितरण नीति का उल्लंघन करके इन कंपनियों को लाभ दिया गया और 28049 में से कुल 16,385 वाहन उन्हें दे दिए गए।

एमसीडी और ट्रैफिक पुलिस जैसी अन्य प्रवर्तन एजेंसियों का विवरण आश्चर्यजनक है, क्योंकि समान वितरण खंड का उल्लंघन करके पसंदीदा कंपनियों को अधिक से अधिक काम दिया गया।

1. दिल्ली में जीवन समाप्त हो चुके वाहनों को नष्ट करने के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों की आड़ में ई-रिक्शा को जब्त करना और नष्ट करना।

यह जानकर बहुत आश्चर्य होता है कि दिल्ली में प्रवर्तन एजेंसियों के साथ मिलीभगत करके आरवीएसएफएस ने ई-रिक्शा को भी खत्म कर दिया, जो कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय का आदेश नहीं है, जबकि दिल्ली में एंड लाइफ वाहनों को खत्म करने के निर्देश जारी किए गए थे। इसके अलावा, एंड लाइफ वाहनों के लिए तैयार किए गए 20-02-2024 के दिशानिर्देशों में ई-रिक्शा को खत्म करने के बारे में कोई उल्लेख नहीं है।

प्रस्तुत है कि बिना लाइसेंस या बिना फिटनेस के चलने वाले ई-रिक्शा पर मोटर वाहन अधिनियम 1988 लागू होता है। प्रक्रिया के अनुसार, जब्त वाहन को परिवहन विभाग के पिट में रखा जाता है और ई-रिक्शा मालिक जुर्माना/दंड अदा करके अपना वाहन वापस ले सकता है।

लेकिन दिल्ली सरकार ने ग़रीब लोगों के ई-रिक्शा ज़ब्त कर लिए और उन्हें अनावश्यक कारणों से आरवीएसएफ़एस को स्क्रैपिंग के लिए सौंप दिया, जबकि आरवीएफ़एस को ई-रिक्शा स्क्रैप करने का अधिकार नहीं है। अनुलग्नक-के में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि वाहन जीवन बीमा पॉलिसी की आड़ में कुल 10,919 ई-रिक्शा अवैध रूप से स्क्रैप किए गए। परिवहन विभाग की 19-02-2025 की दैनिक डायरी के अंश, जिनमें मेसर्स गो ग्रीन ईएलवी हैंडलर्स और मेसर्स पीकेएन मोटर्स नामक आरवीएसएफ़एस को ई-रिक्शा सौंपे जाने की बात कही गई है, आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-एल (सामूहिक रूप से) में संलग्न हैं।

जे. आर.वी.एफ.एस. द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गए जाली एवं मनगढ़ंत पहचान पत्र।

यह प्रस्तुत किया गया है कि आरवीएसएफएस (स्क्रैपिंग कंपनियों) ने प्रवर्तन एजेंसियों (विभागों) की मिलीभगत से दिल्ली पुलिस और दिल्ली नगर निगम के लोगो लगाकर अपने कर्मचारियों को जाली और मनगढ़ंत पहचान पत्र जारी किए। जाली और मनगढ़ंत पहचान पत्रों की प्रतियां आपके अवलोकनार्थ अनुलग्नक-एम (सामूहिक रूप से) में संलग्न हैं।

सीबीआई द्वारा आवश्यक जांचः

यह प्रस्तुत किया गया है कि इस मामले में विस्तृत जांच की आवश्यकता है क्योंकि दिल्ली में एंड लाइफ व्हीकल्स की आड़ में एक बड़ा घोटाला हुआ है, जिससे बाहरी कारणों से सरकारी खजाने को नुकसान हुआ है।

1. प्रवर्तन एजेंसियों के साथ-साथ आर.वी.एस.एफ. के रिकार्ड, जिसमें प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा जब्त किए गए और सूचीबद्ध आर.वी.एफ.एस. को सौंपे गए वाहनों की कुल संख्या शामिल है, क्या लावारिस वाहनों के लिए प्रवर्तन एजेंसियों को भुगतान किया गया है।

2. जब्त किए गए वाहनों के विरुद्ध जारी किए गए कुल प्रमाण पत्रों की जांच की जाएगी।

3. दिल्ली यातायात पुलिस द्वारा आर.वी.एस.एफ.एस. को सौंपे गए कुल वाहन बिना निविदा/नीलामी के खड्ड में पड़े हैं, इसकी भी जांच की जानी चाहिए कि क्या उक्त सौंपे गए वाहनों के लिए आर.वी.एस.एफ.एस. द्वारा दिल्ली यातायात पुलिस विभाग को भुगतान किया गया था।

सौरभ भारद्वाज द्वारा जांच एजेंसी के पूछताछ के बाद दिया गया बयान राजनीतिक नौटंकी :वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आज आम आदमी पार्टी के दिल्ली अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री सौरभ भारद्वाज द्वारा की गए प्रेसवार्ता को एक नौटंकी बताया है और कहा कि आम आदमी पार्टी और उसके नेताओं की यह पुरानी नीति है कि जब भी जांच एजेंसियां आम आदमी पार्टी द्वारा किए गए भ्रष्टाचार पर पूछताछ करती है तो वह मीडिया में बने रहने और अखबार में छपने के लिए सिर्फ नौटंकी करते हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि जांच एजेंसी द्वारा पूछताछ के बाद आख़िरकार बेरोजगार सौरभ भारद्वाज को काम मिल ही गया। चुनाव हारने के बाद सौरभ भारद्वाज ख़ुद को बेरोजगार बताते थे लेकिन इनकी छुपी योग्यता का आज पता चला है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से सौरभ भारद्वाज ने प्रेसवार्ता की है ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक अच्छे स्क्रिप्ट राइटर हैं। वह बेकार राजनीति में अपना समय व्यर्थ रहे हैं, बेहतर हो मुम्बई जा कर स्क्रिप्ट लेखक बन जायें।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि आम आदमी और इनके नेता के व्यवहार में है - अराजकता, कुशासन और भ्रष्टाचार। जाँच एजेंसी पूछताछ कर रही है और अगर आपको जाँच एजेंसी पर भरोसा नहीं है तो आप क़ानून की मदद ले सकते हैं न्यायालय का दरवाजा खुला हुआ है लेकिन आम आदमी पार्टी के नेताओं को नौटंकी और ड्रामा के साथ मीडिया ट्रायल करने का शौक है।

सचदेवा ने कहा कि मुझे लगता है अस्पताल निर्माण घोटाला सहित कई गंभीर आरोप आम आदमी पार्टी के नेताओं पर लगे हैं और उन्हीं आरोपों से ध्यान भटकाने के लिए सौरभ भारद्वाज यह सब नाटक कर रहे हैं जांच एजेंसी अपना काम कर रही है। एक बार और भी सबूत मिल जाए फिर उसके बाद और भी चीजे देखने की मिलेगी।

"आप" नेता तो भविष्यवक्ता हैं और आज उसी लिस्ट में सौरभ भारद्वाज भी शामिल हो गए हैं। क्योंकि आज प्रेसवार्ता में उनकी कही गई बातें उनके नेताओं के बयानों से मिली-जुले बयान है जो उनके नेता भी जांच एजेंसी की पूछताछ के दौरान बोला करते थे लेकिन वे जेल गए यह पूरी दिल्ली देख चुकी है।

यह फिल्म बहनचारे, हिम्मत और पंजाबी संस्कृति की शान को समर्पित है।

मुख्य संवाददाता

महाराष्ट्र में दर्शकों की जबरदस्त सराहना और बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार सफलता पाने वाली फिल्म "बाईपण भारी देवा" के बाद, निर्माता माधुरी भोसलें (Emveebee Media) अब पंजाबी सिनेमा में अपनी बहुप्रतीक्षित नई पेशकश "बड़ा करारा पुदना" लेकर आ रही हैं। इस फिल्म का निर्देशन परवीन कुमार ने किया है, जबकि गुरमीत सिंह का दिल को छू लेने वाला संगीत इसकी जान बनेगा। यह फिल्म नारीत्व, पारिवारिक रिश्तों और पंजाब की रंगीन रूह को समर्पित एक संवेदनशील सिनेमाई सफ़र होगी। "बड़ा करारा पुदना" छह बहनों की मार्मिक कहानी है, जो शादी, निजी संघर्ष और अनसुलझे मतभेदों के कारण वर्षों से बिछड़ गई हैं। किस्मत उन्हें अचानक एक गिद्दा प्रतियोगिता के दौरान फिर से मिलाती है, जो उनके रिश्तों को जोड़ने का अहम मोड़ बन जाती है। फिल्म में उपासना सिंह, कुलराज रंधावा, शीबा, राज धालीवाल, मननत सिंह और कमलजीत नीरू जैसे प्रतिभाशाली कलाकार शामिल हैं, जो हंसी, भावनाओं और पंजाबी संस्कृति से भरपूर इस कहानी को जीवन्त कर देंगे। दिल को छू लेने वाले गीतों, रंग-बिरंगे लोक-नृत्यों और पारिवारिक एकता के सार्वभौमिक संदेश के साथ, "बड़ा करारा पुदना" सिर्फ़ पंजाबी दर्शकों ही नहीं बल्कि दुनियाभर के उन लोगों के दिलों को भी छुएगी, जो अपने व्यस्त जीवन के कारण अपने अपनों से दूर हो जाते हैं। परवीन कुमार एक पंजाबी फ़िल्म निर्देशक और लेखक हैं, जो पारिवारिक मनोरंजन और कॉमेडी-ड्रामा फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी पहचान फ़िल्म दारा (२०१६) से बनाई और "नी मैं सास कूटनी" (२०२२) जैसी सुपरहिट कॉमेडी के ज़रिए खुद को और मज़बूत किया। प्रेरणादायक संदेश, पंजाबी संस्कृति की रौनक और दमदार अभिनय से सजी यह फिल्म २६ सितंबर, २०२५ को रिलीज हुई है। यह पंजाबी सिनेमा में निर्माता माधुरी भोसलें की दूरदर्शी सोच के तहत एक नया सुनहरा अध्याय साबित होगी।

अमेरिकी टैरिफ से भारतीय लौह एवं इस्पात उद्योग पर अभूतपूर्व संकट: ट्रक परिवहन क्षेत्र में माल ढुलाई में 20-30% गिरावट की आशंका, लाखों रोजगार खतरे में

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। उफ्ततसा ₹राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी), जो देशभर के ट्रक चालकों, मालिकों, परिवहन व्यवसाईयों और संबंधित हितधारकों का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रमुख संगठन है, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारतीय आयात पर लगाए गए 50% के दोहरे टैरिफ के खिलाफ तीव्र विरोध दर्ज कराता है। यह टैरिफ, जो आज से प्रभावी हो गया है, भारतीय लौह एवं इस्पात उद्योग को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है, जिसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष असर ट्रक परिवहन क्षेत्र पर पड़ रहा है। विशेष रूप से उड़ीसा छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में निश्चित रूप से अपना प्रभाव छोड़ेगा1 हम भारत सरकार से तत्काल कूटनीतिक हस्तक्षेप, घरेलू उद्योगों के लिए राहत पैकेज और प्रतिशोधी उपायों की मांग करते हैं ताकि इस वैश्विक व्यापार युद्ध से उत्पन्न चुनौतियों का डटकर सामना किया जा सके और लाखों संलग्न व्यापारियों के हितों की लड़ाई लड़ी जा सके एंव श्रमिकों के रोजगार की रक्षा हो।

अमेरिकी प्रशासन ने भारतीय सामानों पर 50% का संचयी टैरिफ लागू किया है, जिसमें 25% का पूर्व टैरिफ और रूसी तेल खरीद के कारण 25% का अतिरिक्त दंडात्मक टैरिफ शामिल है जो अप्रत्याशित है।

यह कदम भारतीय निर्यात क्षेत्र को भारी नुकसान पहुंचा रहा है, जहां अमेरिका के लिए भारतीय लौह, इस्पात और एल्यूमीनियम उत्पादों का निर्यात वित्त वर्ष 2025 में लगभग 4.56 अरब डॉलर का रहा है। इस टैरिफ के कारण भारतीय निर्यात में 20-30% की गिरावट की आशंका है, जिससे अर्थव्यवस्था की विकास दर 7% से घटकर 6% के करीब रह सकती है। इसके अलावा, अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता समाप्त हो रही है, क्योंकि अमेरिकी इस्पात कीमतें पहले से ही 984 डॉलर प्रति टन से ऊपर हैं और नए टैरिफ से ये 1,180 डॉलर तक पहुंच सकती हैं।

इस टैरिफ का प्रभाव भारतीय लौह उद्योग पर बहुआयामी है। छोटी और मध्यम फाउंड्रीज में सामूहिक छंटनी और बंदी की स्थिति उत्पन्न हो रही है, क्योंकि अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पादों की कीमतें अब प्रतिस्पर्धी नहीं रह गई हैं1 अप्रैल 2025 में भारत ने घरेलू उत्पादकों की रक्षा के लिए 12% का अस्थायी सुरक्षात्मक शुल्क लगाया था, लेकिन फिर भी आयात में वृद्धि देखी जा रही है।

अप्रत्यक्ष प्रभाव के रूप में, अन्य देशों से भारत में सस्ते इस्पात का आयात बढ़ रहा है, जो घरेलू उत्पादकों को दबाव में डाल रहा है और उत्पादन में कमी ला रहा है। BCG के अनुमान के अनुसार, ये नए टैरिफ 50 अरब डॉलर की अतिरिक्त लागत जोड़ेंगे, जो मार्च 2025 में लगाए गए 25% टैरिफ के प्रभाव को दोगुना कर देंगे। इसके अलावा, फरवरी 2025 में घोषित 25% टैरिफ ने पहले से ही भारतीय निर्यात को प्रभावित किया था, और अब 50% का स्तर इसे ₹नाखून की तरह कफन में₹ बदल देगा1

ट्रक /ट्रेलर परिवहन क्षेत्र के लिए यह स्थिति विशेष रूप से विनाशकारी है। भारतीय लौह एवं

इस्पात उद्योग का बड़ा हिस्सा – कच्चे माल की ढुलाई से लेकर तैयार उत्पादों के निर्यात तक – ट्रकों / ट्रेलरों पर निर्भर है। निर्यात में गिरावट और घरेलू उत्पादन में कमी से ट्रक माल ढुलाई में 15-25% की कमी आ सकती है, जिससे लाखों चालकों, मालिकों और श्रमिकों के रोजगार पर खतरा मंडरा रहा है। छोटे ट्रक मालिकों और एमएसएमई स्तर के परिवहनकर्ताओं पर इसका सबसे अधिक असर पड़ेगा, क्योंकि फाउंड्रीज और इस्पात मिलों में उत्पादन घटने से माल परिवहन के ऑर्डर कम हो रहे हैं। ऑटो पार्ट्स, ज्वेलरी और टेक्सटाइल्स जैसे संबंधित क्षेत्रों पर भी प्रभाव पड़ेगा, जो ट्रांसपोर्ट सेक्टर को और दबाव में डालेंगे। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में बदलाव से भारतीय ट्रकिंग सेक्टर की लागत बढ़ रही है, क्योंकि अमेरिकी ट्रक निर्माताओं को भी 50% टैरिफ का सामना करना पड़ रहा है, जो अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय निर्यात को प्रभावित करेगा।

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने कहा, ₹अमेरिकी टैरिफ न केवल लौह उद्योग को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि इससे जुड़े परिवहन क्षेत्र को भी गहरे संकट में डाल रहा है। राष्ट्रीय मुद्दों पर हम किसी भी तरह का समझौता नहीं कर सकते ना ही राष्ट्र को कहीं झुकने देने का काम करेंगे, हम एकजुट हैं राष्ट्र के सम्मान के प्रति, राष्ट्र के सम्मान व स्वाभिमान में कोई समझौता नहीं होगा किंतु व्यापारीक गतिविधियों में यदि किसी तरह का प्रावधान निकल सके या सम्मान की रक्षा करते हुए यदि कोई समझौता हो सके तो इसे करना वर्तमान परिस्थिति में राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए हम सरकार से मांग करते हैं कि द्विपक्षीय वार्ता के माध्यम से टैरिफ में छूट प्राप्त की जाए, घरेलू इस्पात उत्पादकों को सब्सिडी और वित्तीय सहायता दी जाए, तथा परिवहन क्षेत्र के लिए विशेष राहत पैकेज घोषित किया जाए जिसमें ईंधन सब्सिडी, ऋण राहत और रोजगार संरक्षण शामिल हों। यदि आवश्यक हो, तो अमेरिकी उत्पादों पर प्रतिशोधी टैरिफ लगाकर भारतीय हितों की रक्षा की जाए।"

हम सभी हितधारकों – उद्योग संघों, श्रमिक संगठनों और नीति निर्माताओं – से अपील करते हैं कि इस मुद्दे पर एकजुट हों और सरकार को मजबूत नीतियां अपनाने के लिए प्रेरित करें। यह संकट न केवल आर्थिक है, बल्कि सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए लाखों परिवारों की आजीविका से जुड़ा है।

लव कुश रामलीला कमेटी का प्रतिनिधि मंडल प्रवीण खंडेलवाल सांसद के नेतृत्व में दिल्ली के पुलिस आयुक्त सतीश गोलचा से मिला

मुख्य संवाददाता

सुभाष गोयल, महामंत्री, लव कुश रामलीला कमेटी ने बताया कि पुलिस कमिश्नर सतीश गोलचा को लीला अवलोकन हेतु निमंत्रण पत्र दिया, उन्होंने स्वीकार किया इस अवसर पर उनका स्वागत किया गया। लव कुश रामलीला कमेटी के महामंत्री सुभाष गोयल ने बताया कि रामलीला मंचन समारोह 22 सितंबर से 3 अक्टूबर तक मनाया जाएगा, दशहरा पर 2 अक्टूबर को पूरे देश में संपन्न होगा। प्रभु श्री राम की रामलीला पूरे उत्साह से भव्य होगी। रामलीला केवल श्रद्धा का विषय नहीं, बल्कि यह एक ऐसी सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर है जो मर्यादा, भाईचारा, प्रेम, सौहार्द और एकता के देती हैं, रामलीला के मंचन से लोग प्रभु राम के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेते हैं और अपने बच्चों को भी उत्तम संस्कार प्रदान करते हैं। प्रभु राम के आदर्शों का प्रचार-प्रसार और अधिक से अधिक किया जाएगा, जिससे समाज में प्रेम, भाईचारे और सौहार्द का वातावरण मजबूत होगा।

ओल्ड फॉरेस्ट्स आयुर्वेद प्राइवेट लिमिटेड – सफेद दाग़ और सोरायसिस के लिए अनोखे आयुर्वेदिक समाधान

मुख्य संवाददाता

भारत के भरोसेमंद और तेजी से आगे बढ़ते आयुर्वेदिक स्वास्थ्य सेवा ब्रांडों में से एक, ओल्ड फॉरेस्ट्स आयुर्वेद प्राइवेट लिमिटेड, ने रोगियों की समस्याओं को हल करने का एक अनूठा तरीका अपनाया है। कंपनी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) तकनीक को अपनी सहायक सेवा (हेल्पडेस्क) में शामिल किया है, जिससे रोगियों की समस्याएँ बहुत ही तेज़ और सटीक ढंग से हल की जाती हैं। साथ ही कंपनी गारंटी पत्र आधारित उपचार भी उपलब्ध कराती है – यदि तीन महीने में कोई सुधार न दिखे तो उपचार निःशुल्क जारी रहता है। इस पहल का नेतृत्व कर रहे हैं डॉ. के.के. मित्तल, जो भारत के सबसे युवा आयुर्वेदिक उद्यमियों में से एक हैं। ओल्ड फॉरेस्ट्स आयुर्वेद प्राइवेट लिमिटेड ने पूरे भारत में अपना विस्तार किया है – जहाँ-जहाँ रोगी हैं, वहाँ-वहाँ सफेद दाग़ और सोरायसिस के लिए अनोखे आयुर्वेदिक उपचार पहुँचा रहा है।

कंपनी ने घोषणा की है कि पंजाब के लुधियाना में 1 सितम्बर २०२५ से अपनी नई शाखा का शुभारंभ किया जाएगा। ओल्ड फॉरेस्ट्स अब तक आयुर्वेदिक औषधियों के विशेष उपचार से हज़ारों रोगियों को राहत पहुँचा चुका है, विशेषकर सफेद दाग़ और सोरायसिस जैसी पुरानी और चुनौतीपूर्ण बीमारियों में।

प्रबंध निदेशक का दृष्टिकोण

कंपनी के प्रबंध निदेशक डॉ. के.के. मित्तल ने कहा:

"हमारा उद्देश्य केवल रोग का उपचार करना नहीं है, बल्कि रोगी का आत्मविश्वास लौटाना है। ओल्ड फॉरेस्ट्स आयुर्वेद, आयुर्वेद की परंपरा

को आधुनिक अनुसंधान और तकनीक के साथ जोड़कर स्वास्थ्य का एक नया मानक स्थापित कर रहा है।" ओल्ड फॉरेस्ट्स आयुर्वेद पूरे भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा को एक नए स्तर पर बढ़ावा दे रहा है और लोगों तक प्राकृतिक उपचार की वास्तविक शक्ति पहुँचा रहा है।

प्रमुख विशेषताएँ और उपलब्धियाँ

हज़ारों रोगियों को राहत – सफेद दाग़ और सोरायसिस में सिद्ध परिणाम।

गारंटी पत्र आधारित उपचार – तीन महीने में लाभ न दिखे तो उपचार निःशुल्क जारी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) सक्षम सहायक सेवा – तेज़ और सटीक समाधान। ल्यूगो उपचार-पैक (सफेद दाग़) और सोरायसट उपचार-पैक (सोरायसिस) – सबसे विश्वसनीय आयुर्वेदिक उपचार।

सभी औषधियाँ शुद्ध शाकाहारी आयुर्वेदिक विधियों से निर्मित। औषधियों का निर्माण ओल्ड फॉरेस्ट्स आयुर्वेद स्वयं करता है, जिससे उच्च गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है।

पर्युषण: धार्मिक साधना से सामाजिक समरसता तक

पर्युषण पर्व आत्मा की पुकार, संयम की साधना और अहिंसा की ज्योति प्रज्वलित करने वाला पवित्र अवसर है। यह दिगंबर जैन परंपरा का वह महान उत्सव है, जो मन, वचन और कर्म की शुद्धि का संकल्प जगाता है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन को नई दिशा, करुणा और सत्य के मार्ग पर ले जाने वाला प्रेरणा स्रोत है। 28 अगस्त से 6 सितंबर तक चलने वाला यह दस दिवसीय पर्व आत्मचिंतन का एक ऐसा दर्पण है, जो हमें हमारे कर्मों का हिसाब करने और जीवन को संयम की राह पर ढालने का अवसर प्रदान करता है। यह वह पवित्र क्षण है, जब हम अपनी कमियों को न केवल देखते हैं, बल्कि उन्हें सुधारकर एक आदर्श और सार्थक जीवन की ओर कदम बढ़ाते हैं।

पर्युषण का हृदय है आत्मशुद्धि। दिगंबर जैन परंपरा में इसे दशलक्षण पर्व के रूप में जाना जाता है, जो दस पवित्र धर्मों—उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य—के पालन का मार्ग प्रशस्त करता है। ये दस धर्म जीवन को सकारात्मकता और संतुलन की ओर ले जाते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तम क्षमा हमें क्रोध और वैर को छोड़कर दूसरों के प्रति करुणा अपनाने की प्रेरणा देती है, जबकि उत्तम संयम इंद्रियों पर नियंत्रण और आत्मानुशासन का पाठ पढ़ाता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति बाहरी चमक-दमक में नहीं, बल्कि आत्मा की निर्मलता और संयम की दृढ़ता में निहित है।

जैन दर्शन में कर्म सिद्धांत का विशेष महत्व है। प्रत्येक कर्म आत्मा पर एक आवरण डालता है, और पर्युषण वह पवित्र समय है, जब अनुयायी अपने कर्मों का लेखा-जोखा करते हैं और इस आवरण को हटाने का संकल्प लेते हैं। यह पर्व न केवल आत्मिक जागृति का अवसर है, बल्कि एक ऐसा मंच है, जो हमें सत्य, अहिंसा और करुणा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। पर्युषण हमें यह स्मरण कराता है कि जीवन का असली उद्देश्य आत्मा को बंधनों से मुक्त करना और एक बेहतर, संयमित और करुणामय इंसान बनना है।

पर्युषण पर्व का सार है तप, संयम और आत्मशुद्धि। दिगंबर जैन परंपरा में यह पर्व अनुयायियों के लिए एक पवित्र साधना का अवसर है, जहाँ वे कठोर उपवास और तपस्याओं के माध्यम से शरीर, मन और आत्मा को संयमित करते हैं। कुछ अनुयायी पूर्ण उपवास करते हैं, कई दिनों तक केवल जल ग्रहण कर आत्मिक शक्ति का परिचय देते हैं, तो कुछ एकासना जैसे आंशिक उपवास अपनाते हैं। ये तपस्याएँ केवल शारीरिक अनुशासन नहीं, बल्कि इच्छाओं पर विजय और सांसारिक मोह से मुक्ति का मार्ग हैं। उपवास के माध्यम से व्यक्ति अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करता है और आत्मिक शांति की ओर बढ़ता है, यह सिखाते हुए कि सच्चा सुख बाहरी वैभव में नहीं, बल्कि आत्मा की निर्मलता और शुद्धता में निहित है। इस दौरान ध्यान, स्वाध्याय और जिनवाणी के पाठ का विशेष महत्व है। अनुयायी तत्वार्थ सूत्र जैसे ग्रंथों का अध्ययन करते हैं, जो जैन दर्शन के गहन सिद्धांतों को हृदय तक पहुँचाते हैं, और आत्मा को सत्य व करुणा के प्रकाश से आलोकित करते हैं।

पर्युषण का सबसे हृदयस्पर्शी और प्रेरणादायी पहलू है क्षमापना। पर्व के समापन पर, लोग "उत्तम क्षमा" कहकर एक-दूसरे से क्षमा माँगते हैं, जो जैन धर्म की अहिंसा और करुणा की भावना का जीवंत प्रतीक है। यह क्षण मन में छिपे क्रोध, ईर्ष्या या वैर को त्यागकर प्रेम और शांति के मार्ग को अपनाने का अवसर है। क्षमापना केवल शब्दों की औपचारिकता नहीं, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जो दूसरों की भूलों को माफ करने और अपनी गलतियों के लिए प्रायश्चित करने की प्रेरणा देती है। यह प्रथा न केवल व्यक्तिगत संबंधों को गहराई और मजबूती प्रदान करती है, बल्कि सामाजिक एकता और समरसता को भी पोषित करती है। दिगंबर जैन परंपरा में क्षमापना का यह अनुष्ठान आत्मशुद्धि के साथ-साथ सामूहिक सौहार्द का प्रतीक बनकर उभरता है, जो हमें सिखाता है कि सच्ची शांति और आनंद दूसरों के साथ प्रेम और क्षमा के बंधन में ही निहित हैं।

पर्युषण पर्व धार्मिक अनुष्ठानों का एक ऐसा पवित्र मंच है, जो आत्मा को सत्य और संयम के पथ पर ले जाता है। दिगंबर जैन परंपरा में अनुयायी इस दौरान जिनालयों में जाकर तीर्थंकरों की पूजा-अर्चना करते हैं, जिनवाणी का श्रवण करते हैं और साधु-साध्वियों के प्रेरक प्रवचनों से जीवन की सही दिशा पाते हैं। ये प्रवचन न केवल अहिंसा, सत्य और संयम जैसे मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। साधु-साध्वियों के मार्गदर्शन में धर्म का पालन अनुयायियों को आत्मिक शुद्धि और नैतिक बल प्रदान करता है। सामूहिक पूजा, धार्मिक सभाएँ और भक्ति से भरे अनुष्ठान सामुदायिक एकता को दृढ़ करते हैं, जिससे यह पर्व व्यक्तिगत साधना के साथ-साथ सामूहिक निष्ठा और भक्ति का प्रतीक बन जाता है।

पर्युषण का एक और गहन आयाम है इसका पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण। जैन धर्म में अहिंसा केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं, बल्कि यह सभी जीवों और प्रकृति के प्रति करुणा का संदेश देता है। इस पर्व के दौरान अनुयायी हिंसक गतिविधियों से पूर्णतः विरत रहते हैं, जिससे जीवन में शुद्धता और संवेदनशीलता का संचार होता है। कई अनुयायी पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय कदम उठाते हैं, जैसे वृक्षारोपण, जल संरक्षण और स्वच्छता अभियान। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि हमारा जीवन प्रकृति और सभी जीवों के साथ सामंजस्य में होना चाहिए। यह वह अवसर है, जब छोटे-छोटे बदलावों के माध्यम से हम पर्यावरण और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाने का संकल्प ले सकते हैं, और एक संतुलित, करुणामय जीवन की ओर बढ़ सकते हैं।

दान और परोपकार पर्युषण का एक और अनमोल रत्न हैं। इस दौरान अनुयायी अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन, भोजन, वस्त्र या ज्ञान का दान करते हैं, जो न केवल जरूरतमंदों की सहायता करता है, बल्कि दानकर्ता के मन में त्याग और वैराग्य की भावना को जागृत करता है। दिगंबर जैन परंपरा में दान को सादगी और निस्वार्थ भाव के साथ करने पर बल दिया जाता है, ताकि यह कर्म बंधन का कारण न बने। यह प्रथा आत्मा की शुद्धि का एक शक्तिशाली साधन है, जो हमें सिखाती है कि सच्चा सुख दूसरों की सेवा और उदारता में ही निहित है। पर्युषण इस प्रकार एक ऐसा पर्व है, जो हमें न केवल आत्मिक उत्थान की ओर ले जाता है, बल्कि समाज और प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी को भी प्रज्वलित करता है।

पर्युषण पर्व का प्रभाव केवल धार्मिक अनुयायियों तक सीमित नहीं, बल्कि यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन का एक शक्तिशाली स्रोत है। यह पवित्र समय हमें अपनी जीवनशैली पर गहन चिंतन करने, कर्मों को शुद्ध करने और आत्मा को प्रबुद्ध करने का अनमोल अवसर प्रदान करता है। यह पर्व हमें यह गहन सत्य सिखाता है कि वास्तविक सुख भौतिक वैभव में नहीं, बल्कि आत्मिक शांति, नैतिकता और करुणा में निहित है। दिगंबर जैन परंपरा में पर्युषण आत्मा को जागृत करने और जीवन को एक नई, अर्थपूर्ण दिशा देने का पवित्र उत्सव है। यह वह क्षण है, जब हम अपनी कमियों को न केवल स्वीकार करते हैं, बल्कि उन्हें सुधारने का दृढ़ संकल्प लेते हैं, और एक संयमित, करुणामय और आदर्श जीवन की ओर कदम बढ़ाते हैं।

यह पर्व धार्मिक अनुष्ठानों से कहीं बढ़कर है; यह सामाजिक और पर्यावरणीय जागरूकता का भी प्रतीक है। यह हमें सत्य, अहिंसा और संयम के अमर मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देते हैं, बल्कि समाज में समरसता और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को भी पोषित करते हैं। पर्युषण एक ऐसी प्रेरणादायी यात्रा है, जो हमें आत्मिक शुद्धि, सामाजिक एकता और पर्यावरणीय संतुलन के मार्ग पर ले जाती है, जिससे हम एक बेहतर, अधिक मानवीय और संवेदनशील विश्व के निर्माण में योगदान दे सकें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

समस्याएं अनेक, हल एक

अशोक गुप्त

हमारे देश में बहुत ही समस्याएं हैं जिनकी संख्या और आकार बढ़ता ही जा रहा है.

अधिकतर बढ़ती समस्याओं का कारण हमारी बढ़ती जनसंख्या और गरीबी है. गरीबी और कार्य के साधन सीमित होने के कारण गाँवों से महानगरों की ओर पलायन जारी है जिसके कारण शहरों में बिजली और पानी की कमी और बढ़ते प्रदूषण के साथ सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जे और बढ़ती झुग्गियों की समस्याएं हो रही है. एक अनुमान के अनुसार दिल्ली में 1000 से अधिक झुग्गी कालोनियां हैं जिनमें कई लाख लोग अमानवीय परिस्थितियों में रहते हैं. ये कालोनियां कहीं-कहीं तो नालों के किनारे या नालों के अंदर भी बसी हुई है. कई स्थानों पर तो नालों को पाट दिया गया है जिससे बरसाती पानी का भाव रुक जाता है और बारिश होने पर बाढ़ की समस्या पैदा हो जाती है और पानी का निकास नहीं हो पाता .

इन समस्याओं को देखते हुए दिल्ली सरकार ने बहुत सी सरकारी जमीनों से अवैध कब्जे वाली झुग्गियां हटाई हैं पर इससे ये समस्याएं हल होने वाली नहीं हैं. ये समस्याएं तभी हल हो सकती हैं यदि ये लोग दिल्ली या ऐसे महानगरों में न रहकर अपने मूल स्थान पर रहें. पलायन रोकने हेतु जनसंख्या वृद्धि पर रोक बहुत आवश्यक है क्योंकि परिवार में बच्चों की अधिक संख्या गरीबी बढ़ाती है पर यह गरीब लोग यह समझ नहीं पाते और उनके प्राय तीन-चार बच्चे होते हैं.

इसके लिए आवश्यक है कि सरकारी योजनाओं जैसे फ्री राशन आदि का लाभ उन्हीं गरीबों को मिले जिनका एक ही बच्चा हो और जो अपने मूल स्थान पर रहते हों. दूसरा बच्चा होते ही यह सुविधा वापस ले ली जानी चाहिए.

यदि हम अपने आसपास देखें तो पाएंगे कि हमारे संपर्क में आने वाले अधिकतर निम्नवर्गीय लोगों के प्राय तीन-चार बच्चे होते हैं. यह वर्ग परिवार नियोजन हेतु गंभीर नहीं होता जबकि अधिकतर पढ़े लिखे मध्यवर्गीय परिवारों में एक से अधिक बच्चा नहीं होता क्योंकि एक बच्चे को ही अच्छे स्कूल में पढ़ाना बहुत महंगा हो चुका है. ऐसे परिवार मजबूरी में सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जा कर अमानवीय परिस्थितियों में रहते हैं पर कम

बच्चे पैदा कर अपना जीवन स्तर ऊपर उठाने को तैयार नहीं हैं. केवल लालच ही इन्हें के लिए प्रेरित कर सकता है

इन्हें परिवार नियोजन हेतु प्रेरित करने के लिए सरकार यह नियम बना सकती है कि फ्री राशन जैसी सुविधा केवल उन्हीं गरीब परिवारों को मिले जिन परिवारों में केवल एक बच्चा हो. सरकार उन्हें प्रोत्साहन राशि के रूप में ₹1000 प्रति मास से ₹12000 प्रति वर्ष की राशि दे सकती है यदि यह अपने मूल स्थान पर रहते हैं. दूसरा बच्चा पैदा होने पर उनकी यह सुविधा छीन ली जानी चाहिए. इसके अतिरिक्त फ्री राशन जैसी सुविधा भी केवल उन्हें परिवारों को दी जानी चाहिए जो अपने मूल स्थान पर रहते हैं और जिनका एक ही बच्चा हो .

यदि यह योजना ठीक से लागू हो पाए तो अगले कुछ वर्षों में जहां गांव से महानगरों में पलायन की समस्या पर लगाम लगेगी, वहीं गरीब जनता के जीवन स्तर में सुधार होगा, उनके बच्चे अच्छा पोषण और अच्छी शिक्षा पा सकेंगे और देश के संसाधनों पर दबाव कम होगा. इसके अतिरिक्त दिल्ली जैसे महानगरों की तेजी से बढ़ती जनसंख्या पर भी लगाम लगेगी और बिजली पानी की समस्याओं व अवैध कब्जे की समस्याओं से धीरे-धीरे मुक्ति मिल पाएगी . इसके अतिरिक्त अवैध कब्ज़ों पर सरकार को नो टॉलरेंस नीति अपनानी चाहिए। हटाई गई झुग्गियों के स्थान पर पुनः झुग्गियां बनने या नई झुग्गी बनने पर पुलिस अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए ताकि अवैध बसने वालों को प्रोत्साहन न मिले.

अग्र पिता के रूप में सम्मानित हुए डॉ.गिरीश सी. गुप्ता

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

आगरा। लोहामंडी स्थित महाराजा अग्रसेन भवन के भव्य सभागार में जनपद के अग्रवाल परिवारों की प्रतिनिधि संस्था, अग्रवाल महासभा का सम्मेलन अत्यन्त धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।जिसके अंतर्गत अंतराष्ट्रीय वृद्धजन सम्मान समिति ₹रिस्पेक्ट एजर₹ के सह संस्थापक डॉ. गिरीश सी.गुप्ता को अग्र पिता के रूप में सम्मानित किया गया।उन्हें यह सम्मान संस्था के अध्यक्ष कांता प्रसाद अग्रवाल द्वारा प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके दिया।साथ ही श्रीमती वीना जैन (वास्तु विद) द्वारा डॉ. गिरीश सी.गुप्ता की धर्मपत्नी श्रीमती बीना गुप्ता का भी अभिनन्दन किया गया।

महासभा के संस्थापक संरक्षक सुरेश अग्रवाल ने डॉ. गिरीश गुप्ता की अविस्मरणीय सेवाओं का वर्णन करते हुए उनका परिचय दिया। कार्यक्रम में महासभा के महामंत्री विष्णु बिहारी गोयल, कोषाध्यक्ष राम रतन मित्तल, मुख्य अतिथि सुरेश चन्द गर्ग (तपन ग्रुप), नीतेश अग्रवाल, डॉ. वी.डी. अग्रवाल, संयोजक सत्येन्द्र अग्रवाल आदि के अलावा महासभा की 70 इकाईयों के लगभग 2 हजार अग्रबंधुओं ने सपरिवार उपस्थित होकर सम्मेलन को सफल बनाया। प्रमुख समाजसेवी व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने डॉ. गिरीश सी. गुप्ता के सम्मानित होने पर हर्ष व्यक्त किया है।साथ ही उन्होंने कहा कि वे अपनी संस्था के द्वारा आगरा के अलावा वृन्दावन में भी युद्ध स्तर पर अनेकानेक सेवा कार्य कर रहे हैं।जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वो कम है।

अफ़साना, विरासत का ज़ख़्म

पुराने आँगन में खड़े नीम के पेड़ के साये तले वह बच्चा अक्सर खेलता रहता था जिसे उसकी माँ ने मजबूरी में नाना-नानी के घर इसलिए छोड़ दिया कि उ की भी एक संतान उस बच्चे की मां थी । माँ-बाप की टूटी-फूटी जिंदगी में उसे अपनी गोद में रखना कठिन तो बिल्कुल नहीं था, मगर नाना नानी की ख्वाहिश थी कि वो उनके पास रहे उनका भी अपनी बेटी के सिवा कोई था ही नहीं, बेटी ने सो सोचा कि मायके की छाँव में इस मासूम को सुकून और सहारा मिलेगा। नाना-नानी ने भी उसे अपनी आँखों का नूर और बुढ़ापे का सहारा बनाया। लाड़-प्यार इतना बरसाया कि कोई तमन्ना अधूरी न रहती, कोई ग़लती पकड़ में न आती। जहाँ तरबियत और परवरिश की ज़रूरत थी, वहाँ सिर्फ़ मोहब्बत का अतिरेक मिलता गया। साल दर साल वह लाड़ला जवान होता गया और उसकी आँखों में कृतज्ञता की जगह अकड़ घर करने लगी। अब उसे माँ को माँ और बाप को बाप मानने में शर्म आने लगी। नाना-नानी भी उसके लिए मानो कमज़ोर पनाहगाह बन गए। फिर वह दिन आया जब जायदाद के कागज़ात उसके नाम हो गए। उसी ज़मीन और मकान को, जो नाना-नानी की सारी मेहनत और मोहब्बत से जुड़ा था, उसने अपना ऐलान कर दिया—₹अब यह सब मेरा है।₹ और यह बेहयाई नाना-नानी के लिए जहर साबित हुई। मोहब्बत का बोझ ही मोहब्बत का कातिल बन गया। उन्होंने दो ही दिन में इस दुनिया से रुख़सती ले ली। आँगन की रौनकें मुरझा गईं, मुहब्बतकी डालियाँ चुपचाप कराहने लगीं। पीछे फातिमा और इक़बाल अकेले रह गए। उनके दिल पर पछतावे का पहाड़ टूट पड़ा। हर रोज़ उनकी आँखें यही सवाल करतीं कि क्या सबसे बड़ी भूल यह न थी कि अपने दिल का टुकड़ा दूसरों के हवाले कर दिया? क्या सुखी रोटी और फटे कपड़े पहनकर भी वे औलाद को अपने पास पाल लेते तो यह दिन न देखना पड़ता? फातिमा रोते-रोते हर किसी से यही कहती—₹औलाद को अपने से जुदा मत करो। चाहे आधा पेट भरकर गुज़ारा कर लो, मगर अपने जिगर के टुकड़े को दूर मत करना। वरना न नींद बचेगी न सुकून।₹ गाँव भर ने इस हादसे से सबक़ लिया और हर जुबान से यही पैग़ाम निकला कि ज़ायदाद का मालिक बनकर इंसान क़ाबिल नहीं होता, औलाद की सही तरबियत ही सबसे बड़ी विरासत है। असली मकान ईंटों से नहीं, रिश्तों और मोहब्बत से बनता है।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

रामचरितमानस में श्रीराम दर्शन : डॉ. नीरज भारद्वाज

भगवान श्रीराम के दर्शनों के लिए यह मानव रूपी जीव लालायित रहा है।

भगवान का धरा धाम पर आना भी एक पूर्ण योजना के आधार पर ही होता है। गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि, जब-जब होई धर्म कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।। तब तब धरि प्रभु विविध शरीरा, हरहि दयानिधि सज्जन पीरा।। भगवान श्रीमद्भगवतगीता के अध्याय चार के श्लोक सात में कहते हैं कि यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। अर्थात जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ता है तो भगवान अधर्मियों का नाश करने के लिए आते हैं। इसके साथ ही जन्म-जन्म से भक्ति में लगे हुए भक्तों का उद्धार करने और उन्हें दर्शन देने के लिए भगवान इस धरा धाम पर आते हैं। गोस्वामी जी लिखते हैं कि राम जन्म के हेतु अनेका परम विचित्र एक से एका अर्थात भगवान के धरा धाम पर आने के कितने ही कारण हैं।

भक्तों की दृष्टि से समझे तो भगवान भूलोक पर अपने भक्तों को दर्शन देने के लिए, उन्हें आवागमन के चक्कर से मुक्त करने के लिए आते हैं। मीरा कहती हैं, अँखियां हरी दर्शन की भूखी। भक्त भगवान के दर्शन के लिए कितने ही भाव और शब्दों का प्रयोग करते हैं। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास भगवान श्रीराम के ब्रह्म होने और उनके दर्शन की बात अलग-अलग स्थान पर बताते-समझते रहे हैं। जन्म के समय ही भगवान श्रीराम ने माता कौशल्या को गर्भ में ही अपने दिव्य दर्शन दे दिए। माता कौशल्या भगवान को शिशु लीला करने की बात कहती हैं। माता पुनि बोली सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा। कीजै सिसुलीला अति प्रियसिला यह सुख परम अनूपा।। भगवान माता की बात मान लेते हैं और मानव लीला करने के लिए इस भूलोक पर आते हैं।

गुरु वशिष्ठ और गुरु विश्वामित्र भगवान श्रीराम के देव रूप को जानते हैं। उनकी लीलाओं को भी जानते हैं। जब धनुष भंग होता है तो उस समय भगवान परशुराम आते हैं और भगवान श्रीराम के दर्शन कर उन्हें प्रणाम कर अपने धाम को लौट जाते हैं। श्रीलक्ष्मण जी भगवान के दिव्य रूप को जानते हैं। रामचरितमानस में जब श्रीलक्ष्मण जी निषाद जी को बताते हैं कि राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा।। भगवान श्रीराम ब्रह्म हैं अर्थात श्रीलक्ष्मण जी के माध्यम से निषाद जी को भी भगवान के दर्शन हो जाते हैं। भक्त केवट भी गंगा पार करने के बाद भगवान श्रीराम से कहते हैं कि अब कछु नाथ ना चाहिए मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें।। अर्थात केवट भी भगवान के दर्शन कर अपने

को धन्य कर चुके हैं। माता सीता जी के हरण से पहले रावण विचार करता है और कहता है कि खर दूषण मोहि सम बलवंता। तिन्हहि को मारई बिनु भगवंता।। अर्थात रावण भी भगवान के दर्शन कर मुक्ति चाहता है।

श्रीहनुमान जी विप्र का वेश बनाकर आते हैं और जैसे ही भगवान श्रीराम से परिचय होता है, वह भगवान के दर्शन कर जन्म-जन्म की भक्ति का फल प्राप्त कर लेते हैं। बाली वध के समय भी बाली भगवान श्रीराम से कहते हैं कि धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि व्याध की नाईं।। अर्थात बाली भी भगवान के दिव्य दर्शन कर परमधाम को पहुंच जाता है। श्रीहनुमान जी जब लंका में माता सीता जी का पता लगाने जाते हैं तो वहां विभीषण जी से भेंट होती है। श्रीहनुमान जी और विभीषण जी का संवाद भी है। विभीषण जी रावण से कहते भी हैं कि तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला।। ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता।। अर्थात विभीषण जी भगवान श्रीराम के बारे में जानते हैं। रावण अपने दरबार से उसे भगा देता है और विभीषण जी सीधे भगवान श्रीराम जी के पास आते हैं और कहते हैं कि समदरसी इच्छा कुछ नाहीं। हरष सोक भय नहिं मन माही।। अर्थात आपके दर्शन के बाद मेरे अंदर का सुख-दुख, राग-विराग सभी कुछ नष्ट हो गया है।

भगवान श्रीराम अपने सभी भक्तों को दर्शन देते हैं। उन्हें देखने-समझने वाली दृष्टि होनी चाहिए। भगवान श्रीराम हम सभी के तारणहार हैं। राम नाम का सुमिरन करते रहेंगे तो भवसागर से पर उतर जाएंगे। जय श्रीराम

भारत की शक्ति और हर वैश्विक साझेदारी का भविष्य-लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स का संगम

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत आज केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि यह विश्व के लिए आशा, स्थिरता और अवसरों का केंद्र बन चुका है। भारत आज जिस मुकाम पर खड़ा है, उसे केवल एक राष्ट्र की उपलब्धि कहना कम होगा।यह 21वीं सदी के उस नए युग की शुरुआत है यह स्वतंत्रता के 75 से अधिक वर्षों की यात्रा में भारत ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि, लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की आत्मा है। इसके साथ ही, भारत की जनसांख्यिकी और विशाल स्किल्ड वर्कफोर्स ने उसे ऐसे मुकाम पर ला खड़ा किया है, जहां से वह न केवल अपने नागरिकों के भविष्य को संवार सकता है, बल्कि पूरे विश्व के विकास की दिशा भी तय कर सकता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र से यह लेख तीन मुख्यस्तंभों, लोकतंत्र की शक्ति, जनसांख्यिकीय लाभ और स्किल्ड वर्कफोर्स की क्षमता पर आधारित है, जिनकी वजह से भारत और उसके वैश्विक साझेदारों के बीच हर रिश्ते को ₹विन-विन सिचुएशन₹ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

साथियों बात अगर हम भारत की पहली सबसे बड़ी ताकत की करें तो, भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।1950 में संविधान लागू होने के बाद से आज तक भारत ने चुनावों के जरिए सत्ता परिवर्तन, नीति निर्माण और नागरिक अधिकारों को जिस मजबूती से कायम रखा है, वह विश्व के लिए उदाहरण है। लोकतंत्र का अर्थ केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिक भागीदारी, न्याय व्यवस्था की स्वतंत्रता और पारदर्शी शासन की नींव पर खड़ा है। विविधता में एकता इसका सबसे बड़ा परिचायक है, जहां 22 आधिकारिक भाषाएँ, हजारों बोलियाँ, सैकड़ों धर्म-संप्रदाय और अलग-अलग संस्कृतियाँ होने के बावजूद लोग लोकतांत्रिक रूप से एकजुट रहते हैं। भारत का लोकतंत्र वैश्विक कंपनियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करता है क्योंकि वे जानती हैं कि यहां नीतियाँ पारदर्शी हैं, कानून का शासन है और निवेशकों के हितों की रक्षा की जाती है।दुनिया के कई हिस्सों में अधिनायकवाद और राजनीतिक अस्थिरता देखने को मिलती है। अफ्रीकी और एशियाई देशों में सत्ता परिवर्तन अक्सर हिंसा और अराजकता का कारण बनते हैं।इसके विपरीत भारत ने अपने लोकतांत्रिक ढांचे से स्थिरता का माहौल तैयार किया है। यही कारण है कि विश्व की बड़ी कंपनियाँ भारत को ₹सेफ़ हैवन₹ के रूप में देखती हैं। चीन या रूस जैसे देशों में निवेश करने पर राजनीतिक जोखिम अधिक होता है, जबकि भारत में लोकतंत्र यह सुनिश्चित करता है कि नीतियाँ स्थिर रहें और निवेश सुरक्षित रहे। यह लोकतंत्र की वही शक्ति है जो भारत को अलग पहचान दिलाती है।

साथियों बात अगर हम भारत की दूसरी सबसे बड़ी ताक़त की करें तो वह है उसकी जनसांख्यिकी।वर्तमान समय में भारत की आबादी लगभग 1.43 अरब है और इसमें से 65 पेर्सेंट से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु वर्ग में आते हैं। यह स्थिति भारत को दुनियाँ की सबसे युवा आबादी वाला देश बनाती है। युवा आबादी किसी भी राष्ट्र के लिए ऊर्जा, नवाचार और विकास का प्रतीक होती है। जब यूरोप और जापान जैसे विकसित देश बूढ़ी होती आबादी की समस्या से जूझ रहे हैं, तब भारत के पास एक ऐसा डेमोग्राफिक एडवांटेज है जो उसे वैश्विक अर्थव्यवस्था का इंजन बना सकता है।भारत की युवा पीढ़ी तकनीक अपनाने में सबसे आगे है। वे न केवल नई तकनीकों को अपनाते हैं बल्कि स्टार्टअप्स और उद्यमिता की ओर भी बढ़ रहे हैं। यही कारण है कि भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है।₹मेक इन इंडिया₹,₹स्टार्टअप इंडिया₹ और ₹डिजिटल इंडिया₹ जैसी योजनाएँ इसी युवा ऊर्जा का परिणाम हैं। यह डेमोग्राफिक डिविडेंड भारत को न केवल घरेलू विकास की दिशा में मजबूत बना रहा है बल्कि विश्व के लिए भी अवसर पैदा कर रहा है।भारत की यह जनसांख्यिकी वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। भारत हर साल लाखों इंजीनियर, डॉक्टर और मैनेजमेंट प्रोफेशनल तैयार करता है। यह वर्कफोर्स पूरी दुनिया की ज़रूरतें पूरी करता है। भारतीय पेशेवर आज अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों और अफ्रीका तक अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। यह युवा आबादी उपभोक्ता बाजार के रूप में भी बेहद आकर्षक है। युवा वर्ग नई तकनीकों, डिजिटल सेवाओं और उपभोक्ता उत्पादों का सबसे बड़ा खरीदार है। यही कारण है कि वैश्विक कंपनियाँ भारत को भविष्य का सबसे बड़ा बाजार मानती हैं।

साथियों बात अगर हम भारत की तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण शक्ति की करें तो वह है उसका विशाल स्किल्ड वर्कफोर्स। भारत के पास आज दुनिया का सबसे बड़ा स्किल्ड ह्यूमन रिसोर्स पूल है।आईटी, हेल्थकेयर, इंजीनियरिंग, रिसर्च, शिक्षा और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में भारतीयों ने अपनी प्रतिभा से पूरी दुनिया में पहचान बनाई है। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर वैश्विक आईटी हब के रूप में उभर चुके हैं। भारतीय आईटी प्रोफेशनल्स अमेरिकी सिलिकॉन वैली की कंपनियों के लिए रीढ़ की हड्डी बन चुके हैं। हेल्थकेयर के क्षेत्र में भारतीय डॉक्टर और नर्स पूरी दुनिया में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान यह साफ दिखाई दिया कि भारतीय मेडिकल प्रोफेशनल्स की क्षमता कितनी विशाल है।मैन्युफैक्चरिंग और स्टार्टअप्स के क्षेत्र में भी भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। ₹मेक इन इंडिया₹ अभियान ने विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है और भारत में उत्पादन का माहौल तैयार किया है। भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम भी दुनिया में तीसरे स्थान पर है, जिसने लाखों रोजगार पैदा किए हैं। यह स्किल्ड वर्कफोर्स केवल भारत की अर्थव्यवस्था के लिए ही नहीं, बल्कि वैश्विक नवाचार और विकास के लिए भी अहम है।

साथियों बातें कर हम इन तीनों कारकों, लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स, का संगम भारत को विश्व की बड़ी कंपनियों और सरकारों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाने की करें तो, जब कंपनियाँ भारत में निवेश करती हैं तो उन्हें स्थिर राजनीतिक माहौल, विशाल उपभोक्ता आधार और प्रतिभाशाली मानव संसाधन तीनों एक साथ मिलते हैं। यही कारण है कि एप्पल, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेज़न और टेस्ला जैसी कंपनियाँ भारत को भविष्य का हब मान रही हैं।भारत और उसके वैश्विक साझेदारों के बीच संबंध केवल व्यापार तक सीमित नहीं हैं। यह संबंध वास्तव में परस्पर लाभकारी है। भारत को रोजगार, तकनीक और निवेश मिलता है, जबकि कंपनियों को लागत में कमी, स्थिर वातावरण और विशाल बाजार तक पहुंच मिलती है। इस प्रकार यह रिश्ता ₹विन-विन सिचुएशन₹ का प्रतीक बन जाता है।हालांकि भारत के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। शिक्षा और कौशल मेंअसमानता, आधारभूत ढाँचे की कमी, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। लेकिन भारत सरकार ₹स्किल इंडिया₹, ₹डिजिटल इंडिया₹, ₹गति शक्ति योजना₹ और ₹आत्मनिर्भर भारत₹ जैसे अभियानों से इन चुनौतियों को अवसरों में बदलने का प्रयास कर रही है। यदि ये प्रयास सफल होते हैं तो भारत अपनी जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स का पूरा लाभ उठा सकेगा।

अंततः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि यह स्पष्ट है कि भारत की शक्ति तीन स्तंभों पर आधारित है, लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और स्किल्ड वर्कफोर्स। ये तीनों मिलकर भारत को न केवल विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना रहे हैं, बल्कि इसे एक भरोसेमंद वैश्विक साझेदार भी बना रहे हैं। भारत का विकास मॉडल शून्य-योग नहीं है, बल्कि यह पूरे विश्व के लिए अवसर पैदा करता है। आने वाले दशकों में जब दुनिया नए संकटों और अवसरों से गुज़रेगी, तब भारत अपनी लोकतांत्रिक ताक़त, युवा ऊर्जा और स्किल्ड वर्कफोर्स के दम पर पूरे विश्व के लिए आशा और सहयोग का केंद्र बना रहेगा। यही भारत की असली पहचान है-एक ऐसा राष्ट्र जो अपने विकास के साथ-साथ पूरे विश्व की प्रगति में योगदान देता है और हर वैश्विक साझेदारी को वास्तविक ₹विन-विनर₹ बनाता है।

2027 तक भारत में लॉन्च होंगी 15 नई हाइब्रिड SUV, लिस्ट में Maruti, Hyundai से लेकर Mahindra तक की गाड़ियां

भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं क्योंकि ये फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस का संतुलन बनाती हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों की तरह इनमें रेंज की चिंता नहीं होती। भारतीय बाजार में 2027 तक 15 नई हाइब्रिड एसयूवी लॉन्च होंगी। Maruti Suzuki Mahindra Hyundai Kia और Honda जैसी कंपनियां इस दौड़ में शामिल हैं जो विभिन्न हाइब्रिड मॉडल्स पेश करने की तैयारी में हैं।

नई दिल्ली। भारत में हाइब्रिड गाड़ियां तेजी से पॉपुलर हो रही है, क्योंकि यह फ्यूल एफिशिएंसी और दमदार परफॉर्मेंस के बीच बेहतर संतुलन बनाती है। इलेक्ट्रिक वाहनों के विपरीत, हाइब्रिड गाड़ियों में रेंज की चिंता नहीं होती है और न ही उन्हें व्यापक चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होती है। इसे देखते हुए भारतीय बाजार में 15 नई हाइब्रिड SUV साल 2027 तक लॉन्च होंगी। आइए विस्तार में जानते हैं कि भारत में कौन सी हाईब्रिड गाड़ियां लेकर आने वाली है।

2027 तक आने वाली 15 हाइब्रिड SUV की लिस्ट

आगामी हाइब्रिड SUV (Upcoming Hybrid SUV) संभावित लॉन्च (Expected Launch)

Maruti Escudo 3 सितंबर, 2025
Maruti Fronx Hybrid 2026
Mahindra XUV3XO Hybrid 2026
Mahindra Range Extender SUVs 2026–2027
New-Gen Hyundai Creta 2027
Hyundai Ni1i (7-seater) 2027
New-Gen Kia Seltos 2027
Kia Q4i (3-row SUV) 2027
Honda CR-V 2025 के अंत तक
Honda Elevate Hybrid दि वा ली 2026
Honda 7-Seater SUV 2027
New-Gen Renault Duster 2026
Renault Boreal 2026–2027
Nissan C-Segment SUV 2026
Nissan 7-Seater SUV 2026–2027

Maruti Suzuki की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

भारत की सबसे बड़ी यात्री वाहन निर्माता कंपनी Maruti Suzuki की Grand Vitara पर बेस्ड एक नई मिड-साइज SUV पेश करने की तैयारी कर रही है। कंपनी इसे 3 सितंबर, 2025 को लॉन्च करने वाली है। इसे 1.5L पेट्रोल-हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ लेकर आया जाएगा। इसके अलावा, 2026 में मारुति अपनी इन-हाउस विकसित स्ट्रांग हाइब्रिड सिस्टम को फ्रोंक्स हाइब्रिड में पेश करेगी, जिसमें कंपनी की सीरीज हाइब्रिड प्रणाली के साथ 1.2L Z12E पेट्रोल इंजन होगा।

Mahindra की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

महिंद्रा एंड महिंद्रा 2026 में अपनी XUV 3XO कॉम्पैक्ट SUV के एक स्ट्रांग हाइब्रिड वेरिएंट के साथ हाइब्रिड सेगमेंट एंट्री में कदम रखने की योजना बना रही है। इस मॉडल में एक 1.2L टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन के साथ एक हाइब्रिड सिस्टम भी होगा। Mahindra BE 6 और XUV.e9 को भी हाइब्रिड सिस्टम के साथ लाने की तैयारी चल रही है। इसमें साल 2026 या 2027 तक रेंज एक्सटेंडर हाइब्रिड पावरट्रेन हो सकते हैं।

Hyundai और Kia की आने वाली हाइब्रिड गाड़ियां

Hyundai मोटर इंडिया अपनी दो हाइब्रिड SUV को लाने की तैयारी कर रही है। इसमें एक नई जनरेशन की क्रेटा हाइब्रिड के साथ ही एक 7-सीटर SUV लाने की तैयारी कर रही है। इन दोनों मॉडलों के 2026 तक आने की उम्मीद है।

Hyundai के साथ ही Kia भी हाइब्रिड सेगमेंट में एंट्री की तैयारी कर रही है। कंपनी नई जनरेशन की सेल्टोस को हाइब्रिड सिस्टम के साथ ला सकती है, जिसके साल 2027 तक लॉन्च होने की संभावना है। सके बाद एक बिल्कुल नई 3-रो वाली SUV भी आएगी, जिसमें हाइब्रिड तकनीक होगी।

होंडा का हाइब्रिड लाइन-अप

होंडा कार्स इंडिया द्वारा अपनी लोकप्रिय वैश्विक हाइब्रिड SUV, जेडआर-वी (ZR-V), को 2025 के अंत तक पेश करने की उम्मीद है। एलिवेट SUV का एक हाइब्रिड वर्जन दिवाली 2026 के आसपास आ सकता है। कंपनी एक नई 7-सीटर SUV पर भी काम कर रही है, जो होंडा के नए मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म पर आधारित होगी।

विनफ़ास्ट लाएगी नैनो से भी छोटी इलेक्ट्रिक कार, "एमजी धूमकेतु" को देगी कड़ी टक्कर

परिवहन विशेष न्यूज

वियतनामी वाहन निर्माता Vinfast जल्द ही भारतीय बाजार में अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी VF 6 और VF 7 को लॉन्च करेगी। कंपनी Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट भी दायर किया है जो टाटा नैनो से भी छोटी होगी। इस 2-डोर इलेक्ट्रिक कार में 14.7 kWh का बैटरी पैक और 20 kW की इलेक्ट्रिक मोटर होगी जो 170 किमी की रेंज देगी। इसका मुकाबला MG Comet से होगा।

नई दिल्ली। Vinfast भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी दो इलेक्ट्रिक SUV VF 6 और VF 7 को लॉन्च करने वाली है। कंपनी ने इसकी बुकिंग शुरू कर दी है। कंपनी ने हाल ही में Vinfast Minio Green EV के लिए पेटेंट दायर किया है। यह एक छोटी इलेक्ट्रिक कार होने वाली है। इस इलेक्ट्रिक कार की साइज टाटा नैनो से भी छोटा होने वाला है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला MG Comet से देखने के लिए मिलेगा। आइए विस्तार में जानते हैं कि Vinfast की यह छोटी इलेक्ट्रिक कार किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

स्टाइलिंग और फीचर्स

वियतनामी बाजार में, Vinfast Minio Green को एक व्यावसायिक इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में ऑफर किया जाता है। इसकी लंबाई 3,090 मिमी है। इसे 2-डोर ऑल-इलेक्ट्रिक सुपरमिनी सेगमेंट में पेश किया जाता है। इसे टॉल-बॉय प्रोफाइल दिया गया है, जो लोगों का काफी आसानी से ध्यान खींचती है। इसमें क्लोज्ड-ऑफ ग्रिल, अर्ध-वृत्ताकार-स्टाइल की हेडलाइट्स और प्रमुख बम्पर डिजाइन दिया गया है। इसमें छोटा बोनट, सर्कुलर व्हील आर्च, 13-इंच के पहिए और पारंपरिक दरवाजे के हैंडल दिए गए हैं। इसके पीछे की तरफ EV में एक शार्क फिन एंटीना, एक फ्लैट विंडस्क्रीन और वर्टिकली स्टैक्ड टेल लैंप भी मिलता है। इसे कुल 6 कलर ऑप्शन में लेकर आया जाएगा।

Vinfast Minio Green का इंटीरियर

इसमें डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले दिया गया है, जो इंफोटेनमेंट सिस्टम के रूप में भी काम करता है। इसमें डैश, दरवाज़े के हैंडल और अपहोल्स्ट्री पर नीले एक्सेंट के साथ एक ग्रे इंटीरियर थीम दिया गया है। बाकी फीचर्स के रूप में रोटरी डायल, कुछ फिजिकल बटन और एक फ्लैट बॉटम 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिए गए हैं। इसके साथ ही 4-तरफा एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, फैब्रिक सीट अपहोल्स्ट्री और डे-एंड-नाइट इंटीरियर रियरव्यू मिरर भी मिलता है। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए ड्राइवर एयरबैग, ABS और ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम जैसे फीचर्स मिलते हैं।

परफॉरमेंस और रेंज

Vinfast Minio Green में 14.7 kWh बैटरी पैक दिया जा सकता है। इसमें इलेक्ट्रिक मोटर 20 kW होगी, जो 27 PS की पावर और 65 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करेगा। Minio Green की टॉप स्पीड 80 किमी/घंटा है। NEDC मानकों के अनुसार, रेंज 170 किमी है। EV 12 kW तक की चार्जिंग को सपोर्ट करती है।

मारुति ऑल्टो बनी मॉनसून किंग, पानी से भरी सड़क को आसानी से किया पार

गुवाहाटी में भारी बारिश के कारण जलमग्न सड़कों पर एक मारुति सुजुकी ऑल्टो ने शानदार प्रदर्शन किया। एसयूवी के सामने अक्सर फीकी लगने वाली ऑल्टो ने बाढ़ग्रस्त सड़कों पर आसानी से नेविगेट किया। वायरल वीडियो में ऑल्टो घुटनों तक गहरे पानी से गुजरती हुई दिखाई दी। ऑल्टो के हल्के डिजाइन और सटीक हैंडलिंग ने इसे जलमग्न सड़कों पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद की।

नई दिल्ली। मानसून के मौसम में गुवाहाटी में जमकर बरिश होती है। हाल में वहां पर इतनी ज्यादा बारिश हुई ही अंडरपास की सड़क पूरी तरह से डूब गई है। इस दौरान वहां पर कुछ ऐसा हुआ, जिसे देखकर हर कोई हैरान रह गया। शहर की जलमग्न सड़कों और अराजकता के बीच, एक मारुति सुजुकी ऑल्टो अप्रत्याशित हीरो बनकर उभरी, जिसने बाढ़ग्रस्त सड़कों पर आसानी से नेविगेट किया। अक्सर महिंद्रा थार और टोयोटा फॉर्च्यूनर जैसी एसयूवी (SUV) के सामने फीकी लगने वाली ऑल्टो ने साबित कर दिया कि शहरी बाढ़ से निपटने के लिए सिर्फ बड़ा होना ही काफी नहीं है।

जलमग्न सड़क से आसानी से निकली Alto

वायरल वीडियो में Alto गुवाहाटी के सबसे व्यस्त इलाकों में से एक में घुटनों तक गहरे पानी से गुजरती हुई दिखाई दी। छोटी सी दिखने वाली यह कार, जिसे अक्सर शहर में चलने के लिए एक एंट्री-लेवल वाहन माना जाता है, उसने अविश्वसनीय स्थिरता और नियंत्रण दिखाया। ऑल्टो के बाढ़ग्रस्त सड़कों से गुजरने के वीडियो सोशल मीडिया पर तुरंत वायरल हो गया है, जिसे हजारों लाइक्स और कमेंट्स मिले। इसके साथ ही लोगों ने अल्टो की तारीफ भी की है।

क्यों Alto ने किया कमाल?

Alto जलमग्न सड़क से आसानी से निकलने को लेकर कहा जा रहा कि थार और फॉर्च्यूनर जैसी एसयूवी ऑफ-रोड और कठिन इलाकों के लिए बनाई गई हैं, वहीं ऑल्टो का बाढ़ में प्रदर्शन स्मार्ट ड्राइविंग और कॉम्पैक्ट वाहन की गतिशीलता के महत्व को बताता है। इसके हल्के डिजाइन, छोटे आकार और सटीक हैंडलिंग ने इसे उन जगहों पर रुकने से बचाया, जहां बड़े वाहन संघर्ष कर रहे थे। इसने जलमग्न सड़क अपनी पकड़ को बनाए रखा।

लोगों का रिएक्शन

Alto का जलमग्न सड़क से आसानी से निकलने का वीडियो काफी तेजी से वायरल हो रहा है। इसको लेकर सोशल मीडिया पर एक यूजर ने लिखा कि "हमने थार और फॉर्च्यूनर को ऐसा करते देखा है, लेकिन ऑल्टो को एक्शन में देखना तो नेक्स्ट लेवल है!" दूसरे यूजर ने लिखा कि "लॉर्ड ऑल्टो नो मर्सी मोड में है! जब यह छोटी लीजेंड मौजूद है तो एसयूवी की किसको जरूरत है?"

2026 केटीएम 690 एंड्यूरो आर और 690 एसएमसी आर पेश; नए इंजन, इलेक्ट्रॉनिक्स और डिजाइन से लैस

KTM ने 690 Enduro R और 690 SMC R मोटरसाइकिलें पेश की हैं जिनमें नया इंजन इलेक्ट्रॉनिक्स एर्गोनॉमिक्स और स्टाइलिंग अपडेट हैं। 79hp पावर और 73Nm टॉर्क के साथ इनमें अपडेटेड TFT डिस्प्ले KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग और कॉर्नरिंग ABS जैसे फीचर्स हैं। सितंबर 2025 में ग्लोबल लॉन्च की उम्मीद है भारत में लॉन्च की तारीख अभी अज्ञात है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। KTM ने अपनी दो मोटरसाइकिल 690 Enduro R और 690 SMC R को पेश किया है। यह दोनों ही बाइक को पूरी तरह से बदला हुआ इंजन, नए इलेक्ट्रॉनिक्स, अपडेटेड एर्गोनॉमिक्स और नए स्टाइलिंग के साथ लेकर आया गया है। इसके बाद भी यह अपनी अलग ऑफ-रोड और सुपरमोटो पहचान को बरकरार रखती है। आइए जानते हैं कि यह दोनों बाइक किन खास फीचर्स के साथ आने वाली है?

इंजन में हुआ बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को इंजन बदलाव के साथ लेकर आया गया है। इसके साथ ही क्रैंककेस, क्लच और स्टेटर कवर, ऑयल-डिलीवरी सिस्टम और फ्यूल पंप के डिजाइन में भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें अपडेटेड वाल्व टाइमिंग दी गई है। इससे इसने लेटेस्ट मानदंडों का पालन करते हुए 79hp की पावर और 73Nm का टॉर्क जनरेट करता है, जो पिछले मॉडल से 5hp ज्यादा है।

इसके साथ ही कंपन को कम करने के लिए रबर इंजन माउंट्स पेश किए गए हैं। इसमें से सरल इंटेक लेआउट के लिए सेकेंडरी एयर सिस्टम को हटा दिया गया है और ज्यादा कॉम्पैक्ट मफलर के साथ एग्जॉस्ट को फिर से तैयार किया गया है। इसमें नई 65-डिग्री ट्विस्ट ग्रिप के कारण थ्रॉटल रिएक्शन को तेज किया गया है।

अपडेटेड टेक्नोलॉजी

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R के लिए बड़ा अपडेट पुराने LCD डैश को एक 4.2-इंच के कलर TFT डिस्प्ले से बदल दिया गया है। इसमें KTMconnect स्मार्टफोन पेयरिंग, USB-C चार्जिंग, संगीत और कॉल कंट्रोल, और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसी सुविधाएं दी जाती है। इसमें नए बैकलिट स्विचगियर और एक डेडिकेटेड ABS-ऑफ बटन के साथ जोड़ा गया है।

राइडर एड्स में अब लीन-सेंसिटिव कॉर्नरिंग ABS और कॉर्नरिंग MTC मानक रूप से दिया गया है, जिसमें Enduro R में एक रैली मोड जोड़ा गया है, जो एडजस्टेबल ट्रैक्शन और मोटर-स्लिप रेगुलेशन देता है। SMC R को लॉन्च कंट्रोल, 5-स्टेज एंटी-व्हीली, स्लिप एडजस्टर और सुपरमोटो-विशिष्ट ABS सेटिंग्स के साथ एक ट्रैक मोड के साथ लेकर आया गया है।

डिजाइन और चेसिस में बदलाव

KTM 690 Enduro R और 690 SMC R में अब नई LED हेडलाइट, टेल-लाइट और इंडिकेटर दिया गया है। इसके चेसिस में बदलाव किया गया है और स्टील ट्रेलिस फ्रेम को पहले की तरह बरकरार रखा गया है। इसमें सस्पेंशन ट्यूनिंग अपग्रेड किया गया है।

Enduro R को अपग्रेड बॉडीवर्क, LED लाइटिंग, नए इन-मोल्ड ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। इसमें ट्रांसफर्ड सेंटर-स्टैंड माउंट दिया गया है। दोनों WP सस्पेंशन और एक स्टील ट्रेलिस फ्रेम का इस्तेमाल पहले की तरह जारी रखा गया है।

कम होगी लॉन्च?

नई KTM 690 Enduro R और 690 SMC R को सितंबर 2025 में ग्लोबल लेवल पर लॉन्च किया जाएगा। अभी तक इन दोनों के भारत में लॉन्च की तारीख और कीमत की जानकारी सामने नहीं आई है।

नई येज्दी रोडस्टर पुरानी के मुकाबले कितनी बदली?

येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को नए फीचर्स और डिजाइन बदलावों के साथ लॉन्च किया है। इसमें कटा हुआ रियर फेंडर और स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट है। नई स्प्लिट-सीट राइडर की पसंद के अनुसार हटाई जा सकती है। टायर को 130/80-17 से बढ़ाकर 150/70-17 किया गया है। बाइक में 34cc लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 29.1hp की पावर देता है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होती है।

नई दिल्ली। येज्दी ने हाल ही में 2025 Roadster को लॉन्च किया है। इसे कई नए फीचर्स के साथ लेकर आया गया है, इसके साथ ही इसके डिजाइन में भी कई बदलाव किए गए हैं। इसके डिजाइन में बदलाव की वजह से इसकी स्टाइल को बदलते हैं और इसके चलाने के तरीके को भी बदल सकते हैं। हम यहां पर आपको विस्तार में बता रहे हैं कि नई Yezdi Roadster पुरानी के मुकाबले कितनी बदली है?

नई Yezdi Roadster में एक कटा हुआ रियर फेंडर और एक स्विंगआर्म-माउंटेड नंबर प्लेट होल्डर दिया गया है, जो इसे एक बोल्ड और ज्यादा बॉबर इंसपायर लुक देने का काम करता है। इसमें नई मॉड्यूलर स्प्लिट-सीट दी गई है, जो राइडर के पसंद के आधार पर पीछे की सीट को पूरी तरह से हटाने की अनुमति देती है। इसके सामने की तरफ बदलाव काफी कम है, लेकिन में नया हैंडलबार और एडजस्टेबल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है। इसमें हैंडलबार, क्रैश गार्ड, वाइजर और टूरिंग गियर सहित 20 से ज्यादा एक्सेसरीज के कई कॉम्बिनेशन के साथ छह फैक्ट्री कस्टम किट भी पेश किया जा रहा है।

2025 Yezdi Roadster का चेसिस

बदलावों में मजबूत फ्रेम और एक चौड़ा रियर टायर शामिल है। इसमें सबसे बड़ा बदलाव पीछे की तरफ देखने के लिए मिलता है। इसमें टायर अब 130/80-17 से बढ़कर 150/70-17 हो गया है, जिससे बाइक को एक मजबूत लुक और एक बड़ा संपर्क क्षेत्र मिलता है जो ट्रैक्शन और कॉर्नरिंग स्थिरता में सुधार करेगा। इसके सामने का टायर 100/90-18 यूनिट ही रहता है।

नई Yezdi Roadster में पहले की तरह ही डबल-क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसे अपडेटेड मैन्युफैक्चरिंग के जरिए मजबूत किया गया है। इसमें नया सबफ्रेम दिया गया है। इसका सस्पेंशन और ब्रेक में काफी हद पहले जैसा ही है, हालांकि इसमें अपग्रेड स्प्रिंग और डैम्पिंग रेट दिया गया है।

बाकी बदलावों की बात करें तो ऊंचाई में 5 मिमी की बढ़ोतरी करके 795 मिमी हो गई है, जबकि कर्ब वजन 183.4 किलोग्राम हो गया है। Yezdi फ्यूल के बिना कर्ब वजन बताती है, इसलिए 12.5-लीटर टैंक 90 प्रतिशत तक भरा होने पर, वास्तविक आंकड़ा 190-192 किलोग्राम के करीब होना चाहिए।

2025 Yezdi Roadster का इंजन

नई Roadster में संशोधित गियरिंग के साथ Alpha2 इंजन मिलता है। इसमें 34cc लिक्विड-कूल्ड सिंगल-सिलेंडर Alpha2 का इस्तेमाल किया गया है, जो 29.1hp की पावर और 29.6Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन प्रत्येक मॉडल के लिए अलग तरह से ट्यून किया गया है, इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि नई Roadster का अपने सिबलिंग्स से एक अलग कैरेक्टर होगा। इसमें रियर स्प्रोकेट लगाकर फाइनल ड्राइव रेशियो को भी अपग्रेड किया गया है, जिससे कम स्पीड पर राइडबिलिटी में सुधार देखने के लिए मिल सकता है।

2025 Yezdi Roadster की कीमत

नई Roadster की कीमत पुराने की तुलना में 4,000 रुपये महंगी है। नई Yezdi Roadster की एक्स-शोरूम कीमत 2.10 लाख रुपये से शुरू होकर 2.26 लाख रुपये तक पहुंचती है। यह कीमतें वेरिएंट और कलर ऑप्शन के ऊपर निर्भर करती है। इसे दो वेरिएंट में पेश किया गया है, जो Standard और Premium है। Standard वेरिएंट को चार कलर ऑप्शन, जबकि Premium को एक सिंगल, ब्लैक-आउट पेंट स्कीम लेकर आया गया है। Premium में एक फ्लैट हैंडलबार, ब्लैक-आउट रिम और एक चिकनी असेंबली में इंटीग्रेटेड टेल-लाइट/टर्न-इंडिकेटर यूनिट दी गई है।

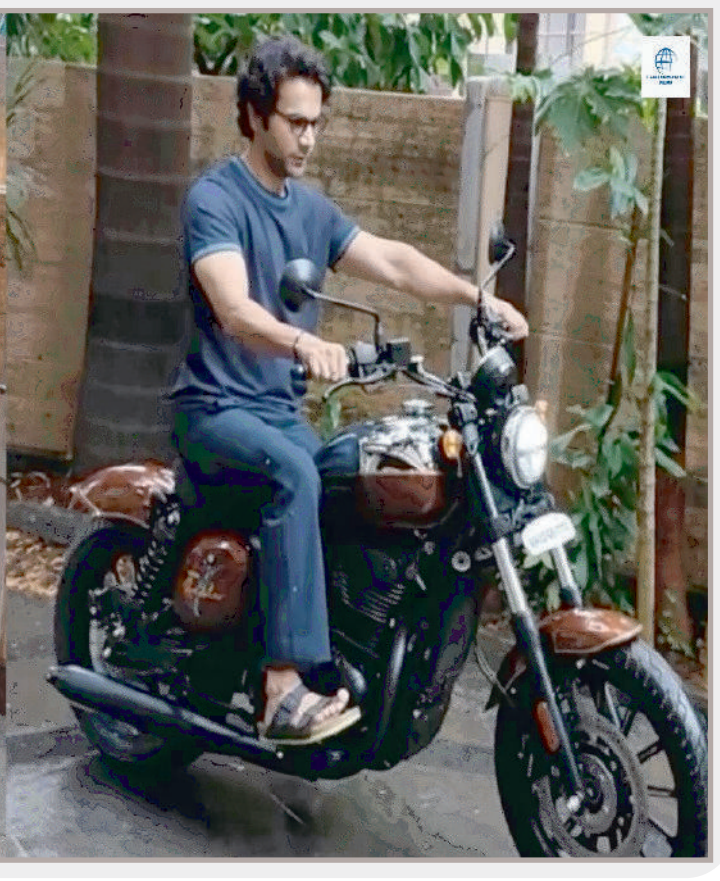

बैटरी पुनर्चक्रण को केवल कचरा प्रबंधन के रूप में नहीं, बल्कि एक आर्थिक अवसर रूप में भी देखना चाहिए

✍ विजय गर्ग

भारत दुनिया सबसे बड़े उपभोक्ता बाजारों में से एक है। हर वर्ष करोड़ों की संख्या में इलेक्ट्रानिक उपकरण खरीदे जाते हैं और उनके साथ आती हैं करोड़ों बैटरियां। इनमें 'पेंसिल सेल' जैसी छोटी क्षार बैटरियों से लेकर मोबाइल फोन और लैपटाप में इस्तेमाल होने वाली लिथियम-आयन बैटरियां और गाड़ियों तथा इनवर्टर में लगने वाली भारी-भरकम लेड एसिड बैटरियां तक शामिल हैं। सरकार की 'फेम इंडिया' जैसी योजनाओं के माध्यम से इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की नीति स्वागत योग्य है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप आने वाले दशक में लिथियम-आयन बैटरियों का कचरा तेजी से हमारे शहरों में फैलेगा।

आज दुनिया बैटरी पर चल रही है। सुबह के अलार्म से लेकर रात में टीवी का रिमोट बंद करने तक हमारी अंगुलियां दिन भर में दर्जनों बार बैटरी से चलने वाले उपकरणों को छूती हैं। हाथ में स्मार्टफोन, कलाई पर बंधी घड़ी, बच्चों के खिलौने, लैपटाप और अब हमारी सड़कों पर दौड़ती गाड़ियां भी बैटरी से ही चल रही हैं। यह तकनीकी प्रगति का उदाहरण है, जिसने हमारे जीवन को आसान और सुविधाजनक बना दिया है। मगर इस सुविधा का दूसरा पहलू भी है, उतना चमकील नहीं है। यह पहलू 'पहल है' इस्तेमाल की हुई बैटरियों के कचरे का, जो एक अदृश्य और खतरनाक संकट के रूप में हमारे सामने खड़ा हो रहा है। भारत जैसे-जैसे डिजिटल और इलेक्ट्रिक भविष्य की ओर बढ़ रहा है, यह समझना अनिवार्य हो गया है कि अगर हमने बैटरी कचरे का ठीक से प्रबंधन नहीं किया, तो हमारी प्रगति का मार्ग पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए एक विनाशकारी जाल बन सकता है।

भारत दुनिया सबसे बड़े उपभोक्ता बाजारों में से एक है। हर वर्ष करोड़ों की संख्या में इलेक्ट्रानिक उपकरण खरीदे जाते हैं और उनके साथ आती हैं करोड़ों बैटरियां। इनमें 'पेंसिल सेल' जैसी छोटी क्षार बैटरियों से लेकर मोबाइल फोन और लैपटाप में इस्तेमाल होने वाली लिथियम-आयन बैटरियां और गाड़ियों तथा इनवर्टर में लगने वाली भारी-भरकम लेड एसिड बैटरियां तक शामिल हैं। सरकार की 'फेम इंडिया' जैसी योजनाओं के माध्यम से इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की नीति स्वागत योग्य है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप आने वाले दशक में लिथियम-आयन बैटरियों का कचरा तेजी से हमारे शहरों में फैलेगा। सवाल है इन लाखों बैटरियों का जीव जीवनकाल समाप्त होने पर उनका क्या होगा? अगर हम इन्हें साधारण कचरे की तरह फेंकते रहे, हम अपने ही र में एक जहरीला 'टाइम बम' लगा रहे होंगे। है।

बैटरी कचरे को खतरनाक बनाने वाली चीज इसके अंदर मौजूद रसायन। बाहर से ठोस और सुरक्षित दिखने वाली हर बैटरी के भीतर भारी और विषैली धातुओं का एक मिश्रण होता है। उदाहरण लिए, हमारी गाड़ियों और इनवर्टर में इस्तेमाल होने वाली लेड एसिड बैटरियों में सीसा (लेड) और सल्फ्यूरिक एसिड होता है। सीसा शक्तिशाली न्यूरोटाक्सिन है, यानी यह सीधे हमारे तंत्रिका तंत्र पर हमला करता है। जब इन बैटरियों को अवैज्ञानिक तरीके से तोड़ा या फेंका जाता है, सीसा मिट्टी में और फिर भूमिगत जल मिल जाता है। यह धीरे-धीरे हमारी खाद्य श्रृंखला में प्रवेश करता है। फिर यह पानी, सब्जियों और अनाज के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंचता है। बच्चों के लिए यह विशेष रूप से घातक है। सीसे के संपर्क में आने से बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास रुक सकता है। उनकी सीखने की क्षमता कम हो सकती है और व्यवहार संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

दूसरी ओर, आधुनिक उपकरणों और इलेक्ट्रिक वाहनों की जान कही जाने वाली लिथियम-आयन बैटरियां भी दूध की धुली नहीं हैं। इन्हें अक्सर 'हरित विकल्प' माना जाता है, लेकिन इनके कचरे का प्रबंधन भी बड़ी चुनौती है। इनमें लिथियम के अलावा कोबाल्ट, निकल और मैगनीज जैसी धातुएं होती हैं। अगर इन्हें कचरे के ढेर में फेंक दिया जाए, तो ये भारी धातुएं रिस कर भूजल को प्रदूषित कर सकती हैं। इसी तरह, पुरानी घड़ियों और रिमोट में इस्तेमाल होने वाली बटन सेल में पारा (मर्करी) और खिलौनों की बैटरियों में कैडमियम जैसी अत्यंत विषैली धातुएं पाई जाती हैं, जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं।

भारत में बैटरी कचरे के प्रबंधन की जमीनी हकीकत चिंताजनक है, क्योंकि इसका एक बहुत बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र यानी हमारे कबाड़

का कारोबार वालों के माध्यम से संचालित होता है। यह क्षेत्र एक दोधारी तलवार की तरह है। एक तरफ, कचरा बीनने वाले लोग हमारे घरों और दुकानों से इस्तेमाल की हुई बैटरियों को इकट्ठा करके पुनर्चक्रण श्रृंखला की पहली और सबसे अहम कड़ी का काम करते हैं। उनके बिना यह कचरा शायद हमारे घरों के कोनों में या कूड़ेदानों में ही पड़ा रहता। दूसरी तरफ, उनके काम करने का तरीका उनके लिए असुरक्षित और पर्यावरण के लिए विनाशकारी है। वे बिना किसी सुरक्षा उपकरण, जैसे दस्ताने या मास्क के इन जहरीली बैटरियों को हथौड़ों से तोड़ते हैं। लेड एसिय बैटरियों से तेजाब को खुले में नालियों में बहा दिया जाता एसिड छोटी-छोटी भट्टियों में पिघलाया जाता है, जिससे जहरीला धुआं सीधे हवा में घुल जाता है। इस प्रक्रिया में काम करने वाले श्रमिक खुद सीसा विषाक्तता, त्वचा रोगों और सांस की गंभीर बीमारियों के शिकार होते हैं।। कुछ मूल्यवान धातुओं की ही वसूली हो पाती है और फेंक दिए जाते हैं,

इस गंभीर स्थिति को पहचानते हुए केंद्र सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है अगस्त 2022 में, सरकार ने 'बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022' अधिसूचित किया। ये नियम पुराने नियमों की जगह लेते हैं। ये एक MA बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्धांत पर आधारित हैं, जिसे 'विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व' कहा जाता है। सरल शब्दों में, अब बैटरी बनाने वाली या उसे उपर आयात करने वाली कंपनी की जिम्मेदारी सिर्फ बैटरी बेचने तक सीमित नहीं होगी, बल्कि उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जब वह बैटरी खराब हो जाए, तो उसे उपभोक्ताओं से वापस इकट्ठा किया जाए और पर्यावरण के अनुकूल तरीके से पुनर्चक्रण किया जाए।

इन नए नियमों के तहत सभी प्रकार की बैटरियों- पोर्टेबल, आटोमोटिव औद्योगिक और इलेक्ट्रिक वाहन बैटरियों को शामिल किया गया है। उत्पादकों के लिए हर वर्ष एक निश्चित मात्रा में पुरानी बैटरियों को इकट्ठा और उन्हें पंजीकृत पुनर्चक्रण करने वालों को सौंपने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया की निगरानी के लिए एक केंद्रीकृत पोर्टल बनाया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कितनी बैटरियां बाजार में बेची गईं और उनमें से कितनी वापस पुनर्चक्रण के लिए आई। नियमों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि बैटरी कचरे को कूड़े के ढेर में दबाना या जल या जलाना प्रतिबंधित है। यह नीति सैद्धांतिक रूप से बहुत मजबूत है और अगर इसे सही भावना से लागू किया जाए, तो यह भारत में बैटरी कचरे के प्रबंधन का चेहरा बदल सकती है।

हमें बैटरी पुनर्चक्रण को केवल कचरा प्रबंधन के रूप में नहीं, बल्कि एक आर्थिक अवसर रूप में भी देखना चाहिए। आज भारत लिथियम और कोबाल्ट जैसी महत्त्वपूर्ण धातुओं के लिए पूरी तरह से आयात पर निर्भर है। पुरानी बैटरियों से इन धातुओं को निकालने की गुंजाइश बन सकी तो हम अपना अपनी आयात निर्भरता कम कर सकते हैं। यह एक 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा, जहां कचरे को फेंकने के बजाय उसे वापस एक मूल्यवान संसाधन में बदल दिया जाता है। इससे न केवल हमारा पर्यावरण बचेगा, बल्कि नए रोजगार भी पैदा होंगे और हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा भी मजबूत होगी। एक स्वच्छ और टिकाऊ भविष्य के लिए, हमें अपनी बैटरियों का जिम्मेदारी से समापन करना सीखना ही होगा।

नैतिकता के मूल्य

विजय गर्ग

यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति तार्किक रूप से अत्यंत बुद्धिमान है, उसका चरित्र भी उतना ही उत्कृष्ट और महान होगा। बल्कि कई लोगों को इस पर गहरा अफसोस जताते हुए देखा जा सकता है कि वह जिसे बहुत तार्किक और बुद्धिमान समझता था, वह व्यक्ति चरित्र और लोगों के साथ व्यवहार के स्तर पर निहायत ही खराब इंसान निकला। दरअसल, बुद्धिमत्ता और चरित्र, दोनों जीवन के अलग- अलग आयाम हैं। किसी भी मनुष्य के जीवन में सफलता और सम्मान पाने के लिए केवल तीव्र बुद्धि पर्याप्त नहीं होती, बल्कि उसका चरित्र, व्यवहार, उसकी नैतिकता और सोच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज में अक्सर यह भ्रम फैल जाता है कि जो व्यक्ति पढ़ा-लिखा है, जिसे तर्कशील और व्यावहारिक ज्ञान है, वह अपने चरित्र में भी उत्तम होगा, लेकिन वास्तव में यह आवश्यक नहीं है। इतिहास और वर्तमान दोनों में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं, जहां लोग अत्यधिक शिक्षित, बुद्धिमान और तर्कशील होते हुए भी अपने चरित्र के पतन के कारण समाज में अपयश का कारण बने हैं।

तार्किक बुद्धिमत्ता किसी भी व्यक्ति की सोचने-समझने, निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता को दर्शाती है। यह उसे दुनिया की जटिल परिस्थितियों को समझने और सही-गलत का विश्लेषण करने में मदद करती है। मगर केवल यह योग्यता होना ही जीवन की पूर्णता नहीं है। अगर कोई व्यक्ति अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग स्वार्थ, छल, धोखा और गलत कार्यों के लिए करता है, तो उसका वह ज्ञान समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। दूसरी ओर, एक ऐसा व्यक्ति जो अत्यधिक शिक्षित भले ही न हो, लेकिन जिसका हृदय पवित्र है, जिसकी सोच में ईमानदारी, दया और करुणा है, वह समाज के लिए प्रेरणा बन जाता है। चरित्र वह मूलभूत आधार है, जिस पर किसी

भी व्यक्ति के जीवन की सच्ची प्रतिष्ठा और पहचान टिकी होती है। चरित्र में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, करुणा, धैर्य, सहनशीलता और विनम्रता जैसे गुण आते हैं। यह व्यक्ति को आत्मसम्मान और दूसरों का विश्वास प्राप्त करने में सहायता करता है। जब जीवन में कठिन परिस्थितियां आती हैं, तब केवल बुद्धिमत्ता ही व्यक्ति का साथ नहीं देती, बल्कि उसका चरित्र उसे सही और गलत के बीच अंतर समझाकर सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता है।

आज के समय में लोग अक्सर केवल बुद्धिमत्ता को ही सफलता का मापदंड मान लेते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि अगर अपने भीतर मानवीय मूल्य और नैतिकता ही न बच पाए, तो वह बुद्धिमत्ता भी व्यर्थ हो जाती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई डाक्टर बहुत ही ज्ञानी है, लेकिन नैतिक कसौटियों पर वह कमजोर है और अपने पेशे का दुरुपयोग कर रहा है, तो वह समाज के लिए लाभकारी नहीं, बल्कि हानिकारक बन जाता है। इसी प्रकार, कोई नेता अत्यधिक बुद्धिमान तो हो सकता है, लेकिन अगर उसके लिए नैतिक मूल्य बेमानी हैं, तो उसके निर्णय और कार्य समाज को विनाश की ओर ले जा सकते हैं। इसलिए चरित्र की श्रेष्ठता बुद्धिमत्ता के समांतर ही महत्त्वपूर्ण है। यों भी, चरित्र निर्माण कोई एक दिन में होने वाली प्रक्रिया नहीं है। यह व्यक्ति के बचपन से ही आरंभ होती है और जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है। अच्छे संस्कार, सही मार्गदर्शन, उचित शिक्षा और जीवन के अनुभव चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। माता-पिता, शिक्षक और समाज का वातावरण किसी व्यक्ति के चरित्र को गढ़ने में प्रमुख योगदान देते हैं। अगर किसी बच्चे को बचपन से ही सच बोलने, दूसरों की मदद करने, बड़ों का आदर करने और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य रखने की शिक्षा दी जाती है, तो जीवन में चाहे जितनी भी बड़ी कठिनाइयां क्यों न आएं, वह अपने चरित्र से कभी समझौता नहीं करेगा।

दूसरी ओर, अगर केवल अकादमिक शिक्षा या तर्कशक्ति पर ही ध्यान दिया जाए और नैतिक शिक्षा की उपेक्षा कर दी जाए, तो व्यक्ति के अंदर स्वार्थ, अहंकार और भ्रष्ट आचरण पनप सकते हैं। वह अपने लाभ के लिए किसी हद तक जा सकता है, चाहे उससे दूसरों का कितना भी नुकसान क्यों न हो। यही कारण है कि आज के समय में शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा पर भी उतना ही जोर दिया जाना चाहिए। 'बुद्धिमत्ता बिना चरित्र अधूरा है, और चरित्र के बिना बुद्धिमत्ता खतरनाक।' यह मशहूर कथन बहुत गहराई से इस सच्चाई को प्रकट करता है कि दोनों का संतुलन होना आवश्यक है। केवल बुद्धिमान होना जीवन में सफलता नहीं दिला सकता, जब तक कि आपके पास अच्छा चरित्र न हो।

समाज में आज भी ऐसे बहुत से लोग मिलते हैं, जो उच्च शिक्षित नहीं हैं, लेकिन अपने उच्च नैतिक मूल्यों और नेक कार्यों से लोगों के दिलों में बसते हैं। वे अपने छोटे-छोटे कार्यों से दूसरों की मदद करते हैं, कठिन समय में दूसरों के साथ खड़े रहते हैं और बिना किसी स्वार्थ के सेवा करते। दूसरी ओर, कई बार ऐसे लोग भी मिलते हैं, जो उच्च पदों पर आसीन होकर भी अपने गलत निर्णयों से समाज को नुकसान पहुंचाते हैं। जीवन में केवल तर्कशील होना ही पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति को अपने चरित्र को भी उतना ही महत्त्व देना चाहिए। चरित्र ही वह नींव है, जिस पर जीवन की सच्ची सफलता टिकती है। बुद्धिमत्ता व्यक्ति को ऊंचाई तक पहुंचा सकती है, लेकिन चरित्र किसी व्यक्ति को वहां स्थायी रूप से टिकाए रखता है। अगर चरित्र कमजोर हो गया, तो एक दिन सारी सफलता धराशायी हो सकती है।

प्रकाश प्रदूषण एवियन गतिविधि को बढ़ाता है

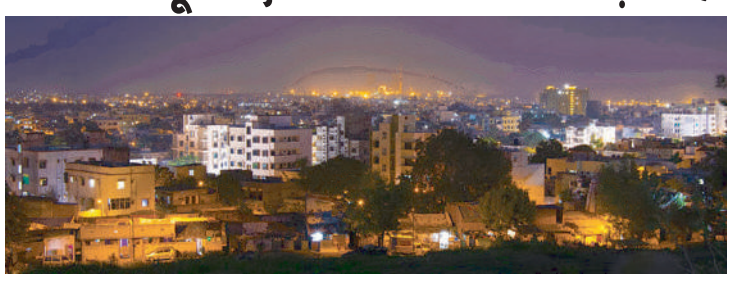

प्रकाश प्रदूषण पक्षियों की दैनिक गतिविधि को काफी बढ़ाता है, मुख्य रूप से उनके प्राकृतिक सर्कैडियन लय को बाधित करके। लाखों बर्डसॉन्ग डिटेक्शन से जुड़े एक वैश्विक अध्ययन में पाया गया कि, औसतन, प्रकाश प्रदूषण एवियन मुखर गतिविधि को लगभग 50 मिनट तक बढ़ाता है। चमकीले प्रज्ज्वलित क्षेत्रों में पक्षी सुबह पहले गाना शुरू करते हैं और बाद में शाम को जारी रखते हैं। यह घटना रात में कृत्रिम प्रकाश का सीधा परिणाम है प्रकाश-अंधेरे संकेतों के साथ हस्तक्षेप करती है जो पक्षी अपने दैनिक और मौसमी व्यवहारों को विनियमित करने के लिए उपयोग करते हैं। उनकी जैविक घड़ियां प्रकाश चक्रों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं, और कृत्रिम प्रकाश की उपस्थिति उन्हें यह सोचने में फंसा सकती है कि दिन जितना लंबा है। यहां बताया गया है कि प्रकाश प्रदूषण पक्षियों की गतिविधि को कैसे प्रभावित करता है:

विस्तारित टीकाकरण: अध्ययन बताते हैं कि प्रकाश-प्रदूषित क्षेत्रों में, पक्षी लगभग 18 मिनट पहले अपनी सुबह की कोरस शुरू करते हैं और लगभग 32 मिनट बाद शाम को गाते रहते हैं। यह एक ₹दिनश्र बनाता है जो उनके लिए लगभग एक घंटे लंबा है।

बाधित सर्कैडियन लयः रात में प्रकाश की निरंतर उपस्थिति पक्षियों की आंतरिक घड़ियों को बदल सकती है, जो हार्मोन स्राव, नींद पैटर्न और चयापचय सहित शारीरिक प्रक्रियाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को विनियमित करती है।

प्रजनन चक्र परिवर्तनः कृत्रिम प्रकाश मौसमी लय को भी बाधित कर सकता है, जिससे कुछ प्रजातियां पहले अपने प्रजनन चक्र शुरू कर सकती हैं। यह समस्याग्रस्त हो सकता है यदि प्रजनन का समय अब उनकी संतानों के लिए महत्वपूर्ण खाद्य स्रोतों की उपलब्धता के साथ संरेखित नहीं होता है।

प्रजाति-विशिष्ट प्रभावः प्रकाश प्रदूषण का प्रभाव सभी प्रजातियों में एक समान नहीं है। शोध बताते हैं कि बड़ी आंखों, प्रवासी आदतों और खुले घोंसले वाले पक्षी अधिक प्रभावित होते हैं।

संभावित परिणामः जबकि एक लंबा दिन फोर्जिंग जैसी गतिविधियों के लिए फायदेमंद लग सकता है, दीर्घकालिक प्रभाव पूरी तरह से समझ में नहीं आता है। यह नींद की कमी, समझौता प्रतिरक्षा समारोह, और समग्र स्वास्थ्य को कम कर सकता है। यह शोध वन्यजीवों पर मानव गतिविधि के दूरगामी और व्यापक प्रभाव को उजागर करता है, यहां तक कि शहर की रोशनी से चमक जैसे निष्क्रिय तरीकों से भी।

विजय गर्ग

मस्तिष्क अकेले काम नहीं कर रहा है - आपका शरीर पूरे समय इस पर रहा है

विजय गर्ग

आपका शरीर और मन अलग-अलग संस्थाएं नहीं हैं; वे एक एकल, परस्पर जुड़े हुए सिस्टम हैं, लगातार संवाद कर रहे हैं। यह सिर्फ एक दार्शनिक अवधारणा नहीं है - यह दशकों के वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा समर्थित है। आपके द्वारा अनुभव किया गया हर विचार, भावना और तनाव एक शारीरिक प्रतिक्रिया को ट्रिगर करता है, और बदले में, आपकी शारीरिक स्थिति आपकी मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है। संचार कैसे काम करता है यह निरंतर, दो-तरफ़ा संवाद सिस्टम के एक जटिल नेटवर्क के माध्यम से होता है, मुख्य रूप से तंत्रिका, अंतःस्रावी (हार्मोनल) और प्रतिरक्षा प्रणाली।

तंत्रिका तंत्रः एक उच्च गति राजमार्ग के रूप में अपने तंत्रिका तंत्र के बारे में सोचो। मस्तिष्क, कमांड सेंटर के रूप में कार्य करता है, रीढ़ की हड्डी के माध्यम से विद्युत संकेत भेजता है और आपके शरीर में हर कार्य को नियंत्रित करने के लिए नसों का एक विशाल नेटवर्क - सांस लेने और पाचन से लेकर आंदोलन और दर्द संवेदना तक। बदले में, संवेदी तंत्रिकाएं आपके शरीर से मस्तिष्क तक जानकारी भेजती हैं, जिससे यह वास्तविक समय में अपडेट होता है कि क्या हो रहा है।

एंडोक्राइन सिस्टमः यह प्रणाली अपने दूतों के रूप में हार्मोन का उपयोग करती है। जब आप तनाव महसूस करते हैं, उदाहरण के लिए, आपका मस्तिष्क ₹लड़ाई या उड़ानश्र प्रतिक्रिया को सक्रिय करता है, कोर्टिसोल और एड्रेनालाईन जैसे हार्मोन जारी करता है। ये हार्मोन आपके शरीर के माध्यम से बढ़ते हैं, जिससे आपकी हृदय गति बढ़ जाती है, आपकी मांसपेशियां तनावग्रस्त हो जाती हैं, और आपकी श्वास तेज हो जाती है। यह सिर्फ एक मानसिक भावना नहीं है - यह एक बहुत ही वास्तविक शारीरिक घटना है।

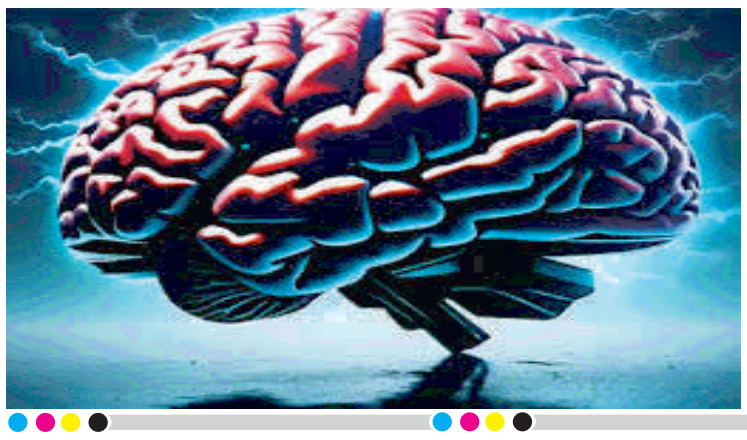

हवा में घुलते धूलकणों से बाधित सांसें

विजय गर्ग

दिल्ली की दमघोंटू हवा अब किसी एक मौसम की समस्या नहीं रही। सड़कों पर उठती धूल, निर्माण स्थलों से उड़ती रेत और प्रदूषण के बादल अब न सीमाओं में कैद हैं, न मौसम की चेतावनी में सिमटे हर वर्ष लगभग 200 करोड़ टन धूल वातावरण में घुल रही है और इसका असर दुनिया भर में 380 करोड़ से अधिक लोगों पर पड़ रहा है। ये आंकड़े चेतावनी नहीं, एक 'अनदेखे युद्ध' की घोषणा है, जहां दुश्मन हवा में घुला है और उसके हथियार हमारे फेफड़ों को निशाना बना रहे हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्लूएमओ) की रपट इस वैश्विक चुनौती की गंभीरता को और स्पष्ट करती है। इन धूलकणों का आकार चाहे जितना भी सूक्ष्म हो, इनका प्रभाव शरीर में गहराई तक जाता है। ये श्वसन तंत्र को स्थायी क्षति पहुंचाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व मौसम विज्ञान संगठन की रपटें अब साफ संकेत दे रही हैं कि धूल भरे तूफान अब प्राकृतिक घटनाएं नहीं, वैश्विक आपदा के रूप में सामने हैं, जिनका प्रभाव अब हर महाद्वीप, हर देश और हर नागरिक झेल रहा है। 'एअरबोर्न डस्ट बुलेटिन' के अनुसार, हर वर्ष लगभग डेढ़ सौ देशों के तैंतीस करोड़ से अधिक लोग धूल भरी आंधियों के प्रभाव में आते हैं। यह संकट न केवल मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डाल रहा है, बल्कि कृषि, जलवायु और वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर रहा है। हर वर्ष कई लाख लोगों की मृत्यु धूल से उत्पन्न स्वास्थ्य जटिलताओं के कारण होती है। आंकड़े भयावह हैं। दिल्ली जैसे शहरों में 'पार्टिकुलेट मैटर' (पीएम-10) और पीएम 2.5 के स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सीमा से कई गुना अधिक हैं। सांस लेना अब मुश्किल होता जा रहा है।

सवाल है कि क्या साफ हवा अब विशेषाधिकार बन रही है? यह सवाल अब केवल नीतिगत चर्चाओं का विषय नहीं रहा। यह हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा है। जब बच्चों को स्कूल जाते समय मास्क पहनना पड़ता है,

जब बुजुर्ग घर के भीतर भी हांफते हैं, तब यह मुद्दा सार्वजनिक स्वास्थ्य आपदा बन जाता है। डब्लूएमओ की रपट बताती है कि रेत और धूल की आंधियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2018 से 2022 के बीच करोड़ों लोग इन खतरनाक धूलकणों के संपर्क में आए। 'यूएस जियोलाजिकल सर्वे' और लैंसेट' की रपट से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2017 में अमेरिका में धूल के कारण भारी नुकसान हुआ, यह वर्ष 1995 की तुलना में चार गुना अधिक था। वर्ष 2024 में स्पेन के कैनरी द्वीप, मंगोलिया और पूर्वी एशिया में आए बड़े तूफानों ने में पीएम 10 का स्तर 1000 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर से भी ऊपर पहुंचा दिया।

दिल्ली में भी ऐसे आंकड़े कोई असामान्य नहीं। फर्क केवल इतना है कि वहां दस्तावेज बनते यहां चुप्पी साध ली जाती है। भारत में वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष होने वाले आर्थिक नुकसान का आकलन लगभग 5.5 लाख करोड़ रुपए किया गया है। यह नुकसान केवल आंकड़ों में नहीं झलकता, यह उन खेतों में दिखता है, जहां फसलें मुरझा रही हैं, उन नदियों में दिखता है जहां धूलकण गिर कर जल को विषैला बना रहे हैं और उन बच्चों की आंखों में दिखता है जो सांस लेने के लिए दवाओं पर निर्भर हो चुके हैं। खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार धूल भरी आंधियों वाले क्षेत्रों में फसल उत्पादन में 20 से 25 फीसद तक की गिरावट आती है।

भारत में अधिकृत आंकड़ों के अनुसार हर वर्ष लगभग 40 लाख से अधिक निर्माण स्थल सक्रिय रहते हैं, जो किसी न किसी रूप में धूल प्रदूषण बढ़ाते हैं। यह केवल एक पर्यावरणीय संकट नहीं, एक सामाजिक त्रासदी भी बन चुका है। सरकारों द्वारा राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) जैसी योजनाएं लाई गई हैं, जिनका उद्देश्य 2024 तक प्रमुख शहरों में प्रदूषण को 20 से 30 फीसद तक कम करना था। फिर भी अधिकांश स्वतंत्र रपटें यही दिखाती हैं कि इन योजनाओं का जमीनी क्रियान्वयन बेहद धीमा नीति और वास्तविकता के बीच जो खाई है, उसमें रोज नागरिक की सांसें डूब रही हैं। पारदर्शिता और स्थानीय भागीदारी की कमी इन योजनाओं को कागजी बना रही है।

और वायु प्रदूषण का प्रभाव केवल शरीर पर नहीं होता। यह मिट्टी की उर्वरता को घटाता है, जिससे खेती संकट में आती है। हवा में घुलने वाला यह जहर जल स्रोतों को भी विषैला बनाता है। गांवों और कस्बों में जहां प्रदूषण की निगरानी के कोई पुख्ता इंतजाम नहीं हैं, वहां यह और घातक हो जाता है। कुल मिला कर यह संकट अब त्रि- आयामी हो चुका है। स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था तीनों पर इसकी गहरी चोट है। जलवायु परिवर्तन, तापमान में वृद्धि, अनियमि वर्षा और मानव जनित गतिविधियां धूल के तूफानों की तीव्रता और आवृत्ति को बढ़ा रही हैं। यह मान लेना कि यह केवल प्राकृतिक आपदा एक प्रकार से बड़ी भूल होगी। इन तूफानों की उत्पत्ति में मानव की भूमिका स्पष्ट है जब जंगल काटे जाते हैं, जब निर्माण गतिविधियां नियंत्रण से बाहर होती हैं, जब रेगिस्तानी क्षेत्रों में हरित पट्टी योजना ठप पड़ती है, तब धूल अपना साम्राज्य फैलाती है।

अब समय आ गया है कि स्वच्छ हवा को अधिकार मानते हुए उसके संरक्षण की दिशा में ठोस कार्य किए जाएं। नीति निर्माण से लेकर जीवनशैली तक, हर स्तर पर बदलाव जरूरी है। हमें मास्क पहन कर जीने की आदत नहीं डालनी, हमें मास्क की आवश्यकता ही समाप्त करनी है। स्कूलों और कालेजों में पर्यावरणीय शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखना, उसे व्यवहार में उतारना होगा। नागरिकों को भी अपनी भूमिका निभानी होगी। चाहे वह गाड़ी का कम इस्तेमाल हो, कचरे का सही निस्तारण हो या वृक्षारोपण हो। सरकारों

जवाबदेही की मांग जरूरी है। जब तक नीति-निर्माता यह नहीं समझ स्वच्छ हवा मौलिक अधिकार है, तब तक बदलाव क कोई उम्मीद नहीं की जा सकती।

स्वच्छ हवा की यह लड़ाई केवल पर्यावरण की नहीं, नैतिकता की भी है। यह उस सभ्यता पर सवाल है जो विकास के नाम पर अपने ही जीवित है और जहरीले कणों के बीच अगर हमें तंतुओं को काट रही है। धूल, धुएं जीने की आदत डालनी पड़ रही है, तो हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि हमने अपने भविष्य की कीमत आज की सुविधा से चुका है। यह संकट कोई अचानक आई आपदा नहीं, जो हमारी चुप्पियों और उदासीनता की देन है। हवा कोई अदृश्य सुविधा नहीं, यह सजीव संसाधन है, जिसे बचाना हमारी जिम्मेदारी है। सवाल यह नहीं कि हम कब कार्रवाई करेंगे, सवाल यह है कि क्या तब भी कुछ बचा होगा, जब हम कार्रवाई के लिए तैयार होंगे? क्योंकि अगर हम अब भी नहीं चेते, तो वह दिन दूर नहीं जब धूल का यह साम्राज्य हमारी चेतना को इस हद तक जकड़ लेगा कि हम सवाल पूछना भी भूल जाएंगे। यह प्रश्न अब टालने योग्य नहीं तो क्या हम उस दिन का इंतजार कर रहे हैं?

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

अर्धनग्न मुजरे के दौर में गुम होती साहित्यिक स्त्रियाँ

इंस्टाग्राम और डिजिटल मीडिया का दौर है। यहाँ आकर्षण और तमाशा सबसे ज्यादा बिकते हैं। लेकिन समाज की आत्मा को बचाए रखने के लिए जरूरी है कि स्त्रियाँ फिर से साहित्य की ओर लौटें। इंस्टाग्राम का शोर कुछ समय बाद थम जाएगा,र साहित्य के शब्द अमर रहेंगे। साहित्य पढ़ने वाली स्त्रियाँ कभी गुम नहीं होतीं, वे हर उस किताब के पन्नों में जीवित रहती हैं जिसे कोई दिल से खोलता है।

-डॉ. प्रियंका सौरभ

आज के समय में जब हर हाथ में स्मार्टफोन और हर मन में लाइक्स व फॉलोअर्स की भूख पल रही है, तब साहित्य और किताबें पढ़ने वाली स्त्रियों का अस्तित्व कहीं पीछे छूटता जा रहा है। यह दौर इंस्टाग्राम रील्स, टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल मनोरंजन का है। यहाँ अर्धनग्न होकर मुजरा करने वाली छवियाँ सेकंडों में लाखों लोगों तक पहुँच जाती हैं, पर वहीं गंभीर साहित्य, कविता या आलोचना पढ़ने वाली स्त्रियों की आवाज़ मानो कहीं दबकर रह जाती है। यह केवल एक सामाजिक विडंबना नहीं बल्कि सांस्कृतिक संकट भी है।

सदियों से स्त्रियाँ साहित्य के माध्यम से समाज की आत्मा को संवेदनाओं और करुणा से सींचती रही हैं। महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा जैसी लेखिकाएँ न केवल साहित्य रचती थीं बल्कि स्त्री की अस्मिता और समाज की चेतना का प्रतीक भी थीं। लेकिन आज का समय उन्हें पढ़ने से अधिक उन्हें ₹कोट्स₹ बनाकर इंस्टाग्राम स्टोरी पर सजाने में व्यस्त है।

आज की पीढ़ी का बड़ा हिस्सा विजुअल कंटेंट में उलझा है। वीडियो और तस्वीरों की त्वरित खपत ने किताबों की धीमी, गहरी और आत्ममंथन कराने वाली दुनिया को पीछे धकेल दिया है। स्त्रियाँ, जो कभी किताबों में आत्मा का सहारा खोजती थीं, अब सोशल मीडिया पर ग्लैमराइज्ड आइडेंटिटी गढ़ने में मजबूर हो रही हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया स्त्रियों को मंच देता है, पर यह मंच अक्सर उनके शरीर को अधिक महत्व देता है, विचारों को नहीं। यही कारण है कि इंस्टाग्राम पर एक नृत्य या अर्धनग्न अभिनय लाखों लाइक्स पा लेता है, लेकिन किसी स्त्री द्वारा किया गया साहित्यिक विश्लेषण सैकड़ों पर भी नहीं पहुँचता।

साहित्य पढ़ने और रचने वाली स्त्रियाँ समाज में गहरी छाप छोड़ती थीं। वे अपने लिखे से व्यवस्था को चुनौती देती थीं, रिश्तों की नई परिभाषा गढ़ती थीं और स्त्री-पुरुष समानता की नई जमीन तैयार करती थीं। लेकिन आज, प्राथमिकताएँ बदल गई हैं। आधुनिक स्त्री अक्सर अपने को साबित करने के लिए सोशल मीडिया की दौड़ में शामिल हो जाती है। यहाँ सुंदरता और आकर्षण अधिक बिकते हैं, विचार और भावनाएँ कम। यह विडंबना है कि जिस साहित्य ने स्त्रियों को आवाज़ दी, वही साहित्य अब उनकी आवाज़ की प्रतीक्षा कर रहा है।

महादेवी वर्मा की कविताएँ स्त्री की करुणा, पीड़ा और सौंदर्य का ऐसा प्रतिरूप थीं, जिन्हें पढ़कर आत्मा झंकृत हो जाती थी। वे लिखती थीं—"मैं नीर भरी दुख की बदली..." उनकी कविताओं में स्त्री की आत्मा बोलती थी, पर आज वही आत्मा इंस्टाग्राम फिल्टर और बैकग्राउंड म्यूज़िक के शोर में दबती जा रही है। जहाँ पहले स्त्रियाँ समाज से कहती थीं कि "मेरी आवाज़ सुनो", आज वे मजबूर हैं यह कहने पर कि "मेरे डांस को लाइक करो।" यही सबसे बड़ा सांस्कृतिक पतन है।

हालाँकि यह कहना पूरी तरह उचित नहीं होगा कि साहित्य पढ़ने वाली स्त्रियाँ गायब हो गईं। वे अब भी मौजूद हैं, पर उनका दायरा सीमित हो गया है। पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों और छोटे-छोटे साहित्यिक मंचों पर अब भी स्त्रियाँ साहित्य पढ़ रही हैं, लिख रही हैं और चर्चा कर रही हैं। फर्क बस इतना है कि उनका स्वर उतना बुलंद नहीं है जितना सोशल मीडिया के ग्लैमरस कंटेंट का है। असल में समस्या प्लेटफॉर्म की भी है। इंस्टाग्राम का एल्गोरिद्म ही ऐसा है जो मनोरंजन और तड़क-भड़क को प्राथमिकता देता है। गंभीर साहित्य या लंबी पढ़ाई वहाँ ₹ट्रेंडिंग₹ नहीं बन पाती।

साहित्य पढ़ने का अर्थ है—अपने भीतर झाँकना, दूसरों की पीड़ा को समझना, और आत्मा को गहराई से महसूस करना। जब समाज साहित्य से दूर होता है, तो वह अपनी संवेदनशीलता भी खो देता है। स्त्रियों की करुणा और कोमलता ही समाज को संतुलित रखती हैं। लेकिन जब यही स्त्रियाँ केवल बॉडी शो तक सीमित हो जाएँ और आत्मा की गहराई को दरकिनार कर दें, तो समाज के संवेदनशील होने की उम्मीद भी घट जाती है।

इस स्थिति से निकलने के लिए जरूरी है कि परिवार और शिक्षा व्यवस्था किताबों के प्रति प्रेम जगाए। घर और स्कूलों में बच्चों, खासकर बेटियों को किताबें पढ़ने की आदत डालनी होगी। साहित्यकारों और प्रकाशकों को चाहिए कि वे सोशल मीडिया पर साहित्य को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करें। सरकार और समाज को साहित्य पढ़ने और लिखने वाली स्त्रियों को ज्यादा मंच देना चाहिए, ताकि उनकी आवाज़ दबे नहीं। स्त्रियों को आपस में साहित्यिक समूह और बुक क्लब बनाने चाहिए, जो एक-दूसरे को प्रेरित करें।

इतिहास गवाह है कि जब भी समाज अंधकार में डूबा, साहित्य ने ही राह दिखाई। और उस साहित्य में स्त्रियों की भूमिका हमेशा निर्णायक रही। चाहे वह मीरा हों, चाहे महादेवी, या फिर समकालीन स्त्रियाँ—उन्होंने अपने शब्दों से समाज की दिशा तय की। आज भी यदि स्त्रियाँ किताबों को गले लगाएँगी, तो आने वाली पीढ़ी को सिर्फ ₹फॉलोअर्स₹ और ₹लाइक्स₹ नहीं, बल्कि जीवन की गहरी समझ भी मिलेगी।

आज का निष्कर्ष यही है कि इंस्टाग्राम और डिजिटल मीडिया का दौर है। यहाँ आकर्षण और तमाशा सबसे ज्यादा बिकते हैं। लेकिन समाज की आत्मा को बचाए रखने के लिए जरूरी है कि स्त्रियाँ फिर से साहित्य की ओर लौटें। क्योंकि इंस्टाग्राम का शोर कुछ समय बाद थम जाएगा, पर साहित्य के शब्द अमर रहेंगे। साहित्य पढ़ने वाली स्त्रियाँ कभी गुम नहीं होतीं—वे केवल समाज की लापरवाही के कारण धुंधली दिखने लगती हैं। जब भी कोई किताब खोली जाएगी, वे फिर से जीवित हो उठेंगी।

अमेरिका फर्स्ट बनाम आत्मनिर्भर भारत

वैश्विक मंच पर एक नया तूफान मच गया है, और इसके केंद्र में हैं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, जिनकी आक्रामक व्यापार नीतियों ने विश्व व्यवस्था को झकझोर दिया है। २६ अगस्त को सोशल मीडिया पर दी गई एक सख्त चेतावनी में, ट्रंप ने उन देशों को कड़े परिणाम भुगतने की धमकी दी, जो अमेरिकी टेक कंपनियों पर डिजिटल सर्विस टैक्स (डीएसटी) या अन्य प्रतिबंधात्मक नियम लागू करते हैं। उनकी चेतावनी स्पष्ट थी, ऐसे भेदभावपूर्ण कदमों को न हटाने वाले देशों के निर्यात पर भारी टैरिफ और अमेरिकी प्रौद्योगिकियों, खासकर अत्याधुनिक चिप्स, के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाएगा। इस धमकी का निशाना विशेष रूप से भारत और ब्राजील जैसे उभरते आर्थिक शक्तियों पर है, जिन पर २७ अगस्त २०२५ से 50% का भारी-भरकम टैरिफ लागू होने वाला है। इस वैश्विक आर्थिक तनाव के बीच, भारत सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है, जो कूटनीतिक कुशलता, रणनीतिक दूरदर्शिता और वैश्विक सहयोग की भावना को रेखांकित करता है।

ट्रंप की यह चेतावनी उनकी "अमेरिका फर्स्ट" नीति का एक और सशक्त अध्याय है, जो वैश्विक व्यापार को दबाव और एकतरफा निर्णयों के बल पर नियंत्रित करने की उनकी रणनीति को उजागर करती है। 90 से अधिक देशों पर 10% से 50% तक के टैरिफ पहले ही थोपे जा चुके हैं, जिसमें भारत और ब्राजील को सर्वाधिक 50% टैरिफ का सामना करना पड़ रहा है। ट्रंप का दावा है कि डिजिटल टैक्स अमेरिकी टेक दिग्गजों जैसे गूगल, अमेजन, फेसबुक और एपल के खिलाफ भेदभावपूर्ण हैं। यह चेतावनी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि भू-राजनीतिक रणनीति की गहरी परतों से युक्त है। ट्रंप की नीतियां विश्व व्यापार संगठन जैसे बहुपक्षीय मंचों की भावना को चुनौती देती हैं, जो पारदर्शिता और आपसी सहमति पर आधारित व्यापार को बढ़ावा देते हैं। ऐसे में, ट्रंप का यह रुख वैश्विक सहयोग को कमजोर करने वाला और अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है, विशेष रूप से तब, जब भारत जैसे देश उनकी मांगों को पहले ही स्वीकार कर चुके हैं।

इसके विपरीत, भारत सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस चुनौती का जवाब एक ऐसी रणनीति से दिया है, जो न केवल कूटनीतिक बल्कि प्रेरणादायक भी है। भारत ने २०२५-२६ के बजट में डिजिटल सर्विस टैक्स, जिसे इक्वलाइजेशन लेवी के नाम से जाना जाता है, को समाप्त करने की घोषणा की थी, जो 1 अप्रैल २०२५ से प्रभावी हो चुकी है। यह कदम अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने और अनावश्यक तनाव से बचने की दिशा में एक समझदारी भरा प्रयास था। यह फैसला भारत की वैश्विक मंच पर सहयोगी और जिम्मेदार छवि को रेखांकित करता है, जो न केवल अपने हितों की रक्षा करता है, बल्कि वैश्विक व्यापार में संतुलन बनाए रखने की कोशिश भी करता है। फिर भी, ट्रंप का भारत पर 50% टैरिफ लगाने का निर्णय कई सवाल खड़े करता है। क्या यह टैरिफ वास्तव में डिजिटल टैक्स से संबंधित है, या इसके पीछे अन्य भू-राजनीतिक कारण हैं, जैसे भारत का रूस से तेल आयात, ब्रिक्स देशों के साथ बढ़ती साझेदारी, या भारत की आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से बढ़ते कदम?

मोदी सरकार की ताकत उसकी रणनीतिक दूरदर्शिता और लचीलेपन में निहित है। डिजिटल टैक्स को हटाने का फैसला इस बात का जीवंत प्रमाण है कि भारत वैश्विक व्यापार नियमों का सम्मान करता है और तनाव कम करने के लिए रचनात्मक कदम उठाने को तत्पर है। बावजूद इसके, ट्रंप का भारत पर टैरिफ लगाने का निर्णय उनकी नीतियों की मनमानी और दबाव की रणनीति को उजागर करता है। भारत ने वह मांग पहले ही पूरी कर दी थी, जिसे ट्रंप ने उठाया था, फिर भी इस टैरिफ की घोषणा से साफ है कि उनकी नीतियां केवल आर्थिक हितों तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और राजनीतिक एजेंडों से भी प्रेरित हैं। यह स्थिति न केवल भारत-अमेरिका संबंधों को तनावग्रस्त करती है, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और तकनीकी नवाचार पर भी गहरा प्रभाव डाल सकती है।

ट्रंप की नीतियों की आलोचना इसलिए अनिवार्य है, क्योंकि वे वैश्विक व्यापार की मूल भावना को चुनौती देती हैं। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंच बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि व्यापारिक नीतियां पारदर्शी, निष्पक्ष और आपसी सहमति पर आधारित होनी चाहिए। ट्रंप का यह एकतरफा और दबावपूर्ण कदम न केवल भारत जैसे सहयोगी देशों के साथ संबंधों में तनाव पैदा करता है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता का साया भी गहराता है। हालांकि, भारत जैसे देश, जो तकनीकी और आर्थिक विकास में अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ रहे हैं, ऐसे दबावों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। मोदी सरकार ने बार-बार सिद्ध किया है कि वह चुनौतियों का जवाब कूटनीतिक चातुर्य, आर्थिक नवाचार और आत्मनिर्भरता की अटल प्रतिबद्धता के साथ दे सकती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे क्रांतिकारी अभियानों के जरिए वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को अप्रतिम रूप से मजबूत किया है। ये नीतियां न केवल भारत को आर्थिक स्वावलंबन की ओर ले जा रही हैं, बल्कि वैश्विक व्यापार में भारत को एक सशक्त और सम्मानित शक्ति के रूप में स्थापित कर रही हैं। ट्रंप के भारी-भरकम टैरिफ के बावजूद, भारत ने वैकल्पिक बाजारों की खोज तेज कर दी है और ब्रिक्स जैसे मंचों के माध्यम से अपनी स्थिति को और सुदृढ़ किया है। यह दर्शाता है कि भारत न केवल दबाव का जवाब देने में सक्षम है, बल्कि वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है, जो चुनौतियों को अवसरों में बदलने की कला में माहिर है।

मोदी सरकार की नीतियां भारत को न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना रही हैं, बल्कि वैश्विक मंच पर एक जिम्मेदार और सहयोगी शक्ति के रूप में स्थापित कर रही हैं। डिजिटल टैक्स को हटाने का साहसिक निर्णय इस बात का जीवंत प्रमाण है कि भारत वैश्विक व्यापार नियमों का सम्मान करता है और अनावश्यक टकराव से बचने के लिए रचनात्मक कदम उठाने को तत्पर है। फिर भी, ट्रंप का भारत पर 50% टैरिफ थोपने का फैसला न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि उनकी नीतियों की मनमानी और दबाव की रणनीति को भी उजागर करता है। यह स्थिति भारत-अमेरिका संबंधों को तनावग्रस्त करने के साथ-साथ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और तकनीकी नवाचार पर गहरा प्रभाव डाल सकती है।

भारत की रणनीति और मोदी सरकार का नेतृत्व इस बात का सशक्त प्रमाण है कि चुनौतियों का सामना करने के लिए दृढ़ता के साथ-साथ कूटनीतिक दूरदर्शिता और सहयोगी भावना अपरिहार्य है। ट्रंप की दबावपूर्ण और एकतरफा नीतियों के बावजूद, भारत का जवाब संतुलित, रणनीतिक और प्रगतिशील है। यह समय है कि विश्व समुदाय मनमानी नीतियों का डटकर मुकाबला करे और भारत जैसे देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर एक समावेशी, पारदर्शी और समृद्ध वैश्विक भविष्य की नींव रखे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जब हम दूसरों के लिए जीते हैं, तभी जीवन सार्थक होता है

मानव जीवन की सबसे बड़ी सुंदरता केवल तकनीकी प्रगति, भौतिक सुख-सुविधाओं या बाहरी उपलब्धियों में नहीं छिपी होती, बल्कि वह इस बात में निहित होती है कि इंसान दूसरे इंसान के साथ कैसा व्यवहार करता है। जब हम अपने व्यवहार में दया, सहानुभूति और संवेदनशीलता शामिल करते हैं, तभी समाज का असली विकास संभव होता है। हर इंसान चाहता है कि उसे समझा जाए, उसकी भावनाओं का सम्मान किया जाए और मुश्किल घड़ी में कोई उसका साथ दे। यही कारण है कि २८ अगस्त को "राष्ट्रीय विचारशील दिवस" मनाया जाता है, ताकि हमें यह याद दिलाया जा सके कि जीवन केवल स्वयं तक सीमित नहीं है, बल्कि दूसरों के प्रति करुणा और सहृदयता ही हमें पूर्णता देती है। यह दिन हमें अपने भीतर की मानवता को फिर से जागृत करने और इसे अपने दैनिक जीवन में उतारने की प्रेरणा देता है।

आज की दुनिया में, जहां भागदौड़, प्रतिस्पर्धा और आत्मकेंद्रित जीवनशैली ने इंसान को संवेदनहीन बनाने की ओर धकेल दिया है, राष्ट्रीय विचारशील दिवस हमें रुककर सोचने का अवसर देता है। विचारशीलता का अर्थ केवल किसी के प्रति दया दिखाना ही नहीं है, बल्कि उनकी भावनाओं को समझने, उनकी परिस्थितियों का सम्मान करने और उनके दुख-दर्द में साथ देने का प्रयास करना भी है। एक छोटा-सा दयालु कार्य, जैसे किसी अजनबी को मुस्कान देना, किसी परेशान व्यक्ति को सुनना, किसी बुजुर्ग की मदद करना या किसी जरूरतमंद को सहारा देना, भले ही साधारण लगे, लेकिन इसका प्रभाव गहरा और लंबे समय तक रहने वाला हो सकता है। यह दिवस हमें यही सिखाता है कि छोटे-छोटे प्रयासों से हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

राष्ट्रीय विचारशील दिवस का मूल उद्देश्य हमें यह याद दिलाना है कि मानवता का आधार सहानुभूति और करुणा है। यह दिन हमें यह सिखाता है कि हर रिश्ता—चाहे वह परिवार, दोस्तों, सहकर्मियों या अजनबियों के साथ हो—तभी मजबूत होता है, जब उसमें आपसी समझ और सम्मान हो। अक्सर हम सोचते हैं कि समाज में बदलाव लाने के लिए बड़े-बड़े कदम उठाने पड़ते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि छोटी-छोटी दयालु आदतें ही समाज को बेहतर बनाती हैं। यदि हर व्यक्ति रोज़ाना एक छोटा-सा नेक काम करने का संकल्प ले, तो समाज में नकारात्मकता, तनाव और अलगाव की जगह प्रेम और एकता का वातावरण बन सकता है।

यह दिन हमें न केवल दूसरों के प्रति विचारशील होने की प्रेरणा देता है, बल्कि खुद के प्रति भी संवेदनशील रहने की सीख देता है। आधुनिक जीवन की आपाधापी में हम अक्सर अपनी भावनाओं और मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज कर देते हैं। तनाव, अवसाद और अकेलापन आज की दुनिया में आम समस्याएं बन चुकी हैं। राष्ट्रीय विचारशील दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने लिए भी समय निकालना चाहिए, अपनी भावनाओं को समझना चाहिए और अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। जब हम स्वयं के साथ संवेदनशील होंगे, तभी हम दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति दिखा पाएंगे। यह एक तरह का आंतरिक संतुलन है, जो हमें न केवल बेहतर इंसान बनाता है, बल्कि हमारे आसपास के लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनता है।

शिक्षा और बच्चों के जीवन में इस दिन का विशेष महत्व है। यदि बच्चों को बचपन से ही दया, सहानुभूति और विचारशीलता की शिक्षा दी जाए, तो वे बड़े होकर न केवल बेहतर इंसान बनेंगे, बल्कि समाज के लिए जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक भी बनेंगे। स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों में इस दिन को मनाकर बच्चों को यह सिखाया जा सकता है कि जीवन में सफलता का मतलब केवल अच्छे अंक या करियर में उपलब्धियां हासिल करना नहीं है, बल्कि दूसरों के प्रति सहृदयता और मदद का भाव रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बच्चों को छोटी-छोटी गतिविधियों, जैसे सामुदायिक सेवा, जरूरतमंदों की मदद या पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे न केवल उनकी मानसिकता सकारात्मक होगी, बल्कि वे समाज में सकारात्मक बदलाव के वाहक बनेंगे।

इतिहास में कई ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपनी विचारशीलता और करुणा से समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाए। महात्मा गांधी का अहिंसा और सत्य का सिद्धांत, मदर टेरेसा की निस्वार्थ सेवा, और मार्टिन लूथर किंग जूनियर का समानता के लिए संघर्ष—ये सभी उदाहरण हमें दिखाते हैं कि विचारशीलता और सहानुभूति से दुनिया को बेहतर बनाया जा सकता है। राष्ट्रीय विचारशील दिवस हमें इन महान हस्तियों के आदर्शों को याद करने और उन्हें अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है। यह दिन हमें यह एहसास कराता है कि शक्ति, धन या अधिकार से नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और करुणा से ही समाज में सच्चा बदलाव लाया जा सकता है।

आधुनिक युग में सोशल मीडिया और डिजिटल दुनिया ने लोगों को जोड़ने का एक नया मंच तो दे दिया है, लेकिन इसके साथ ही यह भी सच है कि वास्तविक संवेदनशीलता और सहानुभूति का स्तर कम होता जा रहा है। लोग सोशल मीडिया पर किसी की पोस्ट को लाइक या कमेंट तो कर देते हैं, लेकिन जब वास्तविक जीवन में किसी की मदद की बात आती है, तो बहुत कम लोग आगे बढ़कर कुछ करते हैं। राष्ट्रीय विचारशील दिवस हमें इस आभासी दुनिया से बाहर निकलकर वास्तविक जीवन में दूसरों के प्रति संवेदनशील होने का संदेश देता है। यह हमें याद दिलाता है कि एक छोटा-सा कार्य, जैसे किसी को सुनना, किसी की मदद करना या किसी के साथ समय बिताना, डिजिटल लाइक्स से कहीं अधिक मूल्यवान है।

सच्ची खुशी तब मिलती है, जब हम किसी और के चेहरे पर मुस्कान ला पाते हैं। जब हम किसी की मदद करते हैं, तो उसकी आंखों में चमकने वाली राहत और संतोष हमारी आत्मा को सुकून देता है। राष्ट्रीय विचारशील दिवस हमें यही सिखाता है कि जीवन का असली सुख दूसरों के लिए कुछ करने में है। यह दिन हमें यह भी बताता है कि चाहे हम किसी भी धर्म, जाति, संस्कृति या सामाजिक पृष्ठभूमि से हों, मानवता की भाषा एक ही है—करुणा और सहानुभूति।

राष्ट्रीय विचारशील दिवस केवल एक तारीख नहीं है, बल्कि यह एक विचारधारा है, एक जीवनशैली है। यह हमें यह सिखाता है कि हमें हर दिन थोड़ा-सा समय दूसरों के लिए निकालना चाहिए, उनकी भावनाओं को समझना चाहिए और उनके जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह दिन हमें यह सवाल पूछने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हम वास्तव में विचारशील हैं? अगर हां, तो हमें इसे और गहरा करना चाहिए, और अगर नहीं, तो यह बदलाव का सही समय है। हम संकल्प लें कि हम न केवल इस दिन, बल्कि हर दिन अपने व्यवहार में दया, सहानुभूति और विचारशीलता को शामिल करेंगे। यही वह रास्ता है, जो हमें और हमारे समाज को सही मायनों में समृद्ध और सार्थक बनाएगा।

आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

डिप्टी कमिश्नर अमृतसर बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए टीमों के साथ मौके पर पहुँचे

सम्पूर्ण प्रशासन हर पीड़ित की मदद में जुटा एन .डी .आर .एफ . की टीमें भी मौके पर पहुँचीं (डिप्टी कमिश्नर) श्रीमती साक्षी साहनी

अमृतसर, 27 अगस्त (साहिल बेरी)

अजनाला क्षेत्र के गाँवों में पानी का स्तर बढ़ने के कारण ज़िला प्रशासन की ओर से लोगों की मदद के लिए सुबह से ही राहत कार्य शुरू कर दिए गए हैं। डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी, जो कि रात 1 बजे अजनाला धुसी बांध का दौरा कर लौटे थे, आज सुबह 8 बजे ही बांध टूटने की खबर मिलते ही प्रभावित क्षेत्रों में पहुँच गए। उन्होंने स्वयं राहत कार्यों की कमान संभाली। उनके साथ अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता और ज़िला पुलिस प्रमुख श्री मनिंदर सिंह भी सुबह से ही राहत एवं बचाव कार्यों में जुटे हुए हैं।

इस संबंध में पत्रकारों से बातचीत करते हुए डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने बताया कि पानी का स्तर लगातार बढ़ रहा है और लगभग 20 गाँवों में पानी प्रवेश कर चुका है। उन्होंने बताया कि एन.डी.आर.एफ. की टीमें भी राहत कार्य के लिए पहुँच चुकी हैं और नावों के माध्यम से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया जा रहा है।

डिप्टी कमिश्नर ने जानकारी दी कि अजनाला क्षेत्र के लगभग 20 गाँव पानी की चपेट में आ चुके हैं। उन्होंने बताया कि बठिंडा से एन.डी.आर.एफ. की एक और टीम रवाना हो चुकी है और सेना की मदद भी लोगों को बचाने के लिए पहुँच रही है। डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि कल रात से ही पूरा प्रशासन, मशीनरी सहित, यहाँ मौजूद है और लगातार लोगों की मदद कर रहा है। उन्होंने बताया कि स्थानीय लोग भी प्रशासन के साथ मिलकर मदद कर रहे हैं।

डिप्टी कमिश्नर ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे देर न करें और नावों के माध्यम से सुरक्षित स्थानों पर पहुँच जाएँ। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रशासन हर प्रकार की सहायता करेगा। डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि पानी का स्तर धीरे-धीरे घटेगा, लेकिन सभी को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर एस.एस.पी. देहात श्री मनिंदर सिंह, एस.डी.एम. श्री रविंदर अरोड़ा समेत अन्य प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

वरिष्ठ कवि डॉ. 'मानव' को मिला अटलबिहारी वाजपेयी राष्ट्रीय कविता-पुरस्कार

मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल ने किया पुरष्कृत

नारनौल। वरिष्ठ कवि डॉ. रामनिवास 'मानव' को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल द्वारा एक लाख का अटलबिहारी वाजपेयी राष्ट्रीय कविता-पुरस्कार (२०२२) प्रदान किया गया है। अकादमी द्वारा भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित एक भव्य सम्मान-समारोह में संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन के संचालक एनपी नामदेव, सुप्रसिद्ध उद्घोषक पद्मश्री सुशील दोषी और अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे ने शॉल, श्रीफल, सम्मान-पत्र और पुरस्कार-राशि का चैक भेंट कर उन्हें पुरस्कृत किया।

उल्लेखनीय है कि डॉ. 'मानव' समकालीन दौर के एक सशक्त क्रांतदर्शी कवि हैं। इनकी विभिन्न विधाओं की चौंसठ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें सत्रह काव्य-कृतियाँ शामिल हैं। डॉ. 'मानव' ने काव्य की लगभग एक दर्जन विधाओं में लिखा है, लेकिन इन्हें सर्वाधिक ख्याति दोहाकार के रूप में मिली है। हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, हिंदी कल्चरल सोसायटी, टोक्यो (जापान), नेपाल वांग्मय परिषद्, काठमांडू और महाकाली साहित्य संगम, कंचनपुर (नेपाल) सहित देश-विदेश की लगभग डेढ़ सौ प्रमुख संस्थाओं द्वारा पुरष्कृत-सम्मानित डॉ. 'मानव' की विविध रचनाएँ देश के अनेक बोर्डों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल हो चुकी हैं। इनकी विविध रचनाएँ विश्व की अनेक प्रमुख भाषाओं में अनूदित चुकी हैं तथा इनके साहित्य पर इक्यावन बार एमफिल, बाईस बार पीएचडी और एक बार डीलिट् हो चुकी है। वर्तमान में सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) में प्रोफेसर एवं डीन, कल्चरल अफेयर्स के रूप में कार्यरत डॉ. 'मानव' को इस विशिष्ट उपलब्धि हेतु भारत, नेपाल, यूएई, कतर, न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया, मॉरिशस, घाना, सूरीनाम, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, नीदरलैंड, स्वीडन और बुल्गारिया सहित दो दर्जन देशों के साहित्यकारों और साहित्यानुरागी विद्वानों ने बधाई दी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: शताब्दी वर्ष की यात्रा और समाज में सार्थक योगदान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य केवल संगठन तक सीमित नहीं है। यह समाज में नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को मजबूत करने, प्रत्येक व्यक्ति में अनुशासन और समर्पण विकसित करने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का कार्य करता है। संघ का दृष्टिकोण समावेशी है; यह किसी धर्म, जाति या समूह के विरोध में नहीं है। हिन्दू शब्द का अर्थ केवल धर्म नहीं, बल्कि जिम्मेदारी, भक्ति और समाज के प्रति प्रतिबद्धता है। संघ समाज को गुटबंदी से मुक्त कर, विविधता में एकता स्थापित करने का कार्य करता है। शताब्दी यात्रा इस समर्पण और संगठन की पुष्टि है।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

संगठन प्रमुख डॉ. मोहन भागवत के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिवसीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया। यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि संघ की विचारधारा, उसकी कार्यपद्धति और समाज-निर्माण यात्रा का जीवंत प्रदर्शन था। संघ का निर्माण भारत को केंद्र में रखकर हुआ और इसका उद्देश्य देश को विश्वगुरु बनाने में योगदान देना है। संघ की प्रार्थना "भारत माता की जय" केवल शब्द नहीं, बल्कि कार्य और समर्पण की प्रेरणा है। संघ का निर्माण धीमी और सतत प्रक्रिया का परिणाम है, जो समय की कसौटी पर खरा उतरा।

संघ भले ही 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग करता है, लेकिन इसका मर्म केवल धर्म तक सीमित नहीं है। इसमें समावेश, मानवता और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना निहित है। संघ का उद्देश्य किसी विरोध या प्रतिस्पर्धा के लिए खड़ा होना नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को संगठित करके देश की एकता बनाए रखना है। संघ का कार्य स्वयंसेवकों के माध्यम से संचालित होता है, और यह कार्य नए स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देने, उनमें नेतृत्व और जिम्मेदारी विकसित करने का अवसर प्रदान करता है।

राष्ट्र की अवधारणा सत्ता या सरकार से परिभाषित नहीं होती। भारतीय परंपरा में राष्ट्र का अर्थ संस्कृति, आत्मचिंतन और सामाजिक चेतना से जुड़ा है। इतिहास की ओर देखने पर यह स्पष्ट होता है कि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम असफल रहा, लेकिन इसने भारतीय समाज में नई चेतना और आत्म-जागरूकता को जन्म दिया। इसके बाद कांग्रेस का उदय हुआ, जिसने राजनीतिक समझ और सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। स्वतंत्रता के बाद समाज में उपजी असमानताओं और कुरीतियों को दूर करने की चुनौती बनी रही। इसी आवश्यकता ने संघ की स्थापना और उसकी भूमिका को जन्म दिया।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और अन्य महापुरुषों ने समाज के दुर्गुणों को दूर करने और संपूर्ण समाज के संगठन की आवश्यकता को पहचाना। 1925 में संघ की स्थापना इस दृष्टि से हुई कि समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य मजबूत हों और राष्ट्र निर्माण में योगदान सुनिश्चित हो। 'हिन्दू' शब्द केवल धर्म नहीं, बल्कि जिम्मेदारी, समर्पण और समावेश का प्रतीक है। इसमें किसी को अलग करने या विरोध करने का भाव नहीं, बल्कि सबको जोड़ने और समाज को संगठित करने का उद्देश्य निहित है।

भारत का स्वभाव सहयोग और समन्वय का है, संघर्ष का नहीं। उसकी एकता भूगोल, संसाधनों और आत्मचिंतन परंपरा में निहित है। बाहर की ओर देखने के बजाय भीतर झाँकने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी में एक ही तत्व है, चाहे वह अलग-अलग रूपों में क्यों न प्रकट हो। यही कारण है कि भारत माता और पूर्वज हमारे लिए पूजनीय हैं। जो व्यक्ति भारत माता और अपने पूर्वजों का सम्मान करता है, वही सच्चा हिन्दू है। शब्द बदल सकते हैं, लेकिन भक्ति और श्रद्धा की भावना समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ती है।

समाज में धीरे-धीरे लोग संघ और हिन्दू शब्द के अर्थ को समझने लगे हैं। जीवन की गुणवत्ता बेहतर होने से लोग अपने मूल परंपराओं की ओर लौटते हैं। संघ किसी को हिन्दू होने के लिए बाध्य नहीं करता; उसका उद्देश्य समाज के समग्र संगठन और राष्ट्र निर्माण में योगदान देना है। संघ किसी धर्म, जाति या समूह के खिलाफ नहीं है, बल्कि समावेशी दृष्टि से सभी को जोड़कर समाज को संगठित करता है।

संघ कार्य केवल संगठन तक सीमित नहीं है। उसका लक्ष्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भीतर नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास करना है। समाज में जागरूकता और अनुशासन लाना संघ का प्रमुख उद्देश्य है। संघ की कार्यपद्धति में व्यक्तिगत समर्पण और अनुशासन का विशेष महत्व है। प्रत्येक स्वयंसेवक संघ की मूल भावना और कार्य शैली को आत्मसात करता है और समाज में इसे लागू करता है। संघ का लक्ष्य यह है कि समाज में गुटबंदी न हो, बल्कि सभी को संगठित किया जाए और देश में एकता कायम रहे।

भारत की विविधता में एकता उसकी असली पहचान है। विभिन्न भाषा, धर्म, संस्कृति और परंपराओं के बावजूद भारत की पहचान उसकी आत्मा, संस्कृति और पूर्वजों के प्रति सम्मान में निहित है। संघ का उद्देश्य इस एकता को बनाए रखना और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इसमें सहभागी बनाना है। संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण, समाज उत्थान और राष्ट्र निर्माण तीनों स्तरों पर कार्य करता है।

संघ के माध्यम से समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत किया जा रहा है। संघ कार्यकर्ताओं के माध्यम से समाज में अनुशासन, समर्पण और सेवा भाव का संचार करता है। संघ का उद्देश्य केवल स्वयंसेवकों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग तक इसका प्रभाव पहुँचना है। संघ की कार्यशैली में व्यक्तिगत प्रयास और संगठनात्मक दृष्टि का संतुलन बना रहता है। संघ का लक्ष्य यह है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों को समझे और राष्ट्र निर्माण में योगदान करे।

व्याख्यानमाला ने संघ की स्थापना, हिन्दू शब्द के अर्थ, संगठनात्मक दृष्टि, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया पर स्पष्ट प्रकाश डाला। संघ का उद्देश्य किसी के विरोध में नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान में योगदान देना है। संघ की कार्यशैली, व्यक्तिगत समर्पण और संगठनात्मक दृष्टि समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

रेल यात्रियों के जान से खिलवाड़ के कारण धनबाद मंडल के मुख्य लोकों निरीक्षक बर्खास्त

यात्री जीवन सुरक्षा को लेकर ज़ीरो टोलरेंस नीति लेकर चलता है भारतीय रेल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। अनियमितता, सुरक्षा में लापरवाही तथा यात्रियों की जान से खिलवाड़ करने के मामले में दोषी पाये गये रेलवे के मुख्य लोको निरीक्षक संजय सिंह को बर्खास्त कर दिया गया है. धनबाद डिवीजन के सीनियर डीईई (ओपी) 20 अगस्त को यह आदेश जारी किया. संजय सिंह धनबाद मंडल के टोरी में कार्यरत है. संजय सिंह पर यह कार्रवाई कोडरमा में पदस्थापना के दौरान लोको पायलटों के साइन ऑन ड्यूटी बुकिंग में अनियमितता पर की गयी है.

सीनियर डीईई (ओपी) की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि अनुशासन एवं अपील की जांच के बिंदुओं के विस्तृत निष्कर्ष पर विचार कर यह पाया गया कि सीएलआइ पर लगाये गये आरोपों के दोषी हैं. मुख्य क्रू नियंत्रक कोडरमा के रूप में कार्य करने के दौरान कोडरमा में कार्यरत सहायक लोको पायलटों के बुकिंग में अनियमितता बरती गईं. घटना 26 फरवरी की है. कोडरमा सीएलआई ने लोको पायलट रंजन कुमार को यह सलाह दिया था कि वह अपना साइन ऑन ड्यूटी अन्य व्यक्ति से करा लें. रंजन ने स्वयं साइन ऑन ड्यूटी करने के बदले दूसरे से कराया जो नियम विरूद्ध है. यह कृत्य रेल कार्य के प्रति संरक्षा एवं सुरक्षा की दृष्टिकोण से संपूर्ण लापरवाही को दर्शाता है. ड्यूटी में लापरवाही के कारण अनुशासनिक कार्रवाई के तौर पर रेल सेवा से बर्खास्त किया जाता है जो तत्काल प्रभाव से प्रभावी है.

उधर बर्खास्त किए गए सीएलआइ से कहा गया है कि रेल आवास खाली कर रेल प्रशासन को यथाशीघ्र सौंप दें. यदि 20 सितंबर तक आवास खाली नहीं किया जाता है तो रेल आवास के अनाधिकृत उपयोग व कब्जे के लिए रेल प्रशासन के प्रति उत्तरदायी होंगे. यदि कार्रवाई के विरुद्ध अपील करना चाहते हैं तो 45 दिनों के अंदर अपीलीय प्राधिकारी को उचित माध्यम से अपील कर सकते हैं.

रेलवे में 'साइन ऑन ड्यूटी' सिर्फ एक उपस्थिति दर्ज कराने की औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह सुरक्षा का पहला और सबसे अहम कदम है. जब कोई लोको पायलट (ट्रेन चालक) अपनी ड्यूटी शुरू करता है, तो उसे एक रजिस्टर में हस्ताक्षर करना होता है, जिसे 'साइन ऑन' कहते हैं. यह सुरक्षा की गारंटी होती है. इस प्रक्रिया के दौरान, ड्यूटी पर तैनात अधिकारी यह सुनिश्चित करता है कि लोको पायलट शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह फिट है. क्या वह बीमार तो नहीं है? क्या उसने किसी मादक पदार्थ का सेवन तो नहीं किया? ये सभी जांचें यात्रियों की सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी हैं.

किसी और से 'साइन ऑन' कराना रेलवे नियमों और सुरक्षा प्रोटोकॉल का उल्लंघन बताया जाता है. इस मामले में रेलवे किसी तरह की लापरवाही को स्वीकार्य नहीं करता है. क्योंकि यह सीधे तौर पर यात्रियों की जान से खिलवाड़ है और रेलवे ऐसे मामलों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाता है. यही कारण है कि सीएलआई को सीधे तौर पर इस चूक के लिए बर्खास्त कर दिया गया है.

झारखंड जमीन घोटाले में फिर एक रिटायर्ड आईएएस पहुंचा काल कोठरी

जमीन अवैध कारोबार का पर्याय बना झारखंड , अठारह साल पुरानी मामले पर एसईबी ने चलाया डंडा

कार्तिक कुमार परिच्छा , स्टेट हेड - झारखंड

रांची, बिहार सरकार से लेकर 24 साल पुरानी झारखंड सरकार में जमीन घोटाले का अंबार है । यहां भू राजस्व से जूडे तमाम कार्यालय ,न्यायालय उच्चस्तरीय जांच व कार्रवाई मांग रही है ।इसी क्रम में पुनः झारखंड के हजारीबाग भूमि घोटाले में सेवानिवृत्त आइएएस अधिकारी विनोद चंद्र झा को मंगलवार भ्रष्टाचार निवारण ब्यूरो की टीम ने रांची के धुर्वा स्थित साईं सिटी से गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तारी के बाद उन्हें हजारीबाग जेल भेज दिया गया। इससे पहले इसी मामले में तत्कालीन हजारीबाग उपायुक्त रहे आइएएस विनय चौबे को भी एसीबी ने गिरफ्तार किया था।

वह वर्तमान में रांची जेल में बंद हैं। एसीबी के अनुसार यह भूमि घोटाला लगभग 18 वर्ष पुराना है। उस समय विनोद चंद्र झा समाज कल्याण पदाधिकारी के साथ भू-अर्जन पदाधिकारी का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे थे।

इसी दौरान कथित घोटाले को अंजाम दिया गया। जांच में पुख्ता साक्ष्य मिलने के बाद एसीबी ने प्राथमिकी कर कार्रवाई तेज कर दी थी। बताते चलें कि शराब घोटाले में पहले से जेल में बंद विनय चौबे को भी इसी भूमि घोटाले में रिमांड पर लिया गया था ।शराब घोटाले में जमानत मिलने के बावजूद वह इस मामले के कारण जेल से बाहर नहीं आ सके हैं ।एसीबी ने संकेत दिया है कि जांच अभी आगे बढ़ेगी और कई अन्य लोगों की संलिप्तता उजागर हो सकती है।

यह घोटाला 2008-2009 का है। तब हजारीबाग की एक जमीन की प्रकृति बदलकर उसे बेच दिया गया। उस समय भू-अर्जन पदाधिकारी विनोद चंद्र झा और जिला उपायुक्त विनय चौबे थे ।जो वर्तमान में होटवार जेल में बंद हैं। वर्ष 2005-2007 के दौरान विनय चौबे हजारीबाग के उपायुक्त थे, जबकि विनोद चंद्र झा समाज कल्याण पदाधिकारी और साथ ही खासमहल पदाधिकारी के प्रभार में थे।

एसीबी की जांच में सामने आया है कि इस अवधि में हजारीबाग की खास महल जमीन के फर्जी कागजात तैयार कर कई निजी लोगों को अवैध लाभ पहुंचाया गया। लगभग 18साल बाद एसीबी ने एफ आई आर दर्ज किया फिर कारवाई की है।

ये हैं प्रेरणादायक जीवन सूत्र !

जीवन प्रकृति का अनमोल उपहार है। वास्तव में, यदि हम जीवन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण की बात करें तो जीवन वह अवस्था है, जिसमें जैविक तंत्र ऊर्जा का उपयोग करते हैं, बढ़ते हैं, प्रजनन करते हैं, अनुकूलन करते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं। यहां प्रश्न यह उठता है कि आखिर जीवन का उद्देश्य क्या है? केवल जीना या किसी बड़े उद्देश्य को पाना? वास्तव में जीवन में कोई पूर्व निर्धारित अर्थ नहीं होता और मनुष्य खुद ही अपने जीवन को अर्थ देता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि जीवन का कोई अन्तर्निहित अर्थ नहीं है; सब कुछ अस्थायी और क्षणिक है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण की बात करें तो जीवन आत्मा की एक यात्रा है; पुनर्जन्म और कर्म के चक्र का हिस्सा है ।बौद्ध धर्म के अनुसार जीवन दुःखों से भरा है; मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करना लक्ष्य है। ईसाई/इस्लाम धर्म के अनुसार जीवन एक परीक्षा है, जिसके बाद परमात्मा के पास जाना है। वैसे देखा जाए तो हर व्यक्ति के लिए जीवन का अर्थ अलग हो सकता है। मसलन,किसी के लिए यह परिवार है तो किसी के लिए यह सेवा या त्याग है ।किसी के लिए यह उपलब्धियाँ और सफलता है तो किसी के लिए आत्म-अन्वेषण। वास्तव में सच तो यह है कि जीवन एक यात्रा है, कुछ सीखने की, कुछ खोने की, और कुछ पाने की। इसमें हर क्षण अनमोल है, चाहे वो ख़ुशी हो या पीड़ा। जीवन का अर्थ शायद जीने में ही छुपा है-पूर्ण रूप से, सच्चे मन से। बहरहाल,यह लेखक कुछ समय पहले एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में निधन से पहले एक धनकुबेर का आमजन के नाम एक सन्देश को पढ़ रहा था। उसमें जीवन की सच्चाइयों को उजागर किया गया है। मसलन, जीवन में पैसा, धन-संपत्ति, ऐश्वर्य एक सत्य है,जिसका मनुष्य उपयोग करता है लेकिन पैसे, धन-संपत्ति और पहचान पर गर्व मृत्यु से पहले झूठा और बेकार हो जाता है,यह भी एक कड़वा सच है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हमें खोई हुई भौतिक वस्तुएं मिल सकती हैं, लेकिन एक चीज है जो खो जाने पर भी नहीं मिलती और वह है जीवन। हम जीवन के किसी भी चरण में हों, समय के साथ हमें उस दिन का सामना करना ही पड़ेगा जब दिल बंद हो जाएगा। अपने परिवार, जीवन साथी और दोस्तों से प्यार करें। उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, उनके साथ धोखा ना करें। बेईमानी या विश्वासघात कभी ना करें। हमें यह याद रखना चाहिए कि घड़ी कितनी ही महंगी और सस्ती क्यों न हो,सब समय एक ही दर्शाती हैं ।हम कितनी ही महंगी या सस्ती कार चलाएं, आखिर में हम एक ही मंजिल पर पहुंचते हैं ।इसी प्रकार से घर कितना ही बड़ा व छोटा क्यों न हो, अकेलापन सब जगह समान है। कहना ग़लत नहीं होगा कि सच्ची आंतरिक खुशी इस दुनिया की भौतिक वस्तुओं से नहीं मिलती। फर्स्ट क्लास या इकॉनॉमी क्लास में उड़ान भरें, अगर विमान नीचे गिरता है तो आप भी उसके साथ नीचे ही जाएंगे। वास्तव में जीवन को बेहतर समझने के लिए तीन स्थान है-अस्पताल, जेल और श्मशान। अस्पताल में हम समझेंगे कि स्वास्थ्य से अच्छा कुछ नहीं है। जेल में हम देख सकते हैं कि आजादी कितनी अमूल्य है और शमशान में अहसास होता है कि जीवन कुछ नहीं है ।इसलिए मनुष्य को यह चाहिए कि वह विनम्र बनें। हमें जो मिला है उसके लिए अपने माता-पिता का धन्यवाद करें। सभी से प्रेमपूर्ण व अच्छा व्यवहार करें। किसी का भी दिल न दुखाएं। किसी को दुख देकर, किसी को पीड़ा पहुंचाकर, किसी के साथ हिंसा का व्यवहार करके हम कभी भी खुश नहीं हो सकते हैं ।सच तो यह है कि जीवन का आनंद दूसरों के साथ आता है। प्रेम, दोस्ती और रिश्ते, ये वे रंग हैं, जो हमारे जीवन को और खूबसूरत बनाते हैं ।हमें यह याद रखना चाहिए कि हमें अपनी कहानी के कैनवास पर खुद ही रंग भरने हैं। जीवन एक अनोखा सफर और एक ऐसा रंगमंच है, जहां हर इन्सान अपनी कहानी खुद लिखता है ।वास्तव में, जीवन एक खाली कैनवास, तो हम ही वह चित्रकार हैं, जो इसे रंगों से भर सकते हैं ।सच तो यह है कि जीवन सुख-दुःख का संगम है। यहां धूप भी है तो छांव भी तो है। यह कभी मधुर संगीत सा लगता है, तो कभी कठोर परीक्षा जैसा ।सुख के क्षण हमें कृतज्ञता और उत्साह से भरते हैं, जबकि दुःख के पल हमें धैर्य, सहनशीलता और अनुभव का उपहार देते हैं। अगर जीवन केवल सुख से भरा होता, तो शायद उसकी कीमत और महत्त्व हम कभी समझ ही न पाते। और यदि केवल दुःख होता, तो आशा और आगे बढ़ने की ताक़त ही समाप्त हो जाती ।जीवन में दुख और पीड़ा से कोई नहीं बच सकता। हर दुख, हर असफलता, हमें कुछ सिखाती है। जब जीवन नीचे गिराए, तो उठें, और मुस्कराकर आगे बढ़ें। दुख को गले लगाएं, क्योंकि यह हमें वह ताकत देता है, जो सुख कभी नहीं दे सकता। अंत में यही कहूंगा कि सच्चे रिश्ते हमें हमेशा ऊपर उठाते हैं ।कर्म और मेहनत ही अमरता का आधार हैं। इसलिए चुनौतियों को अवसर मानकर जीवन को उपहार की तरह जीना चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण, भीतर की आग यानी जुनून और आत्मबल को जीवित रखना चाहिए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

कटक रेलवे स्टेशन पर निर्माणाधीन शेड गिरा

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

कटक/भूबनेश्वर : कटक स्टेशन पर हुई घटना। निर्माण कार्य के दौरान एक शेड गिर गया। नुकसान की मात्रा का पता नहीं चल पाया है। यह घटना प्लेटफ़ॉर्म नंबर 1 पर हुई। घटनास्थल पर बचाव कार्य जारी है। स्टेशन पर नवीनीकरण कार्य के दौरान शेड गिर गया ।कटक रेलवे स्टेशन की घटना के संबंध में ईस्ट कोस्ट रेलवे ने बताया है कि प्लेटफॉर्म पर एक पुरानी दीवार गिर गई है ।ऊपरी शेड का एक हिस्सा ट्राक पर गिर गया है। प्लेटफ़ॉर्म 1 और 2 पर यातायात बाधित हो गया है। इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ।

पूर्व डिप्टी मेयर नीरज सिंह हत्या मामले में पूर्व विधायक संजीव सिंह सहित दस बरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, पूर्व डिप्टी मेयर नीरज सिंह सहित चार लोगों की बेरहमी पूर्वक हत्या में उनके चचेरे भाई व झरिया के पूर्व विधायक संजीव सिंह सहित सभी 10 को सबूत के अभाव में कोर्ट ने बरी कर दिया है। एमपी-एमएलए के विशेष न्यायाधीश दुर्गेश चंद्र अवस्थी के न्यायालय ने बुधवार को खचाखच भरी अदालत में धनबाद के सबसे चर्चित हत्याकांड में अपना फैसला सुनाया

21 मार्च 2017 की शाम सात बजे सरायढेला के स्टील गेट में नीरज सिंह, उनके पीए अशोक यादव, बॉडीगार्ड मुन्ना तिवारी और ड्राइवर घल्टू महतो को गोलियों से भून दिया गया था। मामले में नीरज सिंह के अनुज अभिषेक सिंह की लिखित शिकायत पर संजीव सिंह, उनके भाई सिद्धार्थ गौतम उर्फ मनीष सिंह, जैनेंद्र सिंह उर्फ पिंटू सिंह, झरिया के गया सिंह (फिलहाल) और महंत पांडेय को नामजद और अन्य अज्ञात को आरोपी बनाया गया था। जांच के बाद पुलिस ने इस कांड में 12 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल किया था। चार्जशीट में मनीष सिंह, गया सिंह और महंत पांडेय का नाम नहीं था। इनके खिलाफ पुलिस को साक्ष्य नहीं मिले।

कोर्ट ने सुल्तानपुर के कुर्बान अली उर्फ सोनू, बलिया के चंदन सिंह उर्फ रोहित उर्फ सतीश व सुल्तानपुर के शिबू उर्फ सागर सिंह (तीनों शूटर) के अलावा शूटरों को धनबाद बुलाने के आरोपी यूपी सुल्तानपुर लंभुआ के पंकज सिंह, समस्तीपुर के डबलू मिश्रा, उसके दोस्त झरिया निवासी विनोद सिंह, सरायढेला के रणवीर धनंजय सिंह उर्फ धनजी, झरिया माडा कॉलोनी निवासी रंजय सिंह के भाई संजय सिंह और जैनेंद्र सिंह उर्फ पिंटू को साक्ष्य के अभाव में बरी करने का आदेश दिया। जजमेंट के मद्देनजर चंदन, शिबू और विनोद को जेल से कोर्ट में पेश किया गया था। वहीं अन्य आरोपी सशरीर न्यायालय में हाजिर थे। सजा के ऐलान के साथ जमानत पर छूटे सभी आरोपी मुक्त हो गए।

कोर्ट में आरोपियों के साथ उनके वकील उपस्थित थे। नीरज हत्याकांड के आठ साल पांच महीने और छह दिन बाद न्यायालय में अपना अहम फैसला सुनाया। कोर्ट में 408 तारीखें पड़ीं। 37 लोगों ने अपनी गवाही दी थी। कई तकनीकी साक्ष्य भी न्यायालय में पेश किए गए थे। आदित्य राज की गवाही को न्यायालय ने नकार दिया। फैसले के मद्देनजर धनबाद कोर्ट की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। सरकारी और निजी सुरक्षा गार्ड से पूरा कोर्ट परिसर पटा हुआ था। फैसला सुनाने के दौरान केस से जुड़े लोगों को ही कोर्ट रूम में इंट्री दी गई।

बाढ़ ने बढ़ाई मुसीबत: जाजपुर, भद्रक और बालासोर सबसे ज्यादा प्रभावित

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर : जाजपुर, बालासोर और भद्रक बाढ़ से सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इस साल कई बार आई बाढ़ के कारण इन तीनों जिलों में नुकसान बढ़ रहा है। लेकिन जमसोला घाट में ज़्यादा बारिश नहीं हुई है। जिसके कारण राजघाट में स्वर्ण रेखा गिर रही है। आज यह खतरे के निशान से नीचे चली गई है और कल सुबह चेतावनी के निशान से नीचे आ जाएगी। इस बीच, अखवापाड़ा में बैतरणी खतरे के निशान से नीचे आ गई है। जंबिशा, नागबली और कोलाब में थोड़ी ज़्यादा बारिश हुई है। लेकिन किसी अन्य बेसिन में बारिश नहीं हुई है।

हालांकि, कानी नदी के करनाल में उफान के कारण जाजपुर जिले के दशरथपुर में बाढ़ की स्थिति गंभीर है। कल बनी खाई धीरे-धीरे किनारों को खा गई है और लगभग 150 फीट गहरी हो गई है। बताया जा रहा है कि बाढ़ के पानी में डूबने से एक वृद्ध की मौत हो गई। कल पानी कम होने पर मरम्मत का काम शुरू होगा। दूसरी ओर, सबसे ज़्यादा प्रभावित क्षेत्र कृषि है। मल्लिकापुर, कास्पा, दुदुरहंता, निजामपुर समेत करीब 15 पंचायतों के हजारों हेक्टेयर कृषि भूमि में बाढ़ आ गई है, जिससे धान के खेत पूरी तरह से बर्बाद हो गए हैं। भद्रक जिले के भंडारीपोखरी, धामनगर और चंदाबाली प्रखंड की 8 पंचायतों में बाढ़ का कहर देखने को मिला है। भंडारीपोखरी प्रखंड की सोलमपुर, अजनाग्या, मालदा पंचायतों में बाढ़ का पानी घटने लगा है। हालांकि, धामनगर प्रखंड की मुख्य पंचायत के कई गांव जलमग्न हो गए हैं, जबकि हसनबाद और अर्जुनपुर पंचायत बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कट गए हैं। धुसुरी-अर्जुनपुर सड़क पर विभिन्न स्थानों पर चार फीट पानी बढ़ रहा है। इन दोनों पंचायतों के 8 गांवों में बाढ़ का पानी प्रवेश कर गया है, जिसमें लोगों के घर भी शामिल हैं। इसी तरह चंदाबाली आरडी, ओएलजी, सुंदरपुर, नंदपुर पंचायत के 24 गांव पूरी तरह से जलमग्न हैं। बालासोर जिले के भोगराई ब्लॉक की 18 पंचायतों के 40 से ज़्यादा गाँव और बलियापाल ब्लॉक की 6 पंचायतों के 15 से ज़्यादा गाँव जलमग्न हैं।

राजस्व मंत्री, जल संसाधन मुख्य अभियंता और ओएसडीएमए के अधिकारियों ने आज जाजपुर का दौरा किया। जाजपुर जिले में 5 हज़ार लोग राहत केंद्रों में हैं। ज़िला कलेक्टरों को नुकसान का आकलन करने के निर्देश दिए गए हैं। हीराकुंड के 4 गेट आज बंद कर दिए गए हैं। अभी 8 गेटों से पानी निकाला जा रहा है। आगे बन रहे निम्न दबाव के क्षेत्र की गति में बार-बार बदलाव होने से प्रशासनिक चिंताएँ बढ़ रही हैं।

भाजपा की गंदी चालें कामयाब नहीं होंगी: आठ लाख परिवारों के राशन कार्ड किसी भी कीमत पर नहीं कटने देंगे: करमजीत सिंह रिंटू

अमृतसर, 27 अगस्त (साहिल बेरी)

भारतीय जनता पार्टी द्वारा पंजाब के खिलाफ चलाई जा रही गंदी चालों के खिलाफ आज इंप्रूवमेंट ट्रस्ट के चेयरमैन और अमृतसर नॉर्थ विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू ने ग्राम पंचायत नौशहरा में पंचायत और ग्रामीणों से मुलाकात की और उन्हें केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा राशन कार्ड काटने की साजिश से अवगत कराया। केंद्र सरकार हमेशा पंजाब के साथ भेदभाव करती हैं ।उन्होंने कहा कि पंजाब अपने हितों की रक्षा करना बखूबी जानता है और पंजाब के खिलाफ चलाई जा रही गंदी चालों को कामयाब नहीं होने दिया। उन्होंने भाजपा को स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी सरकार पंजाबियों को किसी भी कीमत पर ठगने नहीं देगी और मजदूरों, दलितों और किसानों के राशन कार्ड नहीं कटने देगी। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि अगर ऐसा किया गया तो आम आदमी पार्टी सरकार किसी भी संघर्ष से पीछे नहीं हटेगी। उन्होंने कहा कि यह बहुत दुःख की बात है कि भारतीय जनता पार्टी ने पहले केवाईसी के नाम पर 23 लाख लोगों के राशन कार्ड काटे और अब 8 लाख परिवारों (यानी 32 लाख लोगों) के राशन कार्ड काटे जा रहे हैं, जिससे जरूरतमंद परिवारों को काफी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि राज्य भर में एक करोड़ 53 लाख लाभार्थी हैं, जिनमें से केंद्र की भाजपा सरकार 55 लाख लोगों के राशन कार्ड काटने जा रही है, जिससे इन गरीब परिवारों को राशन नहीं मिल पाएगा। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हम राशन कार्ड से किसी का नाम नहीं कटने देंगे और जब तक राज्य में आम आदमी पार्टी सत्ता में है, हम किसी भी परिवार को परेशान नहीं होने देंगे। इस अवसर पर उन्होंने पंचायत क्षेत्र का दौरा किया और खस्ताहाल सरकारी भवनों का जायजा लिया और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर बलविंदर सिंह काला, सरपंच सिमरनजीत कौर, बलविंदर सिंह बल्ली, नवदीप सिंह, अवतार सिंह, केवल कृष्ण, गोपी जी, बलदेव सिंह, कर्म सिंह, विशाखा सिंह भारी संख्या में क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

मुख्यमंत्री मोहन माझी के मंत्रिमंडल में सोना है: उप मुख्यमंत्री केवी सिंह देव

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री किसान नकद सहायता कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री केवी सिंहदेव के बयान की खूब चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मोहन माझी की कैबिनेट में सोना है। उन्होंने कहा कि वह सोना खुद कनक वर्धन सिंहदेव हैं। रैली में केवी ने कहा कि यह सरकार जनता की सरकार है ।इस सरकार में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं है, बस थोड़ा सा फ़र्क़ ज़रूर है।

उन्होंने कहा, जब मैं मुख्यमंत्री के साथ खड़ा होता हूँ, तो वह छोटे कद के होते हैं और मैं लंबा। जब मैं उनसे बात करता हूँ, तो मैं नज़रें नीची करके बात करता हूँ, वह नज़रें ऊपर करके बात करते हैं। यही ईश्वर की लीला है। हमें ज़मीन और मिट्टी पर नज़र रखकर चलना चाहिए। हमारे राज्य में प्रचुर मात्रा में खदानें हैं। चार ज़िलों में सोना है और मोहन सरकार के मंत्रिमंडल में मेने भी सोने का एक टुकड़ा है, उपमुख्यमंत्री ने कहा।

इस बीच, कृषि मंत्री ने अनाज व्यापारियों को कड़ी चेतावनी दी है। कृषि मंत्री ने कहा कि व्यापारी छत्तीसगढ़ से अनाज लाकर हमारे राज्य में बेच रहे हैं। उनके खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्हें सीधे जेल भेजा जाएगा।

मैक्स अस्पताल ने अमृतसर में लिवर ट्रांसप्लांट और बिलियरी साइंस ओपीडी सेवाएं शुरू कीं

अमृतसर, 27 अगस्त (साहिल बेरी)

मैक्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, मोहाली ने आज संधू गैस्ट्रो और लिवर क्लिनिक, अमृतसर में अपनी डेडिकेटेड लिवर ट्रांसप्लांट और बिलियरी साइंस ओपीडी सेवाओं के शुभारंभ की घोषणा की। विशेषीकृत ओपीडी लॉन्च मैक्स अस्पताल द्वारा मरीजों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा पहुंचाने के लिए एक और पेशन्ट-सेन्ट्रीक कदम है। ओपीडी सेवाओं का शुभारंभ मैक्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, मोहाली में कंसलटेंट -एचपीबी सर्जरी और लिवर ट्रांसप्लांटेशन, डॉ. कप्तान सिंह, सलाहकार की उपस्थिति में किया गया, जो संधू गैस्ट्रो और लिवर क्लिनिक ओपीडी में हर महीने के चौथे बुधवार को दोपहर 1 बजे से 2 बजे तक उपलब्ध रहेंगे। बुधवार को अमृतसर के एक होटल में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बोलते हुए डॉ. कप्तान सिंह ने कहा, "लिवर शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। विफलता या कैंसर के मामलों में, लिवर ट्रांसप्लांट अक्सर जीवन बचाने का सबसे अच्छा विकल्प हो सकता है। अंतिम चरण की लिवर बीमारी तब विकसित होती है जब लिवर अपनी सामान्य कार्यप्रणाली खो देता है, जो आमतौर पर सिरोसिस के कारण होता है। उन्होंने कहा कि इस ओपीडी के शुभारंभ के साथ, हमारा ध्यान क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा की पहुंच को बढ़ाने और मरीजों को घर के करीब उन्नत उपचार विकल्प प्रदान करने पर है। अत्याधुनिक निदान उपकरणों और विशेष देखभाल से लैस, ओपीडी यह सुनिश्चित करेगी कि मरीजों को उपचार और सपोर्ट का उच्चतम मानक मिले।" डॉ. सिंह ने आगे कहा, "हमारी लिवर ट्रांसप्लांट और बाइलरी साइंसेज ओपीडी रोगियों को समग्र नैदानिक, चिकित्सीय, और परामर्श सेवाएं प्रदान करेगी। इनमें हेपेटाइटिस, सिरोसिस, लिवर कैंसर, और लिवर फेलियर जैसी अवस्थाओं का उपचार शामिल है। हम समुदाय के स्वास्थ्य और कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए समर्पित हैं, और यह ओपीडी इस दिशा में एक बड़ा कदम है।" मैक्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, मोहाली, लिवर स्वास्थ्य, एक्यूट लिवर बीमारियों की प्रारंभिक पहचान, और समय पर इंटरवेंशन के महत्व के बारे में रोगियों को शिक्षित करने पर केंद्रित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023